धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

# शाश्वत धर्म

फरवरी-2016 | संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

सिद्धाचल से विहार करते हुए विभिन्न आचार्यों का मिलन (20 जनवरी 2016) पू. राष्ट्रसंत श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. व पू. जैनाचार्य श्री नित्यानंदसूरीश्वरजी म.सा. एवं (25 जनवरी 2016) पू. राष्ट्रसंत सा. तथा जैनाचार्य श्री अभयदेव सूरीश्वरजी म.सा.(डेहला वाले)

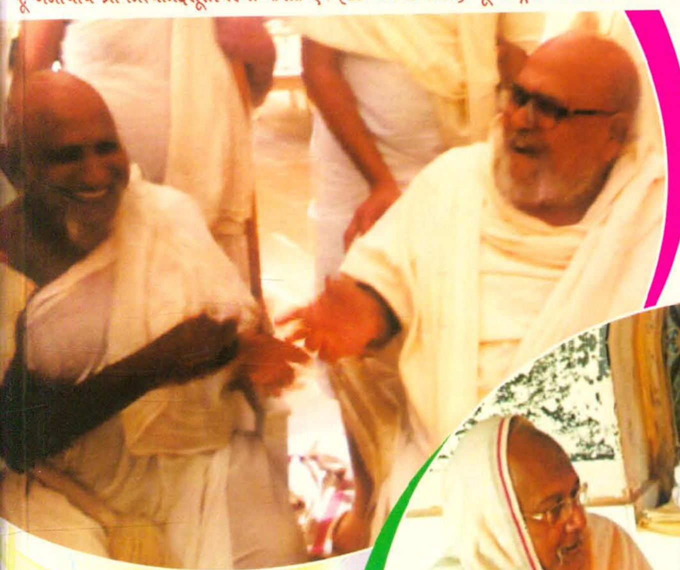

दिशादर्शक-धर्म चक्रवर्ती राष्ट्रसंत गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

युग प्रभावक सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में शासन प्रभावना के कार्यक्रम

- मिती माघ शुक्ला द्वितीया दि. 10 फरवरी 2016 प.पू. आचार्यश्री का बागरा आगमन ।
- मिती माघ शुक्ला तृतीया दि. 11 फरवरी 2016 प.पू. आचार्यश्री का 63 वां दीक्षा दिवस समारोह एवं पूज्यश्री की निश्रा में बागरा जिनमंदिर शताब्दी समारोह प्रारंभ ।
- मिती माघ शुक्ला त्रयोदशी दि. 20 फरवरी 2016 प.पू. आचार्यश्री का 33 वां आचार्य पदारोहण दिवस समारोह एवं महाशतकोत्सव ध्वजारोहण दिवस ।
- चैत्र ओली आराधना 72 जिनालय भीनमाल पर श्री रमेशजी लुंकड़ आदि की विनंती पर (लाभार्थी-श्री सुमेरमलजी हजारीमलजी लुंकड़)
- चैत्र पूर्णिमा को 72 जिनालय भीनमाल पर ही राष्ट्रसंत सा. के आगामी चातुर्मास की घोषणा (लाभार्थी-श्री सुमेरमलजी हजारीमलजी लुंकड़)

# विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)

## हमारे गौरव

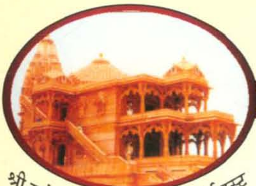

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

दुरुगीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

### राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

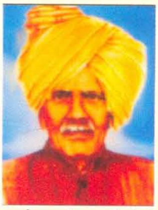

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

13/2/16 3007

# हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्दुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

शा. कालूचंदजी हंजाजी सकलेचा

शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी

शा. उत्तमचंदजी दरगाजी सकलेचा

कोबा (गांधीनगर) पि. ३८२ ००९

32181

# हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

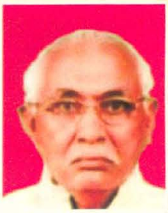

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

# हमारे गौरव

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसींगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

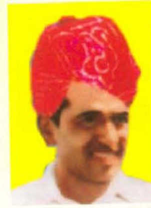
संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

श्री दूधमलजी पूतमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

# हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा (हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल जालोर

पुखराजजी समताजी गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी नानेसा, आकोली

## गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़ नैनावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी देसाई

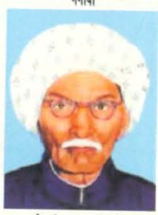
वेदलीया हालचंद भाई भाणजी भाई, मोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल (वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगाजी भाई थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी थराद

# हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

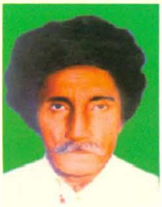

संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

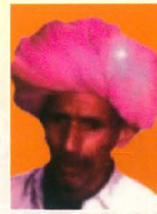

श्री पुखराजजी ओरा
थराद

वोहेरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी
वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

## मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा
कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

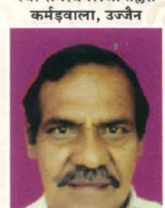

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया
पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ

दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ

# हमारे गौरव

## कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूआजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

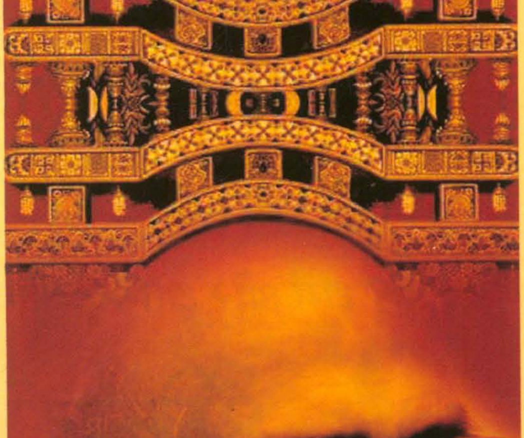

राजेन्द्र की सूरत जयन्त में दिखती है...

# जिनशासन के राजा बागरा पधार रहें हैं...

प.पू. सुविशाल समर्थ गच्छाधिपति, युग प्रभावक

**राष्ट्रसंत श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

शुभ दिन महा सुद 2, बुधवार, 10 फरवरी 2016

प्रातः शुभ बेला में पूज्य गच्छाधिपतिश्री
सह विशाल श्रमण-श्रमणी वृंद का
बागरा नगर का भम्रण करते हुए

## ऐतिहासिक नगर प्रवेश

।। बागरा मंडन श्री चिंतामणि पार्श्वनाथाय नमः ।।

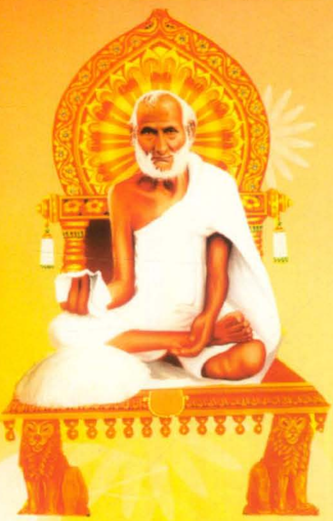

राजस्थान की सुरम्य भूमि,

धर्म और धार्मिकता से ओतप्रोत

# श्री बागरा

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय के शताब्दी वर्ष

## भव्याति भव्य एकादशान्हिका

जब अनंत पुण्यराशि इक्ट्ठी होती है, तभी **शताब्दी महामहोत्सव** का सुयोग आता है, और **शक्ति और भाव दोनों** का समन्वय होता है.....

11 फरवरी 2016 से
21 फरवरी 2016

**महाशतकोत्सव**

प्रभावक पावन सान्निध्यता

प.पू. सुविशाल गच्छाधिपति, संघ एकता शिल्पी, युग प्रभावक

**राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. 'मधुकर'**

आयोजक -

**श्री सौधर्म बृहद् तपोगच्छीय जैन श्वेताम्बर**

श्री जैन श्वेताम्बर संघ, बागरा-343025,(राज.) फोन : 02973

।। प्रातः स्मरणीय गुरूदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिगुरूभ्यो नमः ।।

# नगरे

सह पंचधातु श्री चिंतामणि पार्श्वप्रभु की अंजनशलाका

## महामहोत्सव

100

सकल श्री जैन संघ को

हार्दिक आमंत्रण

invitation

पूज्य गच्छाधिपतिश्री
का भव्य नगर प्रवेश
महा सुद 2, बुधवार,
दि. 10 फरवरी 2016

शताब्दी महामहोत्सव
शुभारंभ
महा सुद 3, गुरूवार,
दि. 11 फरवरी 2016

पूज्य गच्छाधिपतिश्री
का संयमोत्सव
महा सुद 3, गुरूवार,
दि. 11 फरवरी 2016

महाशतकोत्सव
ध्वाजारोहण दिवस
महा 13, शनिवार
दि. 20 फरवरी 2016

पूज्य गच्छाधिपतिश्री
का पाटोत्सव
महा सुद 13, शनिवार,
दि. 20 फरवरी 2016

शताब्दी महामहोत्सव
समापन
महा सुद 14. रविवार
दि. 21 फरवरी 2016

# मूर्तिपूजक त्रिस्तुतिक संघ, बागरा (राज.)

254209, email : bagra100years@gmail.com

पूज्य गच्छाधिपतिश्री
का भव्य नगर प्रवेश
**महा सुद 2, बुधवार,**
**दि. 10 फरवरी 2016**

शताब्दी महामहोत्सव
शुभारंभ
**महा सुद 3, गुरूवार,**
**दि. 11 फरवरी 2016**

पूज्य गच्छाधिपतिश्री
का संयमोत्सव
**महा सुद 3, गुरूवार,**
**दि. 11 फरवरी 2016**

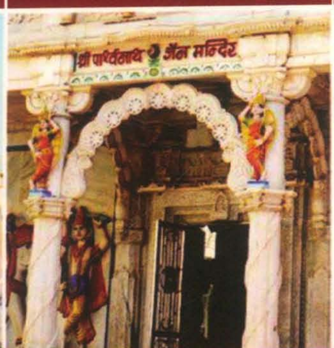

महाशतकोत्सव
ध्वाजारोहण दिवस
**महा 13, शनिवार**
**दि. 20 फरवरी 2016**

पूज्य गच्छाधिपतिश्री
का पाटोत्सव
**महा सुद 13, शनिवार,**
**दि. 20 फरवरी 2016**

शताब्दी महामहोत्सव
समापन
**महा सुद 14. रविवार**
**दि. 21 फरवरी 2016**

* निमंत्रण *

## श्री सौधर्म बृहद् तपोगच्छीय जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक त्रिस्तुतिक संघ, बागरा (राज.)

पोस्ट : बागरा-343025, जिला : जालोर (राज.) दूरभाष : 02973-254209

email : bagra100years@gmail.com

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
**शाश्वत धर्म**

फरवरी-2016 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
पू. राष्ट्र संत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

**शाश्वत वर्ष 64** **अंक 2**
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2072

| | | |
|---|---|---|
| इस अंक का मूल्य | - | 15 रु. |
| एक वर्ष का शुल्क | - | 150 रु. |
| पांच वर्ष का शुल्क | - | 600 रु. |
| दस वर्ष का शुल्क | - | 1100 रु. |

**शाश्वत धर्म संचालन समिति**

| | |
|---|---|
| श्री शांतिलाल रामानी | (संयोजक) |
| श्री रमेशभाई धरू | (परिषद अध्यक्ष) |
| श्री सुरेन्द्र लोढ़ा | (सम्पादक) |
| श्री अशोक श्रीश्रीमाल | (महामंत्री) |
| श्री. ओ.सी जैन | (न्यासी) |
| श्री विनोद संघवी | (न्यासी) |

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

**प्रेरक प्रसंग**

## नियाणा ने दिये द्रौपदी को पांच पति

सुकुमालिका की सुषुप्त भोगवासना ने प्रबल जोर दिखा दिया। साध्वी पर्याय में होते हुए भी उसने नियाणा कर लिया कि यदि उसके तप में बल हो तो अगले जन्म में उसे पांच पति प्राप्त हों।

तपस्वी आत्मा ने कामवासना से त्रस्त हो अपने संयम जीवन का सौदा विकृत इच्छा से कर लिया। साध्वी सुकुमालिका उपाश्रय में लौटी लेकिन उसका मन व्याकुल रहने लगा। वह अन्य उपाश्रय में चली गई।

साध्वी का संयम जीवन निरंतर रहा। धीमे-धीमे रूग्णता ने घेर लिया। अपना अंतिम काल आभासित कर उसने संथारे का पच्चक्खाण कर लिया। पन्द्रह दिवस तक संथारा चला। उसका नियाणा रह गया। उसने न उसका कोई प्रायश्चित किया, न उसकी गर्हा की। वह वहां से दूसरे देवलोक में अपरिग्रहिता देवी के रूप में उत्पन्न हुई।

वहां से वह मानव भव में भारत के पांचाल देश स्थित कम्पिलपुर के राजा द्रुपद के यहाँ पटरानी चूलनी के गर्भ में आई । नव माह तथा साढ़े सात दिन व्यतीत होने पर उसका पुत्री रूप में जन्म हुआ। उसका नाम पांचाली अथवा द्रौपदी रखा गया।इस भव में द्रौपदी को पूर्व भव में किये गए नियाणा के अनुसार पंच पति प्राप्त हुए।

इस तरह तपस्या का फल आत्मोद्धार के स्थान पर नियाणा के कारण आत्मपतन के रूप में प्राप्त हुआ। (समाप्त)

- सुरेन्द्र लोढ़ा

# अनुक्रम


| क्र. | | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | उत्क्रांतिक्रम-सम्यग्दर्शन (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.) | 15 |
| 2. | गणधरवाद (लेखांक-31) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.) | 18 |
| 3. | स्वर्णप्रभा (लेखांक-31) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.) | 21 |
| 4. | प्रश्नोत्तरी | 24 |
| 5. | श्रीसंघ अध्यक्ष की पाती (वाघजीभाई वोरा) | 25 |
| 6. | अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू) | 26 |
| 7. | सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा) | 27 |
| 8. | तीर्थंकरश्री ऋषभदेवजी (मुनिराज डॉ. सिद्धरत्न विजयजी म.सा.) | 29 |
| 9. | मेरे आराध्य (विजयसिंहजी लोढ़ा, निम्बाहेडा) | 31 |
| 10. | जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.) | 32 |
| 11. | काव्यमयी संक्षिप्त जीवनी (सज्जनसिंह लोढ़ा, निम्बाहेडा) | 34 |
| 12. | मानव जीवन में तीर्थों एवं तीर्थयात्रा का प्रभाव (जसराज देवड़ा, धोका) | 39 |
| 13. | संसार एक कारागृह (साध्वी प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.) | 41 |
| 14. | प्रशांत मूर्ति उपाध्याय मोहन विजयजी म.सा. (साध्वीश्री रूचिदर्शनाश्री जी.म.) | 43 |
| 15. | गुरु के उपकारों को चुकाना असंभव है (संकलन-सा. तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.) | 47 |
| 16. | आत्मा है? (साध्वी श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.) | 49 |
| 17. | समाज व देशसेवा की अलख जगाते श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. (विभाष ए जैन, पारा) | 52 |
| 18. | संसार की चार उपमाएँ (संकलन-विनोद संघवी) | 53 |
| 19. | परमार्थ का मीठा फल (कटारिया अशोक जैन, रानापुर) | 55 |
| 20. | शास्त्राभ्यास की यथार्थता (शांतिलाल सगरावत, मन्दसौर) | 57 |
| 21. | गुणों की खान है-गुड़ (अचलचन्द जैन, सायला) | 58 |
| 22. | कहाँ से कहाँ तक (डॉ. इन्दुश्री जैन) | 59 |
| 23. | जैनधर्म और चित्तौड़गढ़ के इतिहास पर श्रेष्ठ पुस्तक (डॉ. दिलीप धींग) | 60 |
| 24. | साहित्य समीक्षा (सुरेन्द्र लोढ़ा) | 61 |
| 25. | गुजराती संभाग | 62-77 |
| 26. | कुमकुम सने पगलिये | 78-92 |
| 27. | श्री संघ सौरभ | 93-101 |
| 28. | परिषद् प्रांगण से | 102-106 |
| 29. | जैन विश्व | 107-108 |
| 30. | शाश्वत धर्म के संरक्षक | 109-110 |

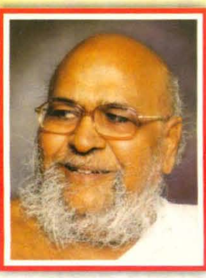

# उत्क्रान्तिक्रम-सम्यग्दर्शन

सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

( दृष्टा तो अनेक हैं, किन्तु सम्यग् दृष्टा कुछ एक हैं। जिनमें मोह नहीं, ममत्व नहीं, आग्रह नहीं, विग्रह नहीं, संग्रह नहीं, परिग्रह नहीं ऐसे जीव जगत में सम्यग्दृष्टा की योग्यता प्राप्त करते हैं। सम्यग् दृष्टा के आचारात्मक-विचारात्मक जगत में त्याज्य -भोज्य का विभक्ति करण होता है। हेय, ज्ञेय, उपादेय का पृथक्करण सम्यग्दृष्टा भली भांति कर सकता है। परिणामतः सम्यग्दर्शन बाह्याभ्यन्तर की सुरक्षा, सुव्यवस्था एवं सौष्ठवता में परम सहायक बनता है। )

जैन शासन दर्शन का ही शासन है। दर्शन की प्रतिष्ठा जो जिनवाणी ने की है, वह अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। प्रत्येक चिन्तक किसी न किसी प्रकार से खोज करता रहा है, खोज करता रहता है। चिन्तन की दशा चेतना शक्ति का उद्घाटन करती है। दर्शन दिखाता है। विश्व में दृश्यमान एवं प्रदृश्यमान विविध प्रकारी स्थितियाँ विद्यमान हैं। दृश्यमान-प्रदृश्यमान के सुव्यवस्थित दर्शन के लिए चाहिए जीवन में दृष्टि। दृष्टि सम्यग् भी हो सकती है, मिथ्या दृष्टि भी हो सकती है।

सम्यग् दृष्टि, सम्यग् बोध प्रदायका बनती है, जबकि मिथ्यादृष्टि उससे विपरीत परिचय कराती है। सम्यग् दृष्टि कर्ता को आत्माभिमुखी करती है, जबकि मिथ्या दृष्टि जड़ासक्त बनाती है। सम्यग् दृष्टि उपयोगयुक्त -संवर्द्धन की प्रेरक बनती है, जबकि मिथ्यादृष्टि उपभोगपरक प्रवृत्तियों में रत रहने में प्रवृत्त करती है। इसीलिए जिनवाणी में सम्यग् दर्शन की सर्वतो प्राक् महती आवश्यकता का प्रतिपादन किया गया है।

सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के पश्चात् ही मनसा, वाचा, कर्मणा आत्मा की सद् विकास की श्रेणी का शुभारंभ होता है। सम्यग् दर्शन को पाकर कर्ता सम्यग् दृष्टा बन जाता है। दृष्टा तो अनेक हैं, किन्तु सम्यग् दृष्टा कुछ एक हैं। जिनमें मोह नहीं, ममत्व नहीं, आग्रह नहीं, विग्रह नहीं, संग्रह नहीं, परिग्रह नहीं ऐसे जीव जगत में सम्यग्दृष्टा की योग्यता प्राप्त करते हैं। सम्यग् दृष्टा के आचारात्मक-विचारात्मक जगत में त्याज्य - भोज्य का विभक्ति करण होता है। हेय, ज्ञेय, उपादेय का पृथक्करण सम्यग्दृष्टा भली भांति कर सकता है। परिणामतः सम्यग्दर्शन बाह्याभ्यन्तर की सुरक्षा, सुव्यवस्था एवं सौष्ठवता में परम सहायक बनता है।

सम्यग्दर्शन के अभाव में जीवन विधा द्विधा में परिणित हो सकती है। हर विधा में व्यक्ति को इसका संबल ही विवादमुक्त कर सकता है। कषायों का क्लिष्टचौखट जिसके कारण अनादि से अद्यापि पर्यन्त जीव कष्ट एवं भवोत्पत्ति के अतिरिक्त कुछ भी उपार्जन नहीं कर पाया, जबकि उस चौखट के शमन- उपशमन के बाद हुई सम्यग्दर्शन की उपलब्धि कष्ट एवं भवोत्पादक

शक्तियों से मुक्ति मार्ग प्रदायिनी बनती है। दर्शन जब सम्यग् हो जाता है, तब जीवन में जागृतत्व का प्रकटीकरण अवश्यंभावी हो जाता है। यह स्थिति जीव को जीवन का अमृतपान कराती है। सम्यग्दर्शन की भावना इतनी गहराई लिए हुए है कि जिसके भीतर प्रविष्ठ होकर मिथ्यान्ध से तमसावृत्त जीव अपने आपको अलौकिक प्रकाश पुंज से अभिभूत कर लेता है। सम्यग्दर्शन व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिचायक ही नहीं, उसकी आन्तरिक स्थिति का उद्भाषक भी है। इसीलिए अन्य दर्शनों की तुलना में सम्यग्दर्शन अपने आप में अत्यधिक श्रेष्ठत्व लिए जैन धर्म में अभिषिक्त स्थिति को पाये हुए है।

सम्यग्दर्शन आत्मिक वैभव प्रदायकता-प्राप्ति के अधिकार पत्र से सम्पन्न है। जहाँ तक सम्यग् दर्शन नहीं,वहाँ तक आत्मिक वैभव प्राप्त करने की योग्यता भी नहीं। यह तो स्वयं को स्वाभिमुख करने का श्रेष्ठतम सहारा है। भौतिक वैभव सम्पूर्ण जगत का अधिगत कर लिया जाए तथापि वह शून्य है और अलौकिक आत्मिक वैभव प्रदायक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति शून्यावकाश को अंक श्रेणी से अलंकृत करती है। शून्य कभी अंक नहीं बनता, किन्तु अंक पर लगे प्रत्येक शून्य की शक्ति उत्तरोत्तर प्रबलवती बन जाती है। दस, शत, हजार, लाख एवं उससे भी अधिक बन जाती है। इसीलिए सम्यग्दर्शन जीवन की हर विधा को द्विधा से मुक्त कर आत्मोन्मुख करता है।

यत्र तत्र सर्वत्र विश्वास ही तो सभी की सफलता-विफलता का कारक बनता है। विश्वास नहीं रहा तो जीवन कैसे रहेगा ? प्रत्येक वस्तु के उसके अपने भाव में विश्वास ही सम्यग् दर्शन है। शाश्वत में शाश्वत का एवं अशाश्वत में अशाश्वत का दर्शन एवं स्पष्टीकरण ही सम्यग्दर्शन है। ज्ञाता दृष्टा की स्थिति में स्थिर रह कर स्वयं को उसमें स्थिर करना सम्यग्दर्शन है।

जीव वह जो जी रहा है, जन्म-मरण कर रहा है, शुभाशुभ कर्मों को बाँध रहा है। उदय में आये, उन्हें भुगत रहा है और सुख-दुःख का अनुभव कर रहा है। जड़ वह जिसमें जीवत्व का अभाव है। सद्भाव में अभाव एवं सद्भाव में सद्भाव का स्थिरीकरण सम्यग्दर्शन है। सद्भाव की प्रतीति ही सफलता की प्रद्योतक है। सम्यग्दर्शन को जैन परिभाषा में सम्यक्त्व् भी कहा गया है। सम्यक्त्वम् तू सम्यग्, सीधा, सरल, स्वयंदर्शी जितना, उतना ही सम्यग्दर्शन प्राप्ति पथ मिल जाता है। भवभीरुता (आगमन, गमन के दुःख से बचने का भाव) सम्यग्दर्शन की उपस्थिति का प्रकट प्रतिबिंब है। भयभीत नहीं, किन्तु भय प्रदायक पदार्थ, स्थिति एवं परिस्थितियों से स्वयं को मुक्त रखना सम्यग् दर्शन है। भवाभिनंदिता भय युक्त स्थिति को बलवत्तर कर डालती है। भौतिक स्थितियों में स्वयं को आकंठ तक डुबोये रखा व्यक्ति भयभ्रांत स्थिति से विलग नहीं रह सकता। वीतराग प्रवचन में सर्वत्र सम्यग्दर्शन की प्रभावकता का प्राधान्य देखने को मिलता है, इसलिये कि उसके अभाव में आत्मिक उत्क्रांति सम्भव है। बंधनमुक्त वे ही हो सके हैं, जिन्होंने सम्यग्दर्शन प्राप्त किया है।

तत्वार्थसूत्रकार वाचक प्रवर उमास्वातिजी ने स्पष्ट कहा है कि ज्ञान एवं चारित्र तब ही फलप्रदाता बनते हैं, जबकि सम्यग्दर्शन पाया

हो। दर्शन दृढ़ निर्मल होने पर ही सर्वस्व सिद्धि प्रदायक बनता है। किसी भी भवन का निर्माता सर्वप्रथम नींव की दृढ़ता का ध्यान रखता है। नींव की मजबूती भवन की मजबूती है। नींव की स्थिति सही होने पर दीवाल एवं छत का काम करते हैं। दीवाल, छत तब ही सार्थक होते हैं, जब नींव ठोस होती है। यही स्थिति आत्मिक प्रगति के लिए है। सम्यग्दर्शन नींव के समान है। मुक्ति महल का प्राथमिक प्रारंभिक क्रम है। उसके पश्चात् ही सम्यग्ज्ञान दीवाल एवं सम्यग्चारित्र छत स्वरूप बनकर जीवन साधना में परम सहायक बन जाते हैं।

दर्शन का एक अर्थ श्रद्धा भी है, जो जैन शासन या जैनागमों का एक पारिभाषिक शब्द है। संसारस्थ जीव की श्रद्धा क्षणिक पदार्थों में अधिक होती है। उसकी श्रद्धा क्षणजीवी पदार्थों में ही सीमित हो जाने से शाश्वत श्रद्धा से वह अति दूर रह जाता है। शाश्वत श्रद्धा के अभाव में जीव स्वयं को विस्मृत कर देता है या यों कहिए स्वयं, स्वयं को खो बैठता है।

## तत्त्व पदार्थ स्वरूप में यथा तथ्य श्रद्धान्वित होना सम्यग्दर्शन है।

तत्त्व में श्रद्धान्वित होने का अर्थ है– जड़ चैतन्य स्थिति को तद् भाव में ज्ञात करने की स्वीकारोक्ति। पदार्थ की स्थिति क्या? कैसी? कहाँ तक? इत्यादि का चिन्तन एवं षट्स्थानीय श्रद्धा की दृढ़ता भी निर्मल, दृढ़ता परिचायक को सम्यग्दर्शन कहा है।

1. जीव है, 2. वह नित्य है, 3. वह कर्मबंधन करता है, 4. वह उसे भुगताना है, 5. मोक्ष है, 6. उसकी प्राप्ति के उपाय भी हैं।

सम्यग्दर्शन होने पर समस्त विश्व पदार्थ स्वरूप सम्यग् दृष्टि गोचर होता है। ममत्व का निष्कासन एवं समत्व का प्रतिष्ठापन होता है। 'स्वयं की स्वयं में गतिशीलता सम्यग्दर्शन' और 'स्वयं की पर में गतिशीलता मिथ्या दर्शन।' एकदम सूक्ष्म स्थिति में अल्प अक्षरों में उसकी समझ उपर्युक्त दो वाक्यों में आ सकती है।

यांत्रिक साधन सुलभ युग में किये जाने वाले अन्वेषणों में विश्वास रखना आम लोगों का निर्धारण हो गया है, जबकि आज की खोज अन्वेषण कल अपूर्णता के रूप में परिवर्तित हो जाता है। वहीं किन्हीं प्रसाधनों से नहीं, आत्मा साधना के माध्यम से स्वयं को सम्पूर्ण बनाने के बाद ही जो तीर्थंकरों द्वारा प्ररूपित–निरूपित किया गया त्रैकालिक सत्य एवं सम्पूर्णता स्थिति में जो सुस्थिर रह सका है, इसीलिए सम्यग्दर्शन की निर्मलता दृढ़ता के लिए कहा गया है– 'तमेव सच्चं निःशंकं, जं जिणे हिं पव्वेइयं।' याने वह निःशंक सत्य है, जो जिनेन्द्रों द्वारा प्रतिपादित प्ररूपित किया गया है। सम्यग्दर्शन के प्रभाव से आत्मगुणों का आविर्भाव होता है और वह आत्मा अविचल दृष्टा बनती है। सम्यग्दर्शन के बिना देखा ही क्या? जो भी देखा वह सब मात्र प्रदर्शन। अस्थिर, क्षणिक, अशाश्वत। उसमें रमणरत जीवनधारी जीवात्मा को निरावृत स्थिति की अनुभूति कहाँ? चिन्तन की धारा सम्यग् दिशा में प्रवाहित होने पर ही सम्यग्दर्शन का प्रकटीकरण संभव है। यह जीवन का उत्क्रान्ति क्रम बन जाने पर जीवन स्थिति सार्थक बन सकती है।

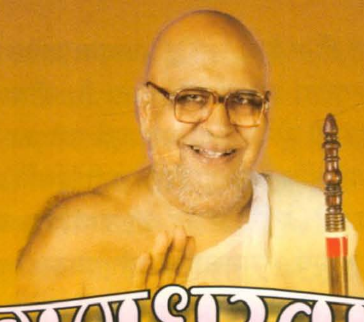

# गणधरवाद

प्रवचनकार

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

इन्द्रभूति–आपने पहले जो यह कहा है कि यदि जीव को एक माना जाये तो सुख–दुःख और बंधमोक्ष घटित नहीं हो सकते। इसका कृपया विशेष स्पष्टीकरण कीजिए।

महावीर–यदि सर्वत्र, सर्वदा, सर्वथा जीव को एक माना जाए, तो उसे सर्वगत, सर्वव्यापी मानना पड़ेगा। किन्तु जैसे आकाश के सर्वगत होने से उसमें सुख–दुःख या बन्ध–मोक्ष घटित नहीं होते, वैसे ही जीव भी यदि सर्वगत हों, तो उसमें सुख–दुःख या बन्ध–मोक्ष सम्भव नहीं है तथा जिसमें सुख–दुःख या बन्ध–मोक्ष है, वह सर्वगत भी नहीं होता। जैसे कि देवदत्त।

दूसरी बात यह है कि यदि जीव एक ही हो, तो वह कर्ता, भोक्ता, मनन करने वाला या संसारी आदि भी नहीं हो सकता। जैसे–आकाश। अतः जीव को एक नहीं परन्तु अनन्त मानना चाहिए।

जीव को एक मानने पर तीसरी आपत्ति यह होगी कि सभी जीव एक ही हों, उनमें यदि भेद न हो, तो संसार में कोई सुखी ही नहीं माना जाएगा, सुखी नहीं कहलाएगा या रहेगा। क्योंकि देव आदि चार गतियों के जीवों में नारक और तिर्यंच ही अधिक हैं और वे नाना प्रकार की शारीरिक–मानसिक पीड़ाओं से ग्रस्त होने के कारण दुःखी ही हैं। इस प्रकार जीवों का अधिक अंश दुःखी होने से जीव को दुःखी ही कहना चाहिए, किन्तु सुखी नहीं। जैसे किसी के सारे शरीर में रोग व्याप्त हो और मात्र एक उंगली ही रोगमुक्त हो, तो उसे रोगी ही कहा जाता है, वैसे ही जीवों का बहुभाग दुःखी हो, उनके अधिकांश में दुःख व्याप्त हो, तो जीव को दुःखी ही कहना पड़ेगा। वह सुखी नहीं कहला सकता। किसी जीव की मुक्ति सम्भव नहीं होने से उसका सुखी होना भी सम्भव नहीं है, क्योंकि जीवों का अधिकांश तो

बद्ध ही है। जैसे किसी का पूरा शरीर कीलों से बींध दिया गया हो और सिर्फ एक अंगुली ही बाकी रही हो, तो उसे अनबींधा -स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता, वैसे ही जब-जब जीव का ही बहुभाग बद्ध हो तो एकांश से मुक्त होने पर भी उसे मुक्त नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार सभी जीवों को एक मानने से कोई सुखी या मुक्त नहीं कहलायेगा। इसलिए जीवों को अनेक मानना चाहिए।

## जीव शरीर प्रमाण है

इन्द्रभूति-भले ही जीव एक नहीं अनेक हों और आपके अनेक जीव मानने संबंधी इस युक्ति सिद्ध कथन को स्वीकार कर लेता हूँ, किन्तु सांख्यादि दर्शनों के दृष्टिकोण के अनुरूप प्रत्येक जीव को सर्वव्यापक मान लेने में किसी को भी आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

महावीर-जीव सर्वव्यापी नहीं, किन्तु शरीरव्यापी है, क्योंकि उसके गुण शरीर में ही उपलब्ध होते हैं। जैसे घट के गुण घट के अतिरिक्त बाह्य देश में उपलब्ध नहीं होने से वह व्यापक नहीं है, वैसे ही आत्मा के गुण भी शरीर के बाहर उपलब्ध नहीं होते। अतः वह शरीर प्रमाण ही है। अथवा जहाँ जिसकी उपलब्धि प्रमाण सिद्ध नहीं है, अर्थात् जो जहाँ प्रमाण से अनुपलब्ध है, प्रमाणसिद्ध नहीं है, वहाँ उसका अभाव मानना चाहिए। जैसे पट से भिन्न घट में पट का अभाव है, वैसे ही शरीर से बाहर संसारी आत्मा के उपलब्ध न होने से उसका भी शरीर से बाहर अभाव मानना चाहिए। इसलिए जीव में कर्त्तव्य, भोक्तृत्व, बंध, मोक्ष, सुख और दुःख तथा संसार आदि ये सब तभी युक्तिसंगत सिद्ध होते हैं, जब उसे अनेक-नाना और असर्वगत-शरीरव्यापी माना जाए। अतः जीव को अनेक और असर्वगत मानना चाहिए।

## वेद वाक्यों का संगतार्थ

इन्द्रभूति-आपके युक्तियुक्त कथन को सुनकर मैं जीव के अस्तित्व विषयक संदेह को छोड़ना चाहता हूँ किन्तु 'विज्ञानधन एव एतेभ्य...' आदि वेद वाक्यों का स्मरण मुझे पुनः सन्देहशील बना देता है कि यदि जीव युक्तिसिद्ध है, तो वेद में ऐसे क्यों कहा गया है? वेद में उल्लेखित वाक्यों का क्या आशय है?

महावीर-गौतम! इन वेद वाक्यों का सम्यक् अर्थ न जानने के कारण ही तुम यह मानते हो कि पद के अंगों अर्थात् कारणों के समुदाय मात्र से जो विज्ञानधन समुद्भूत होता है, वह विज्ञान मात्र ही आत्मा है। इससे अतिरिक्त अन्य कोई आत्मा नहीं है, जो परलोक से आती है और भूतों के नाश हो जाने पर, विनिष्ट होने से वह विज्ञान रूप आत्मा पुनः परलोक या पर भव में जाती भी नहीं है। अतएव यह जीव पूर्वभव में अमुक था और वहां से इस जन्म में आया है और यहाँ से मरकर आगामी जन्म में

अमुक रूप में होगा, ऐसा कोई जन्म जन्मान्तर में एक जीव व्यक्ति के अस्तित्व की सूचक प्रेत्यसंज्ञा –परलोक व्यवहार भी सम्भव नहीं है। अतः ऐसा नहीं कहा जा सकता कि अमुक पूर्व में नारक या देव था, परन्तु अभी मनुष्य हुआ है। अर्थात् वेद वाक्य का तुम यही तात्पर्य या अर्थ समझते हो कि जीव भूत समुदाय से नवीन ही उत्पन्न होता है और समुदाय के नाश होने के साथ ही साथ नष्ट भी हो जाता है। अतः वह एक भव से दूसरे भव में नहीं जाता।

वेदवाक्य का उक्त शब्दार्थ करने से ही तुम ऐसा मानते हो कि जीव का अस्तित्व है ही नहीं। परन्तु वेद के ही 'न ह वै सशरीरस्य...' इत्यादि दूसरे वाक्यों में जीव का अस्तित्व बताया गया है और 'अग्नि होत्रं जुहुयात्...' इत्यादि वाक्यों में अग्नि हवन की क्रिया का फल परलोक में स्वर्ग बताया है। वह भवान्तर में गमन करने वाली नित्य आत्मा को माने बिना सम्भव नहीं है। यही कारण है कि मेरी युक्तियों को सुनने और समझने के बाद भी तुम्हें जीव के अस्तित्व विषयक परस्पर विरोधी वेद वाक्यों के श्रवण स्मरण से जीव के अस्तित्व पर संदेह बना हुआ है कि वस्तुतः जीव है या नहीं। तुमने वेद पदों का जो अर्थ किया है, वह यथार्थ नहीं है। परन्तु मैं सही अर्थ बताता हूँ।

(क्रमशः)...

## अर्णिका पुत्र आचार्य और पाटलिपुत्र

उत्तर मथुरा में देवदत्त नाम का व्यापारी रहता था। धन कमाने के लिए दक्षिण मथुरा आये। यहाँ अर्णिका के साथ उनका लग्न हुआ। वापस उत्तर मथुरा जाते अर्णिका ने मार्ग में पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम संधीरण रखा। परन्तु लोगों में वे अर्णिका पुत्र के नाम से प्रसिद्ध हुए। योग्य हुए। योग्य बन जयसिंह आचार्य के पास दीक्षा ली और अनुक्रम से आचार्य हुए। कालान्तर पुष्पचूल राज की रानी पुष्पचूला ने उनसे प्रतिबोध पाकर दीक्षा ली। एक बार दुष्काल पड़ा। अन्य मुनि देश छोड़ चले गए, पर अर्णिका पुत्र आचार्य वृद्ध होने के कारण पुष्पचूल राजा की आज्ञा से वहीं रहे। पुष्पचूला उनका वेयावच्च (गुरु सेवा) करती थी। ऐसा करते उसे केवल ज्ञान हुआ। यह बात आचार्य को भी पता चली। उन्होंने केवली पुष्पचूला को खमाकर, 'उन्हें मोक्ष कब होगा?' ऐसा प्रश्न पूछा। जवाब मिला– 'गंगा नदी पार करते तुम्हें मोक्ष होगा।' कुछ समय बाद अन्य लोगों के साथ होडी (नाव) में बैठे उसी वक्त होडी डूबने लगी। इससे लोगों ने उन्हें उठाकर नदी में फेंका। समभाव में स्थिर रहने से उसी वक्त उन्हें केवल ज्ञान प्राप्त हुआ।आचार्य का शरीर तैरते तैरते नदी के किनारे पहुँचा। वहाँ कई समय बाद पाटल नाम का वृक्ष निकला आगे जाकर पाटलिपुत्र नाम का शहर बना।

लेखांक 31

# स्वर्णप्रभा

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

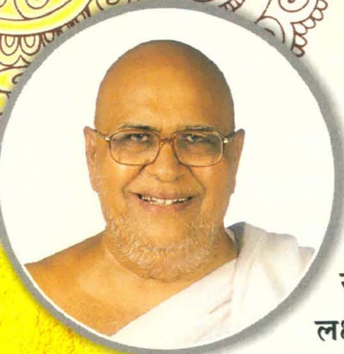

नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर का काफिला चल दिया। आगे-पीछे अश्वारोही चल रहे थे। बीच में एक रथ पर स्वर्णप्रभा सवार थी और उस रथ के ठीक पीछे नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर एक अश्व पर सवार होकर चल रहे थे। सभी सैनिक पूरी तरह सावधान थे। नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर स्वयं भी चौकन्ना था। जरा सी भी आहट होने पर वह शत्रु का सामना करने के लिए तैयार हो जाता था। यात्रा सानन्द चल रही थी। अभी दोपहर भी नहीं हुई थी। काफिला एक गाँव के निकट पहुँचा। नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर के मानस पटल पर विचार उभरा कि इस स्थान पर कुछ देर ठहर कर विश्राम कर लिया जाए। सभी यहां जलपान भी कर लेंगे, ऐसा विचार आते ही उसने आसपास दृष्टि दौड़ाई। वह किसी उचित स्थान की तलाश कर रहा था। तभी उसकी दृष्टि अमराई के झुरमुट की ओर गई। वहां एक मकान भी बना हुआ था और कुआँ भी। उसे वह स्थान उपयुक्त लगा। वह अपने काफिले को उस ओर मोड़कर वहां मुकाम करने का निर्देश देने ही वाला था कि उसने अमराई के मकान से एक मुनिराज को बाहर निकलते देखा। मुनिराज के दर्शन से उसका मन मयूर नाच उठा। उसने तत्काल उस स्थान पर पड़ाव डालने का आदेश दे दिया। नगर श्रेष्ठी का यह आदेश स्वर्णप्रभा को कुछ अटपटा लगा। इतनी जल्दी पड़ाव डालने का कारण उसकी समझ में नहीं आया। जब पड़ाव पड़ गया और स्वर्णप्रभा रथ से नीचे उतरी तो उसे मुनिराजों की विद्यमानता का ज्ञान हुआ। उसकी प्रसन्नता भी असीम हो गई। वह अपने पति के साथ सबसे पहले मुनिराजों के दर्शन-वंदन करने गई। मुनिराज को इन लोगों के आगमन का आभास हो गया था। वे बाहर की ओर आते हुए दिखाई

**कुछ व्यक्ति समाज का थोड़ा सा कार्य करके समाजसेवी कहलाना पसंद करते हैं।**

दिए। वहीं नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर और स्वर्णप्रभा ने उन्हें सविधि वंदन किया। अन्य मुनिराजों को भी वंदन किया और फिर दोनों उस मकान के बाहर बरामदे में आकर मुनिराज के सम्मुख बैठ गए।

'भगवन्! कई दिनों से जिनवाणी का अमृतपान नहीं किया है, आज हमारे सौभाग्य से आपके दर्शन हो गए। कृपा कर प्रवचन फरमाने का कष्ट करें।' नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने विनयपूर्वक आग्रह किया। साथ ही उसने अपना व अपनी पत्नी का परिचय भी दे दिया।

मुनिराज को देखकर अन्य और भी व्यक्ति जो नगरश्रेष्ठी के साथ सुरक्षा सैनिक, सेवक, सेविकाओं के रूप में आए थे, मुनिराज के समक्ष आकर वंदन करते हुए बैठ गए। मुनिराज ने अपने सम्मुख जिज्ञासु व्यक्तियों को देखा तो प्रवचन फरमाने लगे। उन्होंने अपने संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित प्रवचन में फरमाया- 'यह संसार बड़ा विचित्र है और इसमें प्राणी भी विचित्र पाए जाते हैं। सबकी अपनी-अपनी बुद्धि होती है। सबके अपने-अपने विचार होते हैं, अपने-अपने तर्क होते हैं। यहाँ तक कि सबकी चाह भी अपनी-अपनी होती है। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो अल्प ज्ञानार्जन करके अपने आपको बड़ा विद्वान कहलवाना पसंद करते हैं, वहीं इसके विपरीत कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो बहुत ज्ञानार्जन करने पर भी अपने आपको छात्र ही समझते हैं। कुछ ऐसे भी होते हैं जो वेश परिवर्तन करके दिखावे के लिए क्रिया कांड करते हुए अपने आपको महन्त की उपाधि से विभूषित करवाना पसंद करते हैं। कुछ व्यक्ति समाज का थोड़ा सा कार्य करके समाजसेवी कहलाना पसंद करते हैं। कुछ थोड़ा सा धन दान देकर दानवीर कहलाना चाहते हैं, तो कुछ सब कुछ दान करके भी अपना नाम प्रकट करना पसंद नहीं करते। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो चाहते हैं कि सम्पूर्ण विश्व की सम्पत्ति उनकी हो जाए और वे उस पर सर्प की भांति कुंडली मार बैठे रहें। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो दूसरों के दुःख-दर्द

> ऐसे व्यक्तियों को सत्य पथ पर लाना बड़ा कठिन होता है। उनकी धारणा यह होती है कि वे जो कर रहे हैं, जो कह रहे हैं, वही सत्य है,

को दूर करने में ही अपने जीवन की सार्थकता समझते हैं। कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो किसी प्रकार की इच्छा नहीं करते, वे अलमस्त बने घूमते रहते हैं। जो मिला खा लिया, जो मिला पहन लिया। मिला तो ठीक, न मिला तो ठीक। हर हाल में मस्त रहते हैं। लोग ऐसे लोगों के विषय में सोच सकते हैं कि क्या इनकी अपनी कोई चाहत नहीं होती? इस प्रश्न के उत्तर में कहा जा सकता है कि ऐसे व्यक्तियों की चाहत कोई बाहर से दिखाई देने वाली वस्तु नहीं होती। उनकी चाहत उनके हृदय में रहती है और वह है परमात्मा से मिलने की। उनके मन में प्रभु प्राप्ति की लगन लगी रहती है, वे एकाकार होना चाहते हैं। सामान्य व्यक्ति ऐसे व्यक्तियों को समझ नहीं सकता। सच्चे अर्थों में ऐसे व्यक्ति मोह रहित होते हैं, निःस्वार्थ वृत्ति वाले होते हैं। इनको समझना सरल नहीं होता। ये योगी के समान होते हैं। इनकी लगन केवल प्रभु में लगी रहती है। इसलिए इन्हें अन्य और किसी की चिन्ता नहीं रहती। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो मिथ्याजीवी होते हैं। ऐसे व्यक्तियों को सत्य पथ पर लाना बड़ा कठिन होता है। उनकी धारणा यह होती है कि वे जो कर रहे हैं, जो कह रहे हैं, वही सत्य है, शेष सब असत्य है। ऐसे व्यक्ति लगभग प्रत्येक बात का अर्थ उलटे रूप में लेते हैं। ऐसे व्यक्तियों की उपस्थिति से परिवार ही नहीं समाज भी दुःखी हो जाता है। यदि ऐसे व्यक्ति को सही मार्ग पर लाना हो तो उसके लिए असीम धैर्य और सहनशीलता की आवश्यकता होती है। यदि कोई व्यक्ति ऐसे मिथ्याजीवी को सन्मार्ग पर ले आता है तो वह समाज का बहुत बड़ा उपकार करता है।

इसलिए हे बन्धुओं! मानव जीवन मिला है तो इसका सदुपयोग करना सीखो। मिथ्यात्व से, अहं से बचो। कषायों से दूर रहो। दूसरों की सेवा में अपना जीवन लगाओ। सम्पत्ति का उपयोग घर में दबाकर रखने में नहीं है, उसका उपयोग सुकृत कार्यों में व्यय करने में है। दीन-दुःखियों के कष्ट दूर करने में उसका उपयोग करो। धर्म में अपनी लगन लगाओ और उसके अनुरूप अपना आचरण रखो। मानव सेवा ही प्रभु की सेवा है। आनन्द ही आनन्द।'

( क्रमशः)

उत्तरदाता

# प्रश्नोत्तरी

## भाव प्राण के कितने भेद हैं?

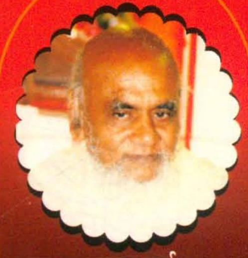

प्रश्नकर्त्ता

पू. श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

पू. मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

**प्र. कर्म किसे कहते हैं?**

उ. राग-द्वेष के निमित्त से कार्मण वर्गणा के जो पुद्गल जीव के साथ बँधते हैं, उन्हें कर्म कहते हैं।

**प्र. कर्म के कितने भेद हैं?**

उ. दो- 1. द्रव्यकर्म और 2. भावकर्म। कार्मण पुद्गलों को द्रव्य कर्म कहते हैं और राग-द्वेष आदि रूप परिणाम को भाव कर्म कहते हैं।

**प्र. औदारिक वर्गणा किसे कहते हैं?**

उ. जो औदारिक शरीररूप परिणमन होता है, उसको औदारिक वर्गणा कहते हैं।

**प्र. वैक्रिय वर्गणा किसे कहते हैं?**

उ. जो वैक्रिय शरीर रूप परिणमन होता है, उसे वैक्रिय वर्गणा कहते हैं।

**प्र. आहारक वर्गणा किसे कहते हैं?**

उ. जो आहारक शरीररूप परिणमन होता है, उसे आहारक वर्गणा कहते हैं। अर्थात् चौदह पूर्वधारी मुनि को तत्व में कोई शंका होने पर केवली भगवान के पास भेजने के लिए वे जो एक हाथ का शरीर बनाते हैं, उस शरीररूप परिणमन के योग्य वर्गणा को आहारक वर्गणा कहते हैं।

**प्र. तैजस वर्गणा किसे कहते हैं?**

उ. औदारिक और वैक्रिय शरीर को कान्ति देने वाला और आहार को पचाने वाला तैजस शरीर जिस वर्गणा से बने, उसे तैजस वर्गणा कहते हैं।

**प्र. भाषा वर्गणा किसे कहते हैं?**

उ. जो वर्गणा शब्दरूप में परिणमन होती है, उसे भाषा वर्गणा कहते हैं।

**प्र. वैभाविक गुण किसे कहते हैं?**

उ. वैभाविक गुण उस शक्ति को कहते हैं, जिसके निमित्त से दूसरे द्रव्य के सम्बन्ध होने पर आत्मा में विभाव परिणमन हो।

**प्र. अव्याबाध प्रतिजीवी गुण किसे कहते हैं?**

उ. साता और असाता रूप आकुलता के अभाव को अव्याबाध प्रतिजीवी गुण कहते हैं।

**प्र. अवगाह प्रतिजीवी गुण किसे कहते हैं?**

उ. परतंत्रता के अभाव को अवगाह प्रतिजीवी गुण कहते हैं।

**प्र. अगुरुलघुत्व प्रतिजीवी गुण किसे कहते हैं?**

उ. उच्चता और नीचता के अभाव को अगुरुलघुत्व प्रतिजीवी गुण कहते हैं।

**प्र. सूक्ष्मत्व प्रतिजीवी गुण किसे कहते हैं?**

उ. इन्द्रियों के विषय रूप स्थूलता के अभाव को सूक्ष्मत्व प्रतिजीवी गुण कहते हैं।

# श्रीसंघ की प्रतिनिधि सभा को दिया जा रहा है समग्र स्वरूप

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्रीसंघ

अ.भा.श्री सौधर्मवृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ राष्ट्रीय स्तर पर त्रिस्तुतिक जैन श्वेताम्बर समाज की सुव्यवस्थित व सुसंगठित संस्था है। संस्था सम्पूर्ण समाज की भावनाओं को हृदयंगम किए हुए है तथा समाज का प्रतिनिधित्व करती है। वर्तमान में इसे सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत युग प्रभावक जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. का मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त है। उन्हीं की कृपा से यह सक्रिय है तथा समाज को सुसंगठित करने के उद्देश्य की सम्पूर्ति कर रही है। इसकी स्थापना व्याख्यान वाचस्पति प्रकांड मेधावान, प्रबल समाज चिन्तक स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज सा. ने की थी। उनने गुरुदेव श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा किये गए क्रियोद्धार तथा त्रिस्तुतिक अवधारणा को अंगीकार करने वाले भक्त समूह को पहली बार क्षेत्रवाद की सीमा से ऊपर उठा, अखिल भारतीय स्तर पर एकरूपता विकसित करने का प्रयास किया तथा सफलता प्राप्त की। श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर आयोजित श्रीमद् राजेन्द्रसूरि स्मृति अर्द्धशताब्दी समारोह में विख्यात् समाजसेवी श्री श्री गगलदास हालचंद संघवी (थराद/अहमदाबाद) की अध्यक्षता में पूरा समुदाय एकरूप हुआ। श्री गगलदासभाई ने ही क्रमशः अ.भा.श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ को विधिवत् रूप दिया तथा वे ही इसके प्रथम अध्यक्ष बने। आज उन्हीं की धरोहर संघ है। इसकी दृढ़ता सम्पूर्ण त्रिस्तुतिक समाज की मजबूती है। हमें ऐसा करते हुए कर्त्तव्य पालन करना है।

श्रीसंघ की प्रतिनिधि सभा को व्यवस्थित रूप दिया जा रहा है। प्रत्येक नगर व ग्राम में स्थित श्रीसंघ के प्रतिनिधियों द्वारा इसका गठन किया जाता है। सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत युग प्रभावक जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने इसे आशीर्वाद प्रदान करते हुए आशा प्रकट की है कि यह चतुर्विध श्रीसंघ की एकता तथा अनुशासन का परिचायक बनेगा। अभी तक श्रीसंघ ने अपनी गतिविधियां तथा प्रवृत्तियां इसी के अनुकूल रखीं हैं तथा भविष्य में भी यह इसी प्रकार संचालित होने का भाव सम्पुट किए हुए है। प्रतिनिधि सभा के समग्र स्वरूप को प्राप्त करने के लिए जिनकी अटूट निष्ठा युग प्रभावक जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. में है तथा जो उनके मार्गदर्शन में समाजसेवा के लिए संकल्पित हैं, उनकी व्यक्तिगत जानकारी की पूर्ति निर्धारित प्रारूप में उनसे करवाई जा रही है। निर्धारित प्रारूप संबंधितों को भिजवा दिए गए हैं। आशा है उन्हें सम्पूर्ण भर कर शीघ्र ही भेज दिया जाएगा। हमें आपके पूर्ण सहयोग की आशा है। जय जिनेन्द्र।

# संगठन को और सुदृढ़ किया जाना है

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
नवयुवक परिषद

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का प्रथम उद्देश्य समाज संगठन का है। इसकी प्राप्ति के लिए वह अपनी स्थापना के समय से ही प्रयत्नशील है तथा इन प्रयासों के नतीजे भी उसे प्राप्त हुए हैं। विशेषतः युवाओं में जागृति तथा सक्रियता को बल मिला है। उनके द्वारा पर्याप्त गतिविधियाँ हो रही हैं। केन्द्रीय कार्यालय के परिपत्र में दिए गए निर्देशों का पालन कर शाखा स्तर पर प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित किया जाता है। नवयुवक परिषद् के साथ तरुण परिषद्, महिला परिषद्, बालिका परिषद्, बहु परिषद् आदि भी निरन्तर है तथा कई अवसरों पर ये सभी एकजुट हों, समग्र परिषद् परिवार की रचना को साकार करने लगते हैं। परिषद् परिवार ऐसा विशाल समूह है जिसमें समाज की सभी नवीन पीढ़ियों का समावेश हो जाता है।

परमपूज्य सुविशाल गच्छाधिपति जैनाचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. परिषद् परिवार के प्राण हैं। उन्होंने अपने जीवन में परिषद् को गुरुआज्ञा मानकर सुदृढ़ किया है। उनका क्षण-क्षण इस संगठन में प्रयुक्त है तथा वे अपने जीवन की ऊर्जा को दूसरी दिशा में सकारात्मक रूप से प्रवाहित कर रहे हैं। हमें उनका मार्गदर्शन तथा आशीर्वाद प्राप्त है और यह हमारी पूँजी है। हमारा सौभाग्य है कि हमारे जीवन में ऐसे गुरुदेव का सान्निध्य हमें प्राप्त हुआ है।

परमपूज्य गच्छाधिपति गुरुदेव साहब का निर्देश है कि संगठन को सुदृढ़ किया जाए। समय के अनुसार या किसी कारण से कोई शिथिलता इसमें नहीं आये, इस बात की पूर्ण सतर्कता रखी जाए। यही नहीं प्रत्येक शाखा व्यवस्थित रूप से संचालित होती रहे एवं प्रत्येक युवा में परिषद् के प्रति आत्मीयता का भाव हिलोरे लेता रहे। उसे परिषद् अपनत्व से परिपूर्ण अनुभूत हो। गुरुदेवश्री के इस निर्देश के अनुसार परिषद् अपनी शाखाओं की गतिशीलता में अभिवृद्धि करने पर बल दे रही है। हमारा लक्ष्य परिषद् की सदस्य संख्या को बढ़ाकर दुगुना करना है। यदि शाखाएं तथा प्रत्येक स्तर के पदाधिकारीगण गंभीरता से प्रयत्न करेंगे तो हमारे आत्मबल में कई गुना बढ़ोत्तरी हो जाएगी। आईये, पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की आंतरिक भावना को हम शिरोधार्य करें।

संपादकीय

# वैचारिक क्रान्ति के लिए कदम उठाएं

नेपाल में गढ़ी माई महोत्सव के आयोजन प्रसंग पर गढ़ी माई मंदिर पर अगणित पशुओं की बलि दी जाती है। यह महोत्सव प्रत्येक पांच वर्ष में आयोजित किया जाता है और यह परम्परा विगत तीन सौ वर्षों से निरन्तर है। मंदिर ट्रस्ट के चेयरमेन श्री रामचन्द्र शाह ने आगामी गढ़ी माई महोत्सव पर पशुबलि नहीं किये जाने का ऐलान किया है, जो प्रशंसनीय है। इस घोषणा के अनुसार अगले महोत्सव 2019 में किसी प्रकार की पशुबलि नहीं होगी अपितु देवी माँ की प्रसन्नता के लिए भक्तगण पूजा, अर्चना तथा प्रार्थना करेंगे। भारतीय प्राणी मित्र संघ के अध्यक्ष श्री जसराज श्रीश्रीमाल का कथन है कि भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने गत वर्ष भारत से नेपाल को पशुओं के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था ताकि इस नृशंस पशुबलि के लिए पशु प्राप्त न हो सकें।

सुरेन्द्र लोढा
सम्पादक

पशुबलि की प्रथा धर्म है ही नहीं। हजारों वर्ष पूर्व तीर्थंकर तीर्थंकर नेमीनाथजी के सांसारिक जीवन में नेमीकुमार ने अपनी बारात का त्यागकर घोड़ी को छोड़ते हुए चट्टान पर पहुंच कर पंचमुष्ठी लोच करते हुए दीक्षा ग्रहण की थी। उसका कारण बारातियों के भोज हेतु बाड़ों में बंद असंख्य पशुओं का करुणानाद ही था। ज्यों ही उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके विवाहोत्सव पर इनकी बलि दी जाएगी नेमीकुमार तपस्या तथा संयम ग्रहण करने के लिए प्रस्थान कर गए। यह है हजारों वर्ष से निरन्तर करुणा व दया की संस्कृति। उपरान्त तैबीसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजी का जलते हुए नाग को बचाने का आख्यान जुड़ा। उन्होंने तापस के सन्मुख स्पष्ट उद्घोषणा की कि यह यज्ञ धर्म का प्रतीक नहीं, अधर्म का पोषक है। इसीकी पुष्टि में उन्होंने काष्ठ चिरवाकर घबराये सर्प को दिखाया। कालान्तर में तीर्थंकर श्री

महावीर स्वामीजी ने तो पशुबलि के विरुद्ध ही अहिंसा के निनाद को सर्व दिशाओं में गूंजाया। उस काल में बलिप्रथा की पराकाष्ठा थी। पशुओं की ही नहीं, मातृ तथा पितृ बलि को भी स्थान मिलने लगा था। तीर्थंकर श्री महावीर स्वामीजी ने इसका कड़ा विरोध किया। फलतः अहिंसा, क्रांति की भांति व्यापक बनी। इसके पश्चात् भी इन ढाई हजार वर्षों में भारत भूमि पर कई स्थानों/देवालयों/मंदिरों में पशुबलि प्रथा प्रचलित है। नेपाल हमारा पड़ौसी बंधु देश है। कभी वहां जैन धर्म व्याप्त था। श्री भद्रबाहु स्वामी तपस्या हेतु वहीं पधारे थे। वहां की संस्कृति भी भारत की परम्पराओं तथा कुपरम्पराओं से प्रभावित रही है। अतएव वहाँ भी पशुबलि के प्रचलन को कलंक नहीं समझा जाता। अब प्रसन्नता है कि गढ़ी माई मंदिर ट्रस्ट ने इस बलि प्रथा को रोकने का निर्णय किया है। फिर भी यह प्रथा किसी भी क्षण किसी रूप में पुनर्जीवित हो सकती है। इस हेतु वहां जनता में अहिंसक जागृति बढ़ाकर इस निर्णय को सुदृढ़ किया जाना चाहिए। भारत से ऐसा नेपाल में किया जाना संभव है लेकिन कैसे किया जाए इस पर भारत में स्थित जैनाचार्यों एवं जैन संगठनों को विचार कर उसे योजनागत करना चाहिए। कार्य एकदम कठिन है लेकिन देश में स्थित जैन शक्ति का भी अपना महत्व है।

साथ ही भारत में भी कई देवालयों/स्थानों पर पशुबलि प्रथा अभी चल रही है। भारत में ऐसे स्थानों की संख्या कम नहीं है। गणना किए जाने पर एक हजार से अधिक ऐसे स्थानों की सूची बनाई जा सकती है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है। जैन समाज में उत्सवों/ महोत्सवों/ कार्यक्रमों/ आयोजनों / विराट समारोहों की कमी नहीं है लेकिन इस ओर ध्यान नहीं होना दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी कुरीतियों का निदान कानून से संभव नहीं है। इसके लिए वैचारिक तरंगों का निर्माण ही अधिक कारगर रहता है। तीर्थंकर श्री महावीर स्वामीजी के पश्चात् भी कई प्रखर जैनाचार्य हुए हैं जिन्होंने स्वयं पहुंचकर अपने प्राणों का खतरा उठाकर भी पशुबलि को रोका है। कई यक्षों अथवा देवियों के मंदिरों में ही अपने तपबल का उपयोग कर अहिंसा की श्रेष्ठता को स्थापित किया है। पुनः ऐसे ज्वलंत प्रश्नों पर, जिनका अपना ऐतिहासिक महत्व है, और जो जैन संस्कृति के बुनियादी सिद्धान्तों से संबद्ध हैं, इन पर विचारार्थ साधु सम्मेलनों का आयोजन आवश्यक है। जैन समाज के उदासीन रहने पर हमारे बुनियादी सिद्धान्तों की नींव ही हिल सकती है। वैसे प्रजातांत्रिक वातावरण तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का वायुमान होने के कारण वर्तमान परिस्थितियां उतनी जटिल, कठिन, हिंसक अथवा प्रतिकूल भी नहीं हैं।

# तीर्थंकर श्री ऋषभदेव जी

(मुनिराज डॉ.श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)

जीव श्रेष्ठ कर्म करके धीरे-धीरे आत्मस्वरूप का पूर्ण विकास कर, कर्मों का नाश कर ईश्वर तत्व एवं अंत में मोक्ष को प्राप्त करता है, जहां संसार के जन्म, मरण, जरा, मृत्यु का बंधन नहीं है।

भगवान ऋषभदेवजी के भी अनेक भव हुए। प्रत्येक भव में उन्होंने अपने कर्मों की निर्झरा की। भगवान ऋषभदेव की चेतना ने महाविदेह के क्षितिप्रतिष्ठ नगर में धन नामक साहूकार के रूप में जन्म लिया। एक बार उन्होंने अपने यहां से अनेक पदार्थ लेकर बसंतपुर नगर जाने का विचार किया। उन्होंने घोषणा करवाई कि जो कोई उनके साथ आना चाहता है उनका खर्च वे स्वयं ही देंगे। उसी समय आचार्य धर्मघोष को भी बसंतपुर जाना था। अतः वे भी अपनी शिष्य मंडली को साथ ले सेठजी के साथ चल दिए। सेठश्री ने मुनिमंडल की उपस्थिति से अपने-आपको धन्य मानते हुए आचार्य के भोजनादि का पूरा ध्यान रखा। प्रवास के दौरान एक बार उनका पड़ाव एक जंगल में पड़ा। भारी बारिश के कारण वहां से आगे चलना मुश्किल था। घने जंगल में पड़ाव कई दिनों तक बना रहा। इस दौरान सम्पूर्ण खाद्य सामग्री समाप्त हो गई। ज्यों ही वर्षा का क्रम थमा। सेठ को अकस्मात् आचार्य का ध्यान आया। उन्होंने वर्षाकाल के दौरान आचार्य की सुध नहीं ली थी। इस बात का पश्चाताप् करते हुए वे आचार्य के पास गए और आहार के लिए निवेदन किया। तब आचार्य ने उन्हें श्रमण-आचार की मर्यादा समझाई। विधि-अवधि का ज्ञान प्राप्त कर सेठ ने आचार्य से घृत ग्रहण करने की प्रार्थना की, क्योंकि उसके अलावा वहाँ कोई अन्य चीज साधुओं के ग्रहण योग्य शेष न थी। उत्तम पात्र, श्रेष्ठ द्रव्य और उच्च अध्यवसाय के कारण सेठ को वहाँ सम्यग्दर्शन की उपलब्धि हुई। अतः पिछले अनन्त भवों को छोड़कर यहीं से ऋषभदेवजी का प्रथम भव गिना गया।

मुनियों को शुद्ध मन से दान देने के प्रभाव से धन सेठ का जीव मरकर उत्तर कुरुक्षेत्र में जम्बू वृक्ष के उत्तर भाग में युगलिया के रूप में उत्पन्न हुआ। उस क्षेत्र में हमेशा एकांत सुखमा आरा रहता है। उन्हें कषाय बहुत थोड़ी होती है, ऐसे ही माया-ममता भी बहुत कम ही होती है। वहां दस प्रकार के कल्पवृक्ष इच्छित पदार्थों को प्रदान करते हैं। युगलिया का आयु पूर्णकर धनसेठ का तीसरा भव सौधर्म देवलोक में हुआ। उसके बाद चौथे भव में धनसेठ का जन्म पश्चिम महाविदेह क्षेत्र के गंधिलावती विजय प्रांत के

गंधस्मृति नगर में राजा शतबल की रानी चन्द्रकांता की कोख से पुत्र के रूप में हुआ, जिसका नाम महाबल पड़ा। धनसेठ का जीव महाबल का शरीर छोड़कर पांचवे भव में श्रीप्रभनाम के देवलोक में ललितांग नाम का देव हुआ। इस प्रकार छठे, सातवें व आठवें भव से च्यवकर धनसेठ का जीव नौंवे भव में सुविधि वैध के यहाँ पुत्र रूप में हुआ, जिसका नाम जीवानंद रखा गया। जीवानंद अपने पिता की भांति बहुत अच्छा वैद्य हुआ।

एक बार जीवानंद अपने मित्रों के साथ घर पर बैठा था। उसी समय वहाँ एक मुनि महाराज पधारे। असमय और अपथ्यकर भोज़न करने से उन्हें कृमिकष्ट व्याधि हो गई थी। मुनि की दशा देख एक मित्र ने जीवानंद से उनका निःशुल्क ईलाज करने को कहा। जीवानंद ने असमर्थता बताते हुए कहा कि मुनि की चिकित्सा के लिए जो सामग्रियाँ चाहिये वो मेरे पास पर्याप्त नहीं हैं। मेरे पास केवल लक्षपाक तेल है। गोशीर्षचंदन और रत्नकंबल नहीं है। अगर तुम ला दो तो मैं मुनि का ईलाज कर सकता हूँ। यह सुनते ही अन्य मित्र उक्त दोनों चीजों को लाने के लिए बाजार की ओर गए और घूमते हुए नगर के एक व्यापारी के यहाँ पहुंचे। व्यापारी से उन्होंने दोनों चीजों की मांग की। व्यापारी ने दोनों चीजों के लिए एक-एक लाख स्वर्णमुद्रा चाही और साथ ही यह भी पूछा कि ये दोनों वस्तुएं तुम किसके लिए ले जा रहे हो? मित्रों ने व्यापारी को मुनि महाराज के बारे में बताया। सारा प्रसंग जानकर व्यापारी ने उक्त दोनों ही चीजें बिना मूल्य के ही उन्हें सौंप दी। दोनों मित्र इन्हें लेकर जीवानंद के पास पहुँचे। वैद्य जीवानंद और उनके साथी तीनों आवश्यक औषधियाँ लेकर उद्यान में पहुंचे जहां मुनि ध्यानावस्थित थे। जीवानंद ने मुनि को वंदन कर अपने चिकित्सा कौशल से मुनि को पूर्णरूपेण रोग मुक्त कर दिया। ध्यानान्तराय के लिए मुनि से क्षमा याचना भी की।

इस प्रकार निःस्पृह एवं श्रद्धा-भक्तिपूर्ण सेवा से जीवानंद व उनके मित्रों ने महान पुण्य लाभ लिया। कुछ समय पश्चात् उन्हें वैराग्य उत्पन्न हुआ। जीवानंद ने अपने मित्रों सहित दीक्षा ग्रहण की।

– क्रमशः

## गुदगुदी

अमेरिका में वहां के एक कुत्ते ने रूस से घूमने आए एक कुत्ते से पूछा, 'क्यों कामरेड, हमारा देश अमेरिका आपको कैसा लगा?'

'मेरे देश से बिल्कुल अलग।' रूसी कुत्ते ने बताया, 'मेरे देश में हर कुत्ते के लिए अपना अलग घर है, रेशमी कालीन है, खाने का भरपूर सामान है।'

'फिर तुम अपना देश छोड़ यहाँ क्यों आए?' अमेरिकी कुत्ते ने पूछा।

इस पर मायूस हो कर रूसी कुत्ता बोला, 'यार कभी-कभी भौंकने का मन भी करता है, इसलिए।'

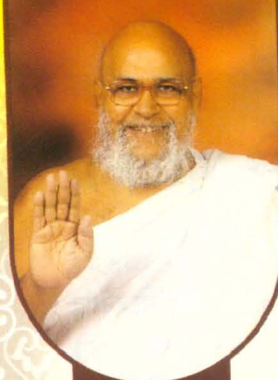

# मेरे आराध्य

## श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी

– श्री विजयसिंह जी लोढ़ा (निम्बाहेड़ा)

विजय जयन्त सेन का यश फैला चहुँ ओर।
जन-जन के अंतर खिले, भई हर्ष हिलौर।।
विजय भाव भरपूर है, नहीं अहं का लेश।
सौम्य रूप है आपका, काटे मन का क्लेश।।
जग को छाया दे रहे,आप बने वट वृक्ष।
शीतलता सबको मिले, चाहे कोई हो शख्स।।
यतीन्द्र गुरु ने शाश्वत् आशीष दिया जिसे है।
युग दृष्टा धर्म चक्रवर्ती को नमन हमारा है।।
जयन्त विजय मेरे गुरु, नित्य नवाऊँ शीश।
श्रद्धा नित अर्पित करूँ, पाऊँ मैं आशीष।।
यंत्र बना हूँ आपका, वादक गुरुवर आप।
मेरी क्या औकात है, अगर नहीं दें थाप।।
तरूणाई तप तेज से, आप हुए स्थित प्रज्ञ।
आहुति अपनी दे रहे, आत्म ज्ञान के यज्ञ।।
सेवा से जन-जन की पीड़ा को हरना है।
जयन्त-संदेशों का पालन नित करना है।।
नमस्कार मंत्र से मन जिसका मंडित है।
जो इसका मर्म जानता, वह सच्चा पंडित है।।
सूर सी ऊष्मा-ऊर्जा, पाते हैं सब लोग।
मिले सभी को रोशनी, कैसा यह संजोग।।
रीति-नीति में आप हैं, पूरे धर्म धुरीण।
संयम-जप-तप-ध्यान में पद-पद रहे प्रवीण।।
जीवन धन्य है आपका, देते ज्ञान प्रकाश।
'विजय' आत्म स्वरूप का रहे सदा आभास।।

श्रीमद् वि ज य ज य न्त से न सू री जी

# शिव राजर्षिश्री महावीर स्वामी की शरण में

(मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)

हस्तिनापुर में राजा शिव के शासन में चारों ओर सुख-शांति का साम्राज्य था। वे एक उदार राजा थे। स्वभाव से संतोषी, भावनाशील एवं धर्मप्रेमी थे। एक बार मध्यरात्रि में उनकी नींद खुली। वे अपने राज्य की स्थिति के साथ जीवन की शाश्वतता पर विचार करने लगे। सोचने लगे कि मैं इस समय हर प्रकार से सम्पन्न हूँ। धन, धान्य, राज्य, मित्र, मान-सम्मान, वाहन, कोष आदि बढ़ रहे हैं। परन्तु क्या यही सब परम सुख है? क्या भविष्य में भी यह बना रहेगा? राजा ने निर्णय किया कि वर्तमान में शुभ कर्मों का फल भोगने के साथ ही साथ भविष्य के लिए भी कुछ पुण्यार्जन करना, आत्मकल्याण का साधन करना आवश्यक है। भोग एवं ऐश्वर्य में जीवनयापन करना न तो प्रशंसनीय है और न ही इससे मेरा आत्मकल्याण होगा। इससे तो अच्छा है कि सूर्योदय होते ही मैं लोहमय कड़ाह, कड़च्छुल और ताम्रपत्र बनवाऊँ, राजकुमार शिवभद्रकुमार को राज्य सौंपकर स्वयं गंगातटवासी दिशापोषक वानस्थों के पास जाऊँ और प्रव्रज्या ग्रहण कर लूँ।

संकल्प अनुसार दूसरे ही दिन प्रातःकाल उन्होंने सेवकजनों को आज्ञा दी। शिवभद्रकुमार का राज्याभिषेक किया। लोहमय भाण्ड आदि बनवाए। परिवारजन, मित्रगण आदि का भोजनादि उचित सत्कार करने के उपरान्त उनके सामने अपनी इच्छा व्यक्त की। सबकी सहमति से उन्होंने तापसी दीक्षा ग्रहण कर प्रतिज्ञा की कि 'मैं निरंतर छट्ठ-बेले की तपस्या करते हुए दिशा चकवाल से दोनों बाहें उठाकर सूर्य के सम्मुख आतापना लेते हुए विचरूँगा।' अगले दिन से उन्होंने यह शुरू किया।

अब वे राजर्षि बनकर प्रथम छट्ठ तप के पारणे में वल्कल पहने तपोभूमि से कुटिया में आये और कठोर संकायिका बांस की छाव को लेकर पूर्व दिशा को पोषण करते हुए बोले- 'पूर्व दिशा के सोम महाराज प्रस्थान में लगे हुए शिव राजर्षि का रक्षण करें। कंद, मूल, पत्र, फूल-फल आदि के लिए आज्ञा प्रदान करें।' ऐसा कहकर वे पूर्व दिशा की ओर से पत्रादि छाब भरकर, दर्भ, कुभ, समिधा आदि हवनीय सामग्री लेकर लौटे। कठिन संयामिका को रखकर सर्वप्रथम उन्होंने वेदी का निर्माण किया। दर्भ सहित कलश लिए गंगा पर गए। वहां स्नान कर देव-पितरों का तर्पण कर भरे कलश के साथ कुटिया में पहुँचे। कुटिया में विधि-विधानपूर्वक अरणि से अग्नि उत्पन्न करके अग्नि कुण्ड के दाहिनी ओर सक्था, वल्कल, स्थान, शय्या, भांड, कमंडल, दण्ड, काष्ठ एकत्र कर स्वयं विराजित हुए और मधु एवं घृत आदि के साथ आहुति देकर चरू तैयार किया।

वैश्वदेव बलि तथा अतिथि पूजा करने के पश्चात् स्वयं भोजन किया।

निरंतर आतापना पूर्वक तप करने से शिव राजर्षि को विभंग ज्ञान हुआ। वे इस उपलब्धि से सात द्वीपों व सात समुद्रों तक जानने व देखने लगे। वे इस ज्ञान को पाकर खुश हुए और विचार करने लगे कि यह ज्ञान मेरी ठोस तपस्या का ही परिणाम है। उन्हें लगा कि सात द्वीप और सात समुद्र के आगे कुछ भी नहीं है। उन्होंने हस्तिनापुर जाकर अपने इस अर्जित ज्ञान से लोगों को अवगत कराया।

उस समय भगवान महावीर स्वामी भी हस्तिनापुर आये हुए थे। भगवान के शिष्य गौतम हस्तिनापुर में जब भिक्षा लेने के लिए पहुंचे तो उन्होंने प्रजाजनों से राजर्षि एवं उनकी अर्जित सात द्वीप व सात समुद्र तक निहारने की क्षमता की बात पता चली। गौतम मुनि ने भगवान से आकर पूछा - 'प्रभु क्या शिव राजर्षि द्वारा कही गई बातें सत्य हैं?' भगवान ने शिव राजर्षि के कथन को गलत बताते हुए कहा कि 'इस धरातल पर सात द्वीप व सात समुद्रों के अलावा जंबू द्वीप आदि अन्य अनेक द्वीप एवं समुद्र हैं।' पूरे नगर में अब नई चर्चा होने लगी कि सात दीपों व समुद्र के अलावा भी असंख्य द्वीप एवं समुद्र हैं। यह बात शिव राजर्षि तक भी पहुँची। उन्हें अपने ज्ञान पर शक हुआ एवं संकल्प-विकल्प के कारण उनका विभंग ज्ञान चला गया।

उन्होंने सोचा कि 'अवश्य ही भगवान महावीर स्वामीजी का कथन सत्य होगा, मेरे ही ज्ञान में कुछ कमी है।' वे तापसी आश्रम से निकलकर भगवान महावीर के पास पहुँचे। उस समय भगवान महावीर धर्म-उपदेश दे रहे थे। शिव राजर्षि ने भी वंदन कर उपदेश का श्रवण किया। प्रभु के धर्म-उपदेशों का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे विनम्रता पूर्वक बोले- 'भगवन्! मैं आपके वचनों पर श्रद्धा रखता हूँ। कृपा कर मुझे भी निर्ग्रन्थ धर्म में दीक्षित कीजिए।' उन्होंने तापसी उपकरणों को त्याग दिया। पंचमुष्ठि लोच कर श्रमण-धर्म स्वीकार कर लिया।

प्रभु की शरण में आने के बाद भी वे विविध तप करते रहे। उन्होंने एकादश अंग का अध्ययन किया और अन्त में सभी कर्मों का क्षरण कर निर्वाण प्राप्त किया।

## सचेत रहें स्वास्थ्य के प्रति

**कम भोजन अधिक ऊर्जा** :- दुर्बल व्यक्तियों की एक प्रमुख समस्या है कम भोजन खा सकना। अतः उन्हें ऐसे खाद्य पदार्थों का अधिक सेवन करना चाहिए, जिससे उन्हें भोजन की कम मात्रा में अधिक ऊर्जा प्राप्त हो सके- जैसे पनीर, केक, सोयाबीन, मूंगफली, सूखे मेवे, चाकलेट गुड़, चीनी आदि।

**भूख खोलिए, अधिक खाइए** :- दही, छाछ, मट्ठे का सेवन अधिक करें, इससे भूख खुलती है। परन्तु याद रखें- कुछ भी अधिक करने का मतलब अति से नहीं है। जो भी भोजन आपको रुचिकर हो, उसकी थोड़ी मात्रा बढ़ाइए। जितनी भूख है, उससे दो कौर अधिक खाने से धीरे-धीरे आपकी भूख बढ़ने लगेगी।

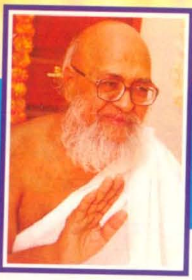

# श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की
# काव्यमयी संक्षिप्त जीवनी

श्री सज्जनसिंह लोढ़ा, निम्बाहेड़ा (राज.)

विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।
चरण कमल में जाऊँ बार-बार बलिहारी।।
मगसर वदि तेरस जन्मे, हुआ धरू कुल जयकारी,
पार्वती स्वरूपचन्द के घर, जब भरी पूनम ने किलकारी।
नाचे गाये हर्ष मनाये, पेपराल के सब नर नारी,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।1।।

बाल्यकाल में शुभदिन आया, मिले यतीन्द्र सूरिराया,
नतमस्तक हुए पूनमचंद, मन ही मन खूब हर्षाया।
करे निवेदन यतीन्द्रसूरि से, शरण दे अपनी गुरुराया,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।। 2।।

धर्मनगरी निम्बाहेड़ा में, कवि कुन्दनमलजी रहते,
गुरु आज्ञा से हिंदी, इंग्लिश, उर्दू का अध्ययन करते।
संस्कृत भाषा की शिक्षा पंडित रंगलालजी देते,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।3।।

अभिधान राजेन्द्र शब्द कोष का उद्गम स्थल,
नगर सियाणा जो स्थित है माय मरूस्थल।
हुई दीक्षा, नाम दिया जयन्तविजय तत्पल,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।4।।

विक्रम संवत् दोय हजार दस, माघ सुद चौथ जयकारी,
मुराद पूरी हुई पूनमचंद की, मिली शरण यतीन्द्र थारी।
हर्षित हो उत्सव मनावे, सियाणा नगर के सब नर नारी,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।5।।

नौ सौ बिम्ब प्रतिष्ठा कीनी, राजेन्द्र सूरि जगजानी,
किया प्रथम चौमासा आहोर, यतीन्द्र गुरु सानी।
उपनाम मिला 'मधुकर', सबने जाना गुण खानी,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।6।।

मिली लगभग आठ वर्ष तक, पावन गुरु की छत्रछाया,
ज्ञान ध्यान और गुरु आज्ञा से, जीवन सरल बनाया।
'युवाचार्य' संबोधित कर, गुरु यतीन्द्र ने दर्शाया,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।7।।

कहे यतीन्द्र गुरुवर, किया मेरा तुम करना,
परिषद् और शाश्वत धर्म का संचालन करना।
लिया संकल्प गुरु आज्ञा हरदम पूरी करना,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।8।।

स्वर्ग सिधारे गुरु, पौष सुद तीज दिन कैसा आया,
ना जोर ना उपाय, बात जान, दुःख को बिसराया।
मुनि सौभागविजय संग,चौमासा निम्बाहेड़ा ठाया,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।9।।

सावन की सातम से पूनम तक, करी आराधना नवकार संग,
जानो अखण्ड आराधना चल रही, नहीं करी अब तक भंग।
महामंत्र नवकार से मिली सब कीर्ति, सुख शांति अभंग,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।10।।

मोहनखेड़ा मुनि विद्याविजय जी का, सूरि पद स्थल जान,
त्रि-शिखर मन्दिर बना भारी, बढ़ी त्रिस्तुतिकजन की शान।
मुनि जयन्त भी सहभागी बने, हुई जय-जय विद्या गुरु महान,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।11।।

मरूधर में भाण्डवपुर तीर्थ, महावीर का प्राचीन जान,
'मधुकर' जयन्त विजय का, पाट महोत्सव स्थल मान।
दिया नाम जयन्तसेन, स्थवीर शान्तिविजय महान,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।12।।

उपराष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा ने, नजर अपनी घुमाई,
सूरि जयन्तसेन के दर्शन-ज्ञान-चारित्र की समझ आई।
'राष्ट्रसंत'से सुशोभित कर, भावना अपनी प्रगटाई,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।13।।

लिया आशीर्वाद जावरा नगर में, पत्नी विमला संग आई,
कर स्वागत हर्षित हुए, त्रिस्तुतिक संघ अध्यक्ष गगाभाई।
जैन, जैनेत्तर भी हर्षित, उपराष्ट्रपति को बीच अपने पाई,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।14।।

भाण्डवपुर तीर्थ पर बना कमलाकार चऊँमुखा राजेन्द्र धाम,
फैलाया चहुँ दिशाओं में, सत्य, अहिंसा परमोधर्म का पैगाम।
गगनचुंबी ऊंचाई लिए, उत्तम भाव यह जयन्तसेन के नाम,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।15।।

यतीन्द्र जयन्त ज्ञान पीठ, धार्मिक शिक्षण हेतु खुलवाया,
पाठ्यक्रम के माध्यम से हजारों ने जीवन उन्नत बनाया।
श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् ने भी योगदान कराया,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।16।।

संयम के पूरे कर पचास वर्ष, नगर सियाणा आये,
मुमुक्षु मनीष को दीक्षा दे, संयम रत्न नाम दर्शाये।
अर्धशताब्दी महोत्सव मना, सब जन मन हर्षाये,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।17।।

गुरु आज्ञा से गाँव-गाँव शाखा परिषद् सज्जित कराई,
शाश्वत धर्म पत्रिका में भी ज्ञान-ध्यान की बात बताई।
अर्ध शताब्दी महोत्सव भी जाय नैल्लोर नगर मनाई,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।18।।

मोहनखेड़ा तीर्थ पर जयन्तसेन म्यूजियम बनवाया,
स्वास्तिक आकार पर सम्पूर्ण जैन दर्शन दर्शाया।
विश्व की अनमोल आकृति देख, सब जन मन हर्षाया,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।19।।

ज्योति राजेन्द्र की कश्मीर से कन्याकुमारी तक फिराई,
गांव-गांव, नगर-नगर दर्शन करा, भरतपुर में आई।
सूरि जयन्त आशीर्वाद से, राजेन्द्र कीर्ति मंदिर समाई,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।20।।

शताब्दी वर्ष मोहनखेड़ा, भाव से वन्दे गुरुवरम्,
उग्र विहार कर पधारे एकता शिल्पी, हुए गुरु चरणम्।
लाखों भक्त जमा हुए, प्रेम से बोले राजेन्द्र गुरुवरम्,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।21।।

सूरि राजेन्द्र का जन्म स्थल नगर भरतपुर जान,
राजेन्द्र कीर्ति मंदिर बना, बढ़ाई जिनशासन की शान।
मात-पिता का भी मंदिर बना, यहाँ आलिशान,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।22।।

बहोत्तर जिनालय प्रतिष्ठा, इक्कीसवीं सदी की महान,
लुंकड़ परिवार भीनमाल ने बढ़ाई, राजेन्द्र गुरु की शान।
जाकर दर्शन वंदन करना, बात जयन्तसेन की मान,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।23।।

कम समय में दिया मधुकर, जन्म भूमि पर तीर्थ आकार,
पेपराल बना तीर्थ, हुआ मुनि नित्यानंद का स्वप्न साकार।
भारी महिमा महावीर की, जाय देखो सब नर-नार,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।24।।

मोटा मंदिर महावीर का, बना थराद नगर की शान,
बना डीसा महाविदेह धाम, जिनशासन की पहचान।
शुभ आशीर्वाद यह मधुकर, जयन्तसेन का मान,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।25।।

दक्षिण भारत में तीर्थ राजेन्द्र नगर अलौकिक अभिराम,
महाविदेह, गुम्मीलेरु, विजयवाड़ा बना राजेन्द्र धाम।
अभिवृद्धि से प्रफुल्लित हुआ मन, देख मधुकर काम,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।26।।

मरुधर, मालवा, महाराष्ट्र, गुजरात विहार स्थल खास,
तमिल, आंध्र, कर्नाटक, सूरि जयन्त के हरदम पास।
बंगाल, बिहार, यूपी, दिल्ली करते बार-बार यह आस,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।27।।

कई मुमुक्षु हुए दीक्षित, दीक्षा दानेश्वरी जयन्तसेन को जान,
विपुल साहित्य लिखा अब तक, साहित्य मनीषी भी मान।
करी कई अंजनशलाका प्रतिष्ठा, मिला तीर्थोद्धारक सम्मान,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।28।।

जीव दया संकल्प भारी, बनवाये अस्पताल, गौशाला बहुतारी,
सुखी रहे जीव जगत के, बात यह जयन्तसेन ने विचारी।
ज्ञान विज्ञान से रहे संपन्न, हैं विद्यार्थियों के हितकारी।
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।29।।

पर्यावरण प्रेमी सुविशाल गच्छाधिपति जन-जन के आधार हैं,
वर्तमान के वर्धमान सूरि जयन्तसेन को कोटि कोटि प्रणाम है।
आशीर्वाद मिलता रहे, निवेदन परमात्मा से यह खास है,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।30।।

अनन्त ज्ञानी अनन्त उपकारी, आप हैं भाग्य विधाता,
हस्तकमल से मिले वासक्षेप, पाये सब सुख शाता।
जयन्तसेन से सुनी मांगलिक, काम सब बन जाता,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।31।।

साध्वी प्रमुखा शशिकला, अविचल, अनुपम, मैत्री, निरुपम,
पधारे निम्बाहेड़ा चातुर्मास, बही ज्ञान गंगा अविराम।
त्याग, तपस्या से किया जाग्रत, जय-जय जयन्त गुरुवरम्,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।32।।

बना ज्ञान मंदिर हम सभी जयन्तसेन के आभारी,
हुई प्रतिष्ठा निम्बाहेड़ा बिराजे श्रेयांस अनुपम अविकारी।
मोदी जाय ध्वजा फहराई, नयनाभिराम जयकारी,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।33।।

चौमासा साठवाँ बड़नगर सम्पूर्ण मालवा में धूम मचाया,
प्रतिष्ठा, उपधान, सामूहिक तप सहित अधिवेशन मनाया।
बाद जन्मदिन छःरिपालित संघ ले मोहनखेड़ा आया,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।34।।

महावीर की तुंगीया जयन्तसेन की पारा नगरी जान,
धर्म संस्कृति से सुशोभित, परमभक्त श्रावक विद्वान।
गुरु मन्दिर बनाकर, पाटोत्सव मनाया भव्य आलीशान,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।35।।

जयवन्ता हो जयन्तसेन, प्रार्थना सूरि राजेन्द्र से हमारी,
स्वस्थ रहें आप सदा, कामना करते सब नर-नारी।
'सज्जन' नत-मस्तक हो कहता आप सदा उपकारी,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।36।।

## ऊँचा लक्ष्य

एक दिन पत्थर, फूल पर बहुत नाराज हुआ। उसने कहा, 'जानता नहीं मेरी शक्ति। तुझे जरा सी देर में पीसकर रख दूँगा।'

फूल मुस्कराया और बोला, 'तब तो आप मेरी सुगंध को दूर-दूर तक फैला देने का उपकार करेंगे। महोदय!' इसमें मुझे न खिन्न होना है और न उद्विग्न। शरीर का मोह करूंगा तो भयभीत रहूंगा और ऊंचे लक्ष्य का आनन्द न ले कूंगा।

# मानव जीवन में तीर्थों एवं तीर्थ यात्रा का प्रभाव

श्री जसराज देवड़ा, धोका

विश्व के प्रायः सभी धर्मों यथा हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई,जैन, बौद्ध आदि में तीर्थों एवं तीर्थाटन को सर्वोपरि महत्व दिया गया है। तीर्थ स्थल विभिन्न संस्कृतियों के गौरवशाली विरासत के अमर प्रतीक हैं। व्यक्ति व मानस में चेतना और संस्कार ऊर्जा को भरने के विशाल स्रोत हैं। 'भव समुद्रोदनेन तीर्थते तत् तीर्थम्' - जिसके द्वारा भव सिंधु - संसार सागर को तिरा जा सके उसे तीर्थ कहा जाता है। जिन स्थानों पर अपने-अपने आराध्य, भगवानों, देवी, देवताओं, पैगंबर, गुरुओं, ग्रन्थों आदि के दर्शन, वंदन, स्मरण, प्रार्थना हेतु भव्य मंदिर, सुन्दर स्तूप, पूजा स्थल, मस्जिद, चरण पादुकाओं की प्रस्थापना होती है, वे सभी स्थल स्थावर तीर्थ कहलाते हैं। कई तीर्थों का निर्माण विभिन्न धर्मों के महापुरुषों के जीवन से संबंधित घटनाओं, शुभ, शिक्षाप्रद, ऐतिहासिक प्रसंगों के आधार पर भी हुआ है। जैन धर्मावलंबी सर्वज्ञदेव श्री तीर्थंकर भगवंत भाषित द्वादशांगी आगम शास्त्र एवं उन आगम शास्त्रों के आधारभूत श्री गणधर महाराजादि श्रमणों, श्रमणियों (साधु-साध्वी), श्रावक एवं श्राविकाओं के रूप में जो चतुर्विद संघ है, उसे भी जंगम तीर्थ के संबोधन रूप से जानते हैं। तीर्थ आत्म उन्नति और आत्म विकास के अनन्य साधन हैं।

**तीर्थ यात्रा का प्रभाव**

सांसारिक गृहस्थ के जीवन में विभिन्न कारणों से अशान्त और चंचल मन की चंचलता को शान्त करने में तीर्थ यात्रा सहायक बनती है। मन की पवित्रता प्राप्त होती है। कहा गया है-'आत्मसंतुष्टि से बढ़कर कोई धर्म नहीं है।' तीर्थ यात्रा करने से मनुष्य को यही आत्म संतुष्टि प्राप्त होती है। मनुष्य अत्यधिक प्रसन्नता महसूस करता है। निवास स्थल से कुछ समय दूर रहकर वह पूर्ण एकाग्रता से धर्म आराधना कर सकता है। तीर्थ भूमि के पावन रज कणों के स्पर्श से तीर्थयात्री की आत्मा कर्म रज के कणों से मुक्त होने लगती है। तीर्थ की पवित्रता यात्री के जीवन को पवित्र व निर्मल बनाती है। तीर्थ यात्रा से व्यक्ति भक्ति रस में लीन होता है। ज्ञान की अभिवृद्धि होती है, जीवन में परमार्थ-परोपकार, परायणता, उदारता आदि गुण पनपते हैं। कई सहधर्मियों से सम्पर्क होता है। अपनी अस्थिर सम्पत्ति (लक्ष्मी) का सद्व्यय करके पुण्य उपार्जन का सुअवसर प्राप्त होता है। यात्रा से ही आने वाली पीढ़ी को एक सुन्दर परम्परा शुरू करने का मार्ग प्रशस्त होता है। वर्तमान के भौतिक जीवन में तीर्थयात्रा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। तीर्थयात्रा के बारे में कहा गया है कि 'प्रत्येक मानव को अपना मनुष्य जीवन सफल करने हेतु यथाशक्ति अपने-अपने धर्म के तीर्थ स्थानों की यात्रा जीवन में अवश्य करना चाहिए।' कई बार ऐसा भी होता है कि कई सामर्थ्यवान-सम्पन्न-

धनाढ्य सेठ सामूहिक तीर्थयात्राएं अपने द्रव्य से करवा कर जन-जन की मनोकामनाएँ पूरी करते हैं। अर्थात् तीर्थयात्रा करना व कराना दोनों ही पुण्योपार्जन के श्रेष्ठ साधन हैं।

## तीर्थयात्रा के समय इन बातों का ध्यान रखें

तीर्थ यात्रा करने वाले व्यक्ति को सुदेव, सुगुरू और सुधर्म इन तीनों के प्रति दृढ़तापूर्वक श्रद्धा धारण करना चाहिए। मन, वचन और काया से संयमी बनना चाहिए। अपनी जाति, कुल आदि का ध्यान रखते हुए उचित मर्यादा वाले वेष (वस्त्र) धारण करना चाहिए। तीर्थों के नियम आदि का पूर्णरूप से पालन करने से हमें अच्छी व्यवस्थाएं प्राप्त हो सकेंगी। तीर्थयात्रा एवं पर्यटन दोनों में प्रवास रूप में समानता होने पर भी दोनों के उद्देश्यों में भारी अन्तर है। तीर्थयात्रा का प्रयोजन मौज-शौक अथवा मनोरंजन मात्र नहीं है। तीर्थयात्रा प्रवास में प्रत्येक पाप कार्य, अनुचित आचरण से बचना चाहिए। तीर्थों की पवित्र भूमि पर किया गया प्रत्येक अशोभनीय कार्य हमारे भविष्य के लिए अत्यन्त कष्टदायक हो सकता है। महापुरुषों ने तो यहाँ तक कहा है कि -

'अन्य स्थाने कृतं पापं, तीर्थ स्थाने विनश्यति।
तीर्थ स्थाने कृतं पापं, वज्रलेपो भविष्यति।।'

अर्थात्- अन्य स्थानों पर किए गए पाप तीर्थ स्थानों पर नष्ट हो जाते हैं किन्तु तीर्थ स्थलों पर किए हुए पाप वज्रलेप के समान हो जाते हैं।

## आभार प्रकट करें

जिस किसी तीर्थ का आप प्रवास, अवलोकन करें वहाँ अनुमोदना, प्रशंसा अवश्य करें। विचार करें कि 'वे कितने महान, उदार हृदय, उपकारी जन थे जिन्होंने अत्यन्त परिश्रम एवं त्याग करके ऐसे भव्य तीर्थों का निर्माण करवाया और आने वाली पीढ़ियों के लिए अमूल्य धरोहर छोड़ गए हैं। हमें भी, हमारे आराध्य ऐसी शक्ति दें ताकि हम भी ऐसे सद्कार्यों में आगे बढ़ सकें।' तभी हमारी तीर्थ यात्रा सार्थक होगी।

# श्रेष्ठ जीवन

* *लेना चाहते हैं तो सबकी दुआएं लो।*
* *दान करना चाहते हैं तो सद्गुणों का दान करो।*
* *दमन करना चाहते हैं तो क्रोध का दमन करो।*
* *जानना चाहते हैं तो परमात्मा को जानें।*
* *जीतना चाहते हैं तो अपने मन को जितो।*
* *पीना चाहते हैं तो ज्ञानरूपी अमृत पियो।*
* *त्याग करना चाहते हैं तो अपने अवगुणों का त्याग करें।*
* *तौलना चाहते हैं तो अपने शब्दों को तौलें।*
* *भूलना चाहते हैं तो दूसरे की गल्तियों को भूलें।*
* *रचना चाहते हैं तो स्वर्णिम संसार रचें।*

- संतोष सोभागचंदजी संचेती, मलकापुर

# संसार का स्वरूप- 'संसार एक कारागृह'

(साध्वी प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

प्रिया स्नेहो यस्मिन्निगड़सदृशो यामिक भये-पमः स्वीयो वर्गो धनमभिनवं बंधनमिव।

मदामेध्यापूर्ण व्यसर्नाबलसंसर्गविषमम्।
भवः कारागृहं तदिह न रतिः क्वापि विदुषाम्।।

अनुवाद- यह संसार कारागृह के सदृश है। इसमें प्रियों का स्नेह बेड़ी के समान है। पुत्र, स्वजन, परिजन आदि पहरा लगाने वाले सिपाही हैं। धन नवबंधन जैसा है। यहाँ अभिमान रूपी अशुचि से भरे हुए अनेक स्थल हैं, जिसमें व्यसन (आपत्ति) रूपी बिल है और स्त्रीसंसर्ग रूपी भयंकर गड्ढे हैं। विद्वान पुरुष को प्रीति हो, ऐसा कोई स्थान इसमें नहीं है।

अनन्तोपकारी परमात्मा ने इस संसार को दुःखमय, दुःखफलक और अनन्त दुःखों की खान, दुखों की परंपरा वाला बताया है। जब तक संसार स्वरूप पहचान में नहीं आएगा तब तक धर्म की आराधना भी वास्तविक रूप में नहीं होगी। इसलिए महापुरुषों ने सर्वप्रथम संसार के अनन्त दुःखों को समझाने का प्रयत्न किया है, फिर संसार का उच्छेद करने के लिए परमतारक धर्म को बताया है। धर्म करने वाले में संसार का नाश करने की भावना वाले पुण्यात्मा बहुत कम होते हैं। प्रायः प्राणी संसार में सुख प्राप्त करने और दुःख को टालने के लिए धर्म करते हैं। जयवीयराय सूत्र में परमात्मा से सबसे प्रथम प्रार्थना 'भवनिव्वेओ' अर्थात् संसार से वैराग्य की प्राप्ति हो, इस रूप में की गई है। उपाध्याय यशोविजयजी ने संसार के भयंकर स्वरूप को समझाने के लिए इसकी तुलना समुद्र, अग्नि, कसाईखाने , राक्षस, जंगल, विषवृक्ष और कारागृह से की है। दुःखमय संसार तो सभी को भयंकर लगता है परन्तु अपनी दृष्टि में जो सुखमय संसार है, वह भी भयंकर है। कारागृह (जेल) में कैदियों के हाथ और पैरों में जंजीरें बांध दी जाती हैं, जिससे वह कारागृह से भाग नहीं सके। उन पर नजर रखने के लिए पहरेदार नियुक्त होते हैं। प्राचीन काल के कारागृहों में कैदी जिस कक्ष में रखे जाते थे, उसी में उन्हें एक तरफ मल-मूत्र का त्याग करना होता था। इससे वह स्थान दुर्गंधमय एवं अशुचि से परिपूर्ण रहता था। उस जमीन में यहाँ-वहाँ सर्प आदि विषैले जीव-जन्तुओं के होने का भय बना रहता था।

संसार रूपी जेल की स्थिति भी ठीक ऐसी ही है। मनुष्य प्रिया की स्नेहरूपी बेड़ी में जकड़ा हुआ है। स्नेह का बंधन बहुत जटिल होता है। छोड़ने का प्रयास करने पर भी वह छूटता नहीं। उसी प्रकार जिस तरह 4 ज्ञान के धनी, 50 हजार केवली शिष्यों के गुरु गणधर गौतमस्वामी जब देवशर्मा ब्राह्मण को प्रतिबोध देने गए थे। बहुत समझाने के बाद भी ब्राह्मण अपनी पत्नी के प्रति स्नेह बन्धन को तोड़ नहीं सका। आसक्ति छोड़ नहीं सका और उसी समय दरवाजे की चोट से उसकी मृत्यु हो गई। अपनी आसक्ति के कारण वह मरकर पत्नी के सिर में जूँ के रूप में उत्पन्न हुआ। यहाँ पुत्रादि स्वजन पहरेदार के समान हैं। ये सांसारिक जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं होने देते। धर्माराधना में अवरोध उत्पन्न करते हैं। आर्द्रककुमार को पुत्र प्रेम बंधन के कारण 12 वर्ष और संसार में

रहना पड़ा। धन नवीन बंधन के समान है, जिसके मोह में फंसकर व्यक्ति अपना सुख-चैन सब खो देता है। धन के लिए व्यक्ति रात-दिन परिश्रम करता है। किसी कवि ने कहा है-

'जन्म से मरण तक दौड़ता है आदमी,
और दौड़ते ही दौड़ते दम तोड़ता है आदमी।
दो रोटी और कपड़े के लिए धन जोड़ता है आदमी,
धन जोड़ते ही जोड़ते तन छोड़ता है आदमी।।'

धन के कारण भाई, भाई के खून का प्यासा हो जाता है। एक कहानी है। दो भाई अपने गाँव से दूर एक अटवी से गुजर रहे थे। जंगल में उन्होंने स्वर्णमुद्रा से भरी एक थैली पड़ी देखी। दोनों खुश हो गए। बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा- 'अब धन कमाने कहीं जाना नहीं पड़ेगा। धन यहीं मिल गया है। भूख लग रही है, तू पास के गाँव से भोजन सामग्री लेकर आ जा।' छोटा भाई चलते-चलते सोच रहा है-'क्यों न सारा धन मेरा हो जाए।' यह सोचकर वह भोजन में जहर मिला देता है। जहर मिला भोजन लेकर वापस लौटता है। इधर बड़े भाई के मन में भी ये ही विचार चल रहे थे। छोटे भाई को आता देख बड़ा भाई उसे दूर से ही गोली का निशाना बना देता है। छोटा भाई वहीं ढेर हो जाता है। बड़ा भाई उसके पास से भोजन लेकर भोजन करने बैठता है। विषैले भोजन से वह भी तड़पते हुए प्राण त्याग देता है। स्वर्णमुद्राओं से भरी थैली वहीं की वहीं रह जाती है। दोनों मरकर दुर्गति में चले जाते हैं।

दुःख रूपी बिलों से युक्त यह संसार है। इस संसार में धनादि के नष्ट हो जाने पर पत्नी, पुत्रादि का वियोग हो जाने पर, शरीर में रोगादि उत्पन्न हो जाने पर दुःख सहना पड़ता है। अनेक प्रकार की विपत्तियाँ आती हैं। जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते हैं। जन्म-जरा-मृत्यु से युक्त संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं जिसके प्रति विवेकी पुरुषों को कोई रुचि हो। पुण्य से प्राप्त सुख कर्मोदय जनित होने से वास्तव में दुःख ही होता है।

बचपन से ही वन में रहनें वाले एक तरुण ऋषि ने अपने गुरु से पूछा- 'संसार क्या है?' गुरु ने कहा अवश्य बताऊँगा लेकिन पहले गाँव में जो एक सफेद बंगला है, वहाँ से भिक्षा लेकर आ जाओ। शिष्य भिक्षा लेने के लिए उस सफेद बंगले पर गया। दरवाजा बजाया। एक रूपवान, तरूण कन्या ने दरवाजा खोला। शिष्य उस कन्या को देखकर उस पर मोहित हो गया। उसे देखता ही रहा। उसके पिता से कन्या को मांग लिया। दोनों का विवाह हो गया। दोनों सुखपूर्वक रहने लगे। सात-आठ वर्ष की समयावधि में उनके तीन बच्चे हुए। एक दिन अचानक आई बाढ़ ने विकराल रूप धारण किया और देखते ही देखते सारा नगर डूब गया। वह युवक भी अपनी स्त्री और बच्चों को बचाने का प्रयत्न करता रहा। बाढ़ के पानी में बच्चे-पत्नी सब अलग-अलग बह गए। वह भी बहता हुआ एक किनारे पर आकर बेहोश हो गया। जब होश आया और आँखें ख़ोली तो गुरु को अपने सामने खड़ा पाया।

वह बोला-'मेरे बच्चे कहाँ हैं? मेरी पत्नी कहाँ है? मेरा घर..' गुरु ने कहा बेटा चल उठ। वह सब एक स्वप्न था.....। बस यही संसार है। जिसमें सार कुछ भी नहीं है। इसीलिए राजा, महाराजा और चक्रवर्तियों ने भी संसार को भयंकर जानकर सब कुछ छोड़कर संयम से नाता जोड़ना श्रेयस्कर समझा। प.पू. आचार्य भगवंत जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने संसार की असारता बताते हुए एक सज्झाय में कहा है-

'यम नु तेहु आवशे एक दिन, ध्यान धरी ने विचारो रे। सौने मूकी ने जावुं पडशे, पछी न कोई सहारो रे....।।'

# प्रशांत मूर्ति पूज्य उपाध्याय मोहनविजयजी म.सा.

(साध्वी श्री रुचिदर्शनाश्रीजी म.)

सागर के तूफान में फंसी नैया को किनारे पर लाने वाला योग्य मांझी यदि मिल जाए तो जैसे आनन्द की अनुभूति होती है, ठीक वैसा ही दिव्य आनन्द जीवन में तब उपलब्ध होता है जब किसी शिष्य को पूर्ण सद्गुरु का मार्गदर्शन मिलता है। वे उसकी नौका के खेवैया बन जाते हैं। शिष्य भी गुरु के चरणों में स्वयं को समर्पित कर देता है। गुरु के साथ अद्वैत की अनुभूति करता है। पूज्य उपाध्याय मोहनविजय जी म.सा. उन सौभाग्यशाली शिष्यों की पंक्ति में हैं, जिन्हें गुरु रूप में श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिजी म.सा. की असीम कृपादृष्टि प्राप्त हुई। उनके मन में भी गुरु के प्रति श्रद्धा का अथाह सागर सतत् लहराता था। एक शिष्य के मन में गुरु के प्रति कैसा समर्पण होना चाहिए यह आपके जीवन से सहज ही जाना जा सकता है। पू.उ. मोहनविजय जी म.सा. त्रिस्तुतिक संघ की गौरवशाली श्रमण परम्परा के अनमोल यशस्वी संत थे।

सहज, सौम्य, सरल, सुदृढ़ संयमी, शांतमूर्ति, ओजस्वी प्रवक्ता पू.उ. मोहनविजय जी म.सा. का जन्म जालौर जिले के साबूंजा गांव में संवत् 1922 भाद्रपद वदी 2 गुरुवार के दिन हुआ था। पिता बदीचंदजी राजगुरु के पद से अलंकृत ब्राह्मण पुरोहित थे। माता का नाम लक्ष्मीदेवी था। बालक के जन्म से माता-पिता, परिवार एवं स्नेहीजनों का रोम-रोम पुलकित हो उठा। बालक का नाम मोहन रखा गया। बाल सुलभ क्रियाकलापों एवं विनयगुण के कारण मोहन माता-पिता एवं कुटुम्बजनों का अत्यन्त प्रिय बन गया।

मोहन के माता-पिता सौधर्मबृहत्त-पोगच्छीय वयोवृद्ध आचार्य श्रीमद् विजयप्रमोद सूरीश्वरजी म.सा. के परम भक्त थे। मोहन जब आठ वर्ष का हुआ तो वे मोहन को साथ में लेकर आहोर नगर में विराजित अपने श्रद्धेय गुरु पू. प्रमोदसूरिजी म.सा. के पास दर्शन हेतु पहुँचे। बदीचंदजी अपने लाड़ले पुत्र मोहन का भविष्य जानने को उत्सुक थे। उन्होंने आचार्य भगवंत से विनंती की कि कृपा करके मुझे मोहन का भविष्य बताईये। आचार्य भ. मोहन का यशस्वी ललाट एवं उन्नत भाग्य रेखाएँ देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा 'तुम्हारा पुत्र परम पुण्यशाली है। भाग्यरेखाओं से स्पष्ट है कि यह बालक सांसारिक भौतिक सुखों में लिप्त नहीं होगा। ग्यारह वर्ष की उम्र में त्याग मार्ग का पथिक बन जाएगा। संयमी बनकर स्व-कल्याण एवं पर-कल्याण का पावन कार्य करेगा।' बदीचंदजी को आचार्य भ. के वचनों पर पूर्ण विश्वास था। वे उदास हो गए। आचार्य भ. बदीचंदजी की मुखमुद्रा से

जान गए कि पुत्र के प्रति अत्यन्त ममता होने और दीक्षा की बात सुनकर ही यह उदासीनता आई है। आचार्य भ. बोले- 'चिंता क्यों करते हो बदीचंद! तुम तो बड़े भाग्यवान हो। तुम्हारा पुत्र संसार के मोहजाल को तोड़कर अनेक जीवों के कल्याण में आलंबन रूप बनेगा। पूर्वकाल में भी अनेक महापुरुषों ने बाल्यकाल में ही संयम ग्रहण किया था।' आचार्य भ. के उपदेशों से प्रभावित हो बदीचंदजी ने अपना पुत्र आचार्य भ. के चरणों में समर्पित कर दिया। मोहन ने भी गुरु के चरणों में रहने की भावना अभिव्यक्त की।

ऐसा माना जाता है और कुछ इस प्रकार की बात फैली हुई है कि उपाध्याय मोहन विजयजी बचपन में शारीरिक रूप से या तो विकलांग थे अथवा उन्हें कोई अन्य शारीरिक विकृति थी। आचार्य भ. का वासक्षेप पड़ते ही वह विकृति ठीक हो गई थी। यह मात्र एक भ्रांति है। पू. आचार्य यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा लिखित उपाध्याय मोहनविजयजी के चरित्र में कहीं भी इसका उल्लेख नहीं है। पू. यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. विश्वपूज्य श्रीमद् विजयराजेन्द्र सूरीश्वरजी के शिष्य होने से उनका उल्लेख हमारे लिए सबसे अधिक प्रामाणिक है।

आचार्य भ. की शीतल छत्रछाया में मोहन का अभ्यास प्रारंभ हुआ। बालक के सरल एवं निःश्छल हृदय भूमि में जैसे चाहे वैसे संस्कार के बीज बोए जा सकते हैं। आचार्य भ. के सान्निध्य में विनय, विवेक, वैयावच्च, विनम्रता, वाकमाधुर्य आदि गुण उत्तरोत्तर निखरते चले गए। गुरु कृपा से बुद्धि भी अपेक्षाकृत तीव्र हो गई। मोहन ने लिखना-पढ़ना सीखा साथ ही पंच प्रतिक्रमण, प्रकरण, भाष्य, कर्मग्रन्थ आदि कंठस्थ कर लिए। पू. प्रमोदसूरिजी म.सा. वृद्ध हो चले थे। उनका अधिकांश समय एकान्त में,आत्मध्यान में, साध्वाचार विशुद्ध क्रियाओं में व्यतीत होता था। अतः मोहन को विशेष अभ्यास के लिए उन्होंने उन्हें अपने शिष्य श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरिजी म.सा. के पास भेज दिया।

विश्वपूज्य गुरुदेव के पास मोहन ने एक वर्ष में चन्द्रिका का पूर्वार्द्ध एवं कुछ प्रकरण ग्रन्थों का अध्ययन कर लिया। विश्वपूज्य गुरुदेव की विशुद्ध जीवनशैली एवं वचनामृत का मोहन के निर्मल हृदय पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। मोहन वैराग्य ज्ञान से परिपुष्ट हो गया। वह संयम लेने के लिए उतावला हो गया। विश्वपूज्य गुरुदेव ने भी मोहन को अनेक प्रकार से कसौटी पर कसा और पूरी तरह योग्य जानकर ही संयम हेतु सहमत हुए। पू. प्रमोदसूरिजी म.सा. के आदेश से संवत् 1933 माघ सुदी 2 को जावरा में अष्टान्हिका महोत्सवपूर्वक 11 वर्षीय मुमुक्षु मोहन को दीक्षा प्रदान की गई। दीक्षा के पश्चात् मोहन का नाम मुनि मोहनविजयजी रखा गया। नूतन मुनि ने अपने जीवन में गुरु आज्ञा को सर्वोपरि महत्व दिया। मोहन मुनि गुरु की एक आवाज पर रात को नींद में से उठ खड़े होते थे। अपने अप्रतिम विनयगुण से आपने गुरु के हृदय में भी स्थान बना लिया। सचमुच गुरू आज्ञा का पालन करने वाला शिष्य जन्म-जन्मान्तर में कल्याण का भाजन बन ही जाता है। मुनि मोहनविजयजी सफलता के शिखर पर द्रुत गति से बढ़ने लगे। अपने गुरु

विश्वपूज्य श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के मंगल सान्निध्य में आपने तेरह आगम ग्रन्थों का योगोद्वहनपूर्वक अध्ययन किया। संवत् 1939 मगसर वदी 2 को कुक्षी में आपको बड़ी दीक्षा प्रदान की गई।

पू.उपाध्याय मोहनविजयजी की संयम एवं संघ निष्ठा, उनका उदात्त आचार-विचार, वात्सल्य भरा व्यवहार जनमानस को आकर्षित करता था। दीक्षा के बाद आपने इक्कीस चातुर्मास विश्वपूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में, एक चातुर्मास श्रीमद् विजयधनचन्द्रसूरिजी म.सा. के साथ और तेईस चातुर्मास स्वतंत्र रूप से विभिन्न शहरों में किए। इन चातुर्मास के दौरान आपने उच्चकोटि की शासन प्रभावना की। आपकी व्याख्यान की शैली बहुत अद्भुत थी। आपकी निष्कपट सुमधुर सत्यवाणी को सुनने के लिए श्रद्धालुवर्ग हजारों की संख्या में चले आते थे। आपके प्रवचन में श्वेताम्बर, दिगम्बर, स्थानकवासी, वैष्णव आदि अनेक सम्प्रदायों के लोगों की उपस्थिति रहती थी। आपके द्वारा अनेक मुमुक्षु आत्माओं को दीक्षा दी गई, प्रतिष्ठा, अंजनशलाका, उपधान आदि शासन प्रभावना के कार्य किए गए, जिनका वर्णन इस प्रकार है :-

1. संवत् 1959 आषाढ़ सुदी 5 को सियाणा में दो युवकों को दीक्षा प्रदान की, जिनका नामकरण क्रमशः अमृतविजयजी एवं धीरविजयजी के रूप में हुआ।

2. संवत् 1963 ज्येष्ठ सुदी 5 को सियाणा में केसाजी पोरवाल की पुत्री हस्तुबाई को दीक्षा देकर देवश्री नाम रखा।

3. संवत् 1964 वैशाख सुदी 2 को भैंसवाड़ा में आहोर निवासी हम्माजी पोरवाल की पुत्री कंकु बहन को दीक्षा प्रदान कर धर्मश्री नामकरण किया।

4. संवत् 1972 वैशाख सुदी 10 को आहोर में जवानजी पोरवाल की पुत्री हीरीबाई को दीक्षा प्रदान कर हेतश्री नाम घोषित किया।

5. संवत् 1969 के बागरा चातुर्मास में उपधान तप की आराधना की गई।

6. संवत् 1965 ज्येष्ठ सुदी 3 को मन्दसौर में विश्वपूज्य प्रभु श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की चरण पादुकाओं की प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई।

7. संवत् 1966 पौष सुदी 8 को पू. धनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने आपको उपाध्याय पद से अलंकृत किया।

8. संवत् 1968 माघ सुदी 11 को बड़नगर में भ. महावीर स्वामीजी की प्रतिमा के साथ कुल 11 प्रतिमाओं की प्रतिष्ठांजन शलाका सम्पन्न कराई।

9. संवत् 1968 ज्येष्ठ सुदी 11 को अमलावद में आदिनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा।

10. संवत् 1972 माघ सुदी 13 को जालौर के देबावल गांव में श्री पार्श्वनाथ भगवान सहित तीन जिन बिम्बों की प्रतिष्ठा।

11. आगरा में भी श्री पार्श्वनाथ भ. आदि तीन जिन बिम्बों की प्रतिष्ठा अंजन शलाका का आयोजन सम्पन्न कराया।

12. संवत् 1973 माघ सुदी 10 को ग्राम रोजाना (म.प्र.) में श्री आदिनाथजी भगवान आदि तीन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

13. संवत् 1975 माघ सुदी 10 को श्री आदिनाथ स्वामी आदि तीन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा सम्पन्न की।

इसी तरह आत्महित एवं लोकहित के अनुष्ठानों में अनवरत क्रियाशील रहते हुए पूज्य उ. मोहनविजयजी ने संवत् 1975 का चातुर्मास कुक्षी नगर में किया। इस चातुर्मास में आपको पक्षाघात की बीमारी हो गई। अनेक प्रकार के उपचार किए गए किन्तु विधि को कुछ और ही मंजूर था। भयंकर वेदना में भी आपने अपने आत्मबल को ज्वलंत बनाए रखा। लगभग ढाई वर्ष तक पक्षाघात की समस्या से प्रभावित रहे। इस बीच मुनि श्री दानविजयजी (पू.आ.भूपेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा दीक्षित) एवं कुक्षी के श्रावकरत्न परम श्रद्धालु श्री चुन्नीलालजी पोरवाड़ ने आपकी विशेष परिचर्या की। यह सच है कि परिक्षीण आयुष्य को बढ़ाने का संसार में कोई उपाय नहीं है अन्यथा पवित्र आदर्श आत्माओं का वियोग हमें सहना ही न पड़े। संवत् 1977 पौष सुदी 3 बुधवार को आपने कुक्षी में पार्थिव शरीर का त्याग कर महाप्रयाण किया।

ग्यारह वर्ष गृहस्थ जीवन में तथा 44 वर्ष दीक्षा पर्याय में रहते कुल पचपन वर्ष का आयु पूर्ण किया। आपकी सहजता, सरलता, विश्व बंधुत्व का भाव, गुरु समर्पण एवं संघ निष्ठा के भाव सदैव स्मृत किए जाते रहेंगे।

## बुद्धिमान

जो सुनने योग्य बातों को एकाग्रचित्त हो सुनता है और व्यर्थ की बातों में रूचि नहीं रखता, वह बात के मर्म को तुरन्त समझ लेता है। जो बिना पूछे किसी को सलाह नहीं देता और खूब सोच-विचार करके ही कोई काम शुरू करता है और हाथ में लिए काम को अधूरा नहीं छोड़ता, वही बुद्धिमान है।

जो नष्ट हुई वस्तु के लिए शोक नहीं करता, जो विपत्ति पड़ने पर धैर्य और विवेक का साथ नहीं छोड़ता, जो पराई वस्तु का लालच नहीं करता और सदा शुभ कर्म करके अपने पुरुषार्थ से ही कोई वस्तु प्राप्त करता है, जो सफल होकर इतराता नहीं, वही बुद्धिमान है। जो यश और आदर-सम्मान मिलने पर अत्यधिक प्रसन्न न हो और न मिलने पर कुंठित न हो, जो अपनी विद्या का अहंकार नहीं करता, अपने धन का दुरुपयोग नहीं करता, जो गहन गंभीर और उदार स्वभाव रखता है, किसी के प्रति वैर भाव नहीं रखता, वही बुद्धिमान है।

जो अपने द्वारा किए गए उपकार और दूसरे के अपने प्रति किए अपकार को याद नहीं रखता, जो अपनी बुराइयों और दूसरों की भलाइयों को भूलता नहीं, जिसके साथ रहने से किसी का अहित नहीं होता बल्कि भला ही होता है और जो किसी भी समस्या को ठीक ढंग से सुलझा लेता है, वही बुद्धिमान है।

जो मर्यादा का पालन करता है, जो किसी भी विषय पर तर्क और युक्ति कर सकता है, जो अद्भुत बातें जानता है, जो शक्ति के अनुसार काम करता है, नीति के विपरीत आचरण नहीं करता, जो विनम्र और अहंकार रहित है, वही बुद्धिमान है।

# गुरु के उपकारों को चुकाना असंभव है

(संकलन-सा.तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

गुरु भवरूपी समुद्र को पार कराने में सार्थवाह के समान हैं। स्वार्थ के बिना दूसरों का कार्य करना उपकार कहलाता है। उपकारी के उपकार को याद रखना एवं उसके बदले अपना सब कुछ समर्पण करने का भाव कृतज्ञता कहलाता है। उपकार को जो भूलता है वह कृतघ्न कहलाता है। कृतज्ञता सभी गुणों में श्रेष्ठ है। छोटे सांसारिक उपकारों का बदला चुकाने में भी हम प्रायः स्वयं को असमर्थ पाते हैं ऐसे में संसार समुद्र से तारने वाले सद्गुरु के उपकार का बदला हम कैसे चुका सकते हैं? नहीं चुका सकते हैं।

समय पर किया गया उपकार अमूल्य होता है। उपकारी, उपकार करने वाले के ऋण से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए एक बहुत प्यासा व्यक्ति है। प्यास से शरीर शिथिल है, कुछ भी करने में अशक्त है। कहीं से कोई पानी लाए और उसे पिलाए ऐसी स्थिति है। प्यास से उसका गला सूख गया है और मरने जैसी हालत है। लंबे इंतजार के बाद कोई व्यक्ति वहाँ आता है। उसे ठंडा पानी देता है। प्यासे व्यक्ति की प्यास बुझ जाती है। वह नये जीवन को प्राप्त करता है। वह उस पानी देने वाले व्यक्ति का बहुत उपकार मानता है। वह जीवन में उसके उपकार को कभी नहीं भूलता और समय आने पर हर प्रकार की सहायता से वह अपने उपर किए गए उपकारों को चुकाने को तत्पर रहने की कामना भी रखता है। अवसर मिलने पर उपकारी की सेवा कर उसे संतोष मिलता है। वह स्वयं को ऋण से मुक्त हुआ मानता है। पर क्या उपकारी का उपकार कर वह उपकार के ऋण से पूरी तरह मुक्त हो सकता है? नहीं। क्योंकि उस अवसर पर उपकारी द्वारा किया गया कार्य यानि मरणासन्न प्यासे व्यक्ति को पानी पिलाने का कार्य अमूल्य था। यदि उस अवसर पर प्यासे व्यक्ति को पानी नहीं मिलता तो वह अवश्य मर जाता। पानी देने वाले व्यक्ति ने प्यासे व्यक्ति को नया जीवन दिया है। जीवन देने के उपकार का बदला जीवन देकर ही चुकाया जा सकता है, जो मुश्किल है। इसलिए पानी देने वाले के उपकार का बदला भी हम नहीं चुका सकते हैं।

उक्त उदाहरण में पानी देने वाले वाला व्यक्ति हमें एक मरण से बचा सकता है लेकिन संसार समुद्र से तारने वाले गुरु अनन्त-मरण से हमें बचाते हैं। गुरु के उपकारों का बदला चुकाना असंभव ही है। गुरु का कार्य माता के समान है। माता बालक को जन्म देती है, दूध पिलाती है, पालन पोषण कर बड़ा करती है, उसका रक्षण करती है। अपने पूरे जीवन में बालक के हित का विचार करती है और उसके लिए कुछ भी करने को हमेशा तैयार रहती है। इसी तरह गुरु भी धर्म

की प्राप्ति के लिए, शिष्य के कल्याण के लिए उसके भाव शरीर को जन्म देते हैं। ग्रहण शिक्षा और आसेवन शिक्षा देकर उसे परिपक्व करते हैं। वाचना देकर उनका पोषण करते हैं। सारणा, वारणा आदि सभी प्रकार के उपायों से उसका रक्षण करते हैं। जीवन के अंत तक उसके हित का विचार करते हैं, उसे आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं।

गुरु उपकार से उऋण होना इसलिए भी असंभव है, क्योंकि गुरु कृपा से कर्म निर्जरा होने से शिष्य पर गुरु का उपकार बढ़ता ही जाता है। गुरु के ऊपर प्रत्युपकार यथार्थ में शिष्य के ऊपर उपकार ही है। गुरु के उपकार का बदला चुकाने से शिष्य की ही प्रगति होती है। यह परम्परा गुरु द्वारा आरम्भ होती है। इसलिए सम्पूर्णता में गुरु के उपकार का बदला चुकाना सर्वथा असंभव ही है।

# शाश्वत शरण देने वाले कौन?

आराधना का मुख्य द्वार है- शरणागत हो जाना। शरण लेना या आश्रय स्वीकार करना। प्रत्येक संसारी प्राणी अपनी सुरक्षा के लिए शरणस्थल की खोज करता है और उपयुक्त शरण मिलने पर स्वीकार भी कर लेता है। सामान्य व्यक्ति अपने परिवार, कुटुंब जनों को अपना रक्षक मानता है। परिवार के लोग किसी सक्षम सदस्य को अपनी शरण मानते हैं। परन्तु भगवान् ने आचारांग में फरमाया है – 'णालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा, तुमं पि तेसिं णालं ताणाए वा सरणाए वा।' माता-पिता आदि तुम्हें त्राण और शरण देने में समर्थ नहीं हैं और ना तुम उन्हें त्राण या शरण देने में समर्थ हो। इस आगम वाणी , जिनवाणी की अंतर से अनुभूति होने पर बहिर्मुखी व्यक्ति अन्तर्मुखी बन जाता है। चार शरण का स्मरण करता है- अरिहंत, सिद्ध, साधु, जिनधर्म। ये चार तत्व ऐसे हैं जो व्यक्ति को शाश्वत शरण दे सकते हैं। प्रथम तीन तत्व किसी अपेक्षा से 'पर' भी हो सकते हैं, परन्तु चौथा तत्व 'जिनधर्म' अपना निजी ही है। इसकी शरण में जाने के लिए और कोई अपेक्षा नहीं केवल अपनी वृत्तियों को मोड़ने की जरूरत है। धर्म क्या है? जिससे समता और शांति प्राप्त होती है। जिस धर्म के सहारे सुख-सुविधा के साधन जुटाए जाते हैं, प्रतिष्ठा की कृत्रिम भूख को शांत किया जाता है, प्रदर्शन और आडंबर को प्रोत्साहन दिया जाता है, ऐसे धर्म की शरण स्वीकार करने से शांति नहीं मिल सकती। धर्म का अर्थ है स्वभाव को पाना, स्वभाव में रमण करना। धर्म की शरण, आत्म स्वभाव में रमण का एक सूत्र है- पदार्थ प्रतिबद्धता का अभाव। जो धर्म के सही स्वरूप और अपने सहज आत्म स्वभाव को जान लेता है, पदार्थों के प्रति उसकी आसक्ति स्वतः कम हो जाती है।

-सुश्री हर्षिता जैन, भीलवाड़ा

लेखांक -1

# आत्मा है?

(साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.)

आत्मा है? इस विषय में सभी को शंका होती है, क्योंकि आत्मा दृष्टि में नहीं आती। उसका कोई रूप जान नहीं पड़ता। स्पर्श आदि अन्य अनुभवों से भी वह जानी नहीं जाती। अर्थात् जीव नहीं है? अथवा कि जो देह है, वही आत्मा है? या जो इन्द्रियाँ हैं, वे ही आत्मा हैं? या ये जो श्वासोच्छवास है, उसी का नाम आत्मा है? ऐसी भ्रान्तियाँ हो जाती हैं। यह भी प्रश्न है कि यदि आत्मा है तो वह मालूम क्यों नहीं होती? जैसे घट, पट आदि पदार्थ हैं तो वे जान पड़ते हैं, वैसे आत्मा हो तो भला मालूम क्यों न हो, दिखाई क्यों न दे, अनुभव क्यों न हो?

इस प्रकार की उलझनें प्रायः जिज्ञासुओं के मन में रहती है। इन्हीं जिज्ञासाओं का समाधान करने की कोशिशें आत्मपुरुषों ने की है। आत्मपुरुषों के समाधान के अनुसार अनादिकाल से अज्ञान के कारण आत्मा देह जैसा अर्थात् देहरूप ही भासित होता है। परन्तु आत्मा और देह दोनों भिन्न हैं। दोनों भिन्न-भिन्न लक्षणों से प्रगट ज्ञान में आते हैं। जैसे तलवार और म्यान, म्यानरूप लगते हुए भी दोनों भिन्न भिन्न हैं, वैसे आत्मा और देह दोनों भिन्न-भिन्न हैं।

आत्मा आँखों से कैसे दिखाई दे सकती है? वह तो उलटे स्वयं दृष्टा पर नजर रखने वाली है। शरीर की सभी इन्द्रियों को भी अपने-अपने विषय का ही ज्ञान है, दूसरी इन्द्रियों के विषय का उसे ज्ञान नहीं है। जैसे कर्णेन्द्रिय से जो सुना उसे कर्णेन्द्रिय जानती है, चक्षुरिन्द्रिय उसे नहीं जानती और चक्षुरिन्द्रिय ने जो देखा उससे कर्णेन्द्रिय अनभिज्ञ है। इसके विपरीत आत्मा को तो इन पाँचों इन्द्रियों के विषयों का ज्ञान है। अर्थात् जो इन पाँचों इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण किए विषय को जानता है, वह आत्मा है।

देह उसे (आत्मा को) नहीं जानती, इन्द्रियाँ उसे नहीं जानती और श्वासोच्छवास रूप प्राण भी उससे अनभिज्ञ है। हालांकि ये सभी एक आत्मा की सत्ता पाकर ही प्रवृत्ति करते हैं, अन्यथा तो वे जड़ रूप ही पड़े रहते हैं।

आत्मा का लक्षण है जानना और देखना। शरीर के जाग्रत अवस्था, स्वप्न और निद्रा अवस्था में रहने पर भी जो उन सब अवस्थाओं से भिन्न रहता है, इन अवस्थाओं के बीत जाने पर भी जिसका अस्तित्व है, और जो सभी अवस्थाओं को जानता है। अर्थात् जो सदा जाना ही करता है, ऐसा जिसका प्रगट स्वभाव है। जिसका जाननपणा कभी नष्ट नहीं होता, वह आत्मा है।

घट-पट आदि को हम स्वयं जानते हैं कि वे हैं। घट-पट स्वयं को नहीं जानते। घट-पट आदि का ज्ञाता (आत्मा) को हम नहीं मानें तो फिर उस ज्ञान को कैसा कहा जाए? जड़ और चेतन दोनों

भिन्न-भिन्न स्वभाव वाले हैं। किसी काल में जिसमें जानने का स्वभाव नहीं है, वह जड़ है, और जो सदा ही जानने के स्वभाव वाला है, वह चेतन है। जड़ हमेशा जड़स्वरूप एवं चेतन सदैव चेतनस्वरूप ही रहता है। कभी जड़ चेतन नहीं बनता और न चेतन, जड़रूप बनता है। दोनों का यह द्वैतभाव स्पष्ट ही अनुभव में आता है। आत्मा की शंका आत्मा स्वयं करता है। अथवा जो शंका करने वाला है, वही आत्मा है। यह शंका करने वाला ही मालूम नहीं होता, यह कैसा आश्चर्य है?

जीवन के विकास की शुरुआत तत्त्व की जिज्ञासा से होती है। जब तक तत्त्व ज्ञान नहीं होता, तब तक आत्मज्ञान की उन्नति असंभव है। आत्मा के विकास के लिए तत्वों को जानना, उसे जीवन में उतारना आवश्यक है। नौ तत्वों में आत्मा सबसे प्रमुख तत्व है। आत्मा ही पौद्गलिक पदार्थों से राग-द्वेष कर संसार में भटकती रहती है। आत्मा ही दानादि कर पुण्य का अर्जन करती है। आत्मा ही हिंसादि पाप कर्म बांधती है। आत्मा ही शुभ-अशुभ करके कर्मों का आश्रव करती है। आत्मा ही सामायिक आदि अनुष्ठानों से संवर करती है। आत्मा ही तपादि के द्वारा कर्मों की निर्जरा करती है। आत्मा ही सब कर्मों से मुक्त होकर अनन्तसुख को भोगती है। अगर आत्मा न हो तो शेष सारे तत्व महत्वहीन हो जाएं। इसलिए जैन शासन के नींव रूप 6 सिद्धान्त बताए गए हैं, जिन्हें तत्वज्ञान के 6 पाये के रूप में जाना जाता है- 1. आत्मा है। 2. आत्मा नित्य है। 3. आत्मा कर्म का कर्ता है। 4. आत्मा कर्म का भोक्ता है। 5. आत्मा का मोक्ष है। 6. आत्मा के मोक्ष का उपाय है।

धर्म का प्राण तत्व आत्मा है। जिसने आत्मा को जाना उसने सब जान लिया। आचारांगसूत्र में कहा गया है कि 'जो एगं जाणइ सो सव्वं जाणइ, जो सव्वं जाणइ सो एगं जाणइ।' ठाणंगआगम में कहा गया है कि 'एगे आया'

विज्ञान की नींव पदार्थ है। धर्म की नींव आत्मा है। जो पदार्थ को केन्द्र में रखकर जीता है, वह सच्चा धर्मी नहीं बन सकता। जो आत्मा को केन्द्र में रखकर जीता है, वह पक्का संसारी नहीं बन सकता। इसलिए हमें आत्मा का विचार करना है।

महान तत्वचिंतक इमेन्युअल कान्ट सुबह घुमने के लिए निकले। रास्ते में किसी व्यक्ति से टकरा गए। उस व्यक्ति ने गुस्से से पूछा- Who are you? कान्ट ने कहा If you could answer the same question to me. I would give you my half kingdom. अर्थ यह कि व्यक्ति ने पूछा 'तुम कौन हो?' एक तरह से यह साधारण प्रश्न था किन्तु एक चिंतक के रूप में कान्ट ने प्रतिप्रश्न में व्यक्ति से कहा- 'यदि तुम अपने सवाल का जवाब मुझे दे सको तो मैं तुम्हें अपना आधा राज्य तुम्हें सौंप दूंगा।' प्रश्न वाकई जटिल ही था। तभी तो आधी सम्पत्ति देने की शर्त पर भी 'मैं कौन हूँ' इस प्रश्न का जवाब कान्ट प्राप्त नहीं कर सके। अब विचार करिए कि हम कितने पुण्यशाली हैं कि जैन शासन में हम सहजता से ही जानते हैं कि मैं आत्मा हूँ। स्वयं को जानना, स्वयं को पहचानना यही सबसे महत्व की रिसर्च है। और जिसने स्वयं को जान लिया उसका मोक्ष

सुनिश्चित है।

यदि आत्मा जैसी कोई स्वतंत्र वस्तु को स्वीकार नहीं कर पाए तो पुण्य-पाप का विचार भी निरर्थक ठहरता है। स्वर्ग-नर्क की बातें भी व्यर्थ हो जाएंगी। पूर्वजन्म या परलोक की बात तो मानों अर्थहीन ही हुई। इसलिए आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करना मोक्ष मंजिल की ओर प्रथम कदम है। इसलिए प्रथम विचारणा आत्मा की करने में आती है। यदि आत्मा है तो आत्मा के गुण यथा आत्मा नित्य है, आत्मा कर्म का कर्ता है, आत्मा कर्म का भोक्ता है, आत्मा का मोक्ष है और मोक्ष का उपाय भी स्वतः विचारणीय हैं। (क्रमशः)

## कृतपुण्यक (कयवन्ना सेठ)

पूर्व भव में मुनि को दान देने से इस भव में राजगृही नगरी में धनेश्वर सेठ के यहाँ जन्म लिया। पूर्वभव में किये अच्छे कार्यों के कारण इस भव में श्रेणिक महाराजा का आधा राज्य मिला व उनकी सुपुत्र मनोरमा से विवाह सम्पन्न हुआ। संसार के सम्पूर्ण सुख भोग के बाद प्रभु महावीर स्वामी के पास दीक्षा ग्रहण की। उन्होंने कई तप कर अपनी आत्मा का कल्याण किया।

आज भी 'कयवन्ना सेठनुं सौभाग्य होजो'। ऐसे शब्द नये वर्ष के चौपड़ा में लिखते हैं।

## कार्तिक सेठ

भगवान महावीर स्वामी के दर्शनार्थ प्रथम देवाधिपति शकेन्द्र आये। गौतम स्वामी ने पूछा- 'भगवान! देव शक्रेन्द्र ने किस प्रकार से इतनी सिद्धि प्राप्त की?'

'हे गौतम! अर्हत तीर्थंकर मुनिसुव्रत स्वामी के समय हस्तिनापुर नगर था। यहाँ कार्तिक नामक श्रेष्ठी निवास करता था, जो तत्वज्ञ व श्रमणोपासक था। वहाँ के तापस आया। राजा उस पर प्रसन्न हुआ। कार्तिक ने उसे धर्म गुरुवत सम्मान नहीं दिया। इससे क्रोधित हो कार्तिक की पीठ पर थाल में गरम-गरम खीर रखकर खाई। फिर कार्तिक ने एक हजार आठ पुरुषों के साथ प्रव्रज्या ली, संयम का पालन किया। वे ही मरकर प्रथम देवलोक के अधिपति शक्रेन्द्र बने और तापस उनका ऐरावत नामक गज देव बना। भविष्य में कार्तिक-शक्रेन्द्र जीव मोक्ष में जाएंगे।'

## हल्ल-विहल्ल

हल्ल, विहल्ल, श्रेणिक की पत्नी चेल्लणा रानी के पुत्र थे। श्रेणिक अपना हाथी सेचनक उन्हें देते हैं, इस कारण कोणिक उनके साथ युद्ध करता है। इस युद्ध में वैशाली पति चेटक महाराजा ने हल-विहल्ल की मदद की, पर युद्ध के दौरान सेचनक खाई में गिर कर मर जाता है। उन्हें वैराग्य उत्पन्न होता है। प्रभु महावीर स्वामी के पास दीक्षा लेकर अपने आत्मा का कल्याण किया।

# समाज व देशसेवा की अलख जगाते श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

(श्री विभाष ए जैन, पारा)

भारतीय संस्कृति में गुरु शब्द का एक अलग ही महत्व है और इसे सार्थक करने में धर्मगुरुओं का अलग ही योगदान है। मृगसर बदी तेरस के दिन सुविशाल गच्छाधिपति जिन्हें राष्ट्रसंत की पदवी से नवाजा गया ऐसे आचार्य श्री का जन्मोत्सव जैन समाज द्वारा पूरे भारत वर्ष में स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाया गया।

जैन समाज में विश्वपूज्य राजेन्द्रसूरीजी के पदचिन्हों पर चलने वाले नायाब मोतियों में से एक जयन्तसेनसूरीजी म.सा. (मधुकर) उत्तर गुजरात के एक छोटे से गाँव पेपराल के धरु कुल के स्वरूपचन्द्रजी एवं माता पार्वती के घर में आपका जन्म हुआ। बचपन से ही आपश्री ने समाज और देश के लिए कुछ विशेष करने की मानों प्रतिज्ञा कर ली थी। छोटी सी उम्र में ही गुरु यतीन्द्रसूरीजी म.सा. से दीक्षा प्राप्त कर जैन समाज में कई नए कीर्तिमानों को गढ़ना आपने शुरू कर दिया था। लाखों कि.मी. का उग्रविहार कर कई मंदिरों की आपने प्रतिष्ठा करवाई। जैन समाज ही नहीं वरन् सभी वर्ग के लोगों को आपने सद्कार्य हेतु प्रेरित किया। अपने विशिष्ट आचरण से भी आपश्री सभी समाज के लोगों को समाज हित, देशहित में योगदान का उपदेश देते रहे हैं। अपने प्रवचनों के माध्यम से भी समाज को एकजुटता के संदेश के साथ मार्गदर्शन प्रदान करते रहे हैं। आचार्यश्री ने जैन समाज को प्रेरणा देने, समाजजनों को अपनी धनलक्ष्मी (सम्पदा) के सदुपयोग कराने के कई उदाहरण हैं। इसके तहत शिक्षण संस्थाएँ, अस्पताल, धर्मशालाएं, ट्रस्ट के माध्यम से सामाजिक कार्यों में गति प्रदान की। देश के कई प्रान्तों में भ्रमण कर लोगों को मद्यपान से मुक्ति दिलाई। समाज में फैली विसंगतियों को दूर कर समाज के सभी तबकों को सामर्थ्य अनुरूप कार्य करने का अवसर प्रदान किया। युवाओं को अखिल भारतीय राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के माध्यम से सक्रिय किया। आपने अपने साधु जीवन में बड़ी-बड़ी प्रतिष्ठा, अंजनशलाकाएं, दीक्षा महोत्सवों में, चातुर्मास अन्तर्गत धार्मिक आयोजनों में निश्रा प्रदान कर समाज के उत्साह को चौगुना किया।

आपके 80 वें जन्मदिवस के अवसर पर मृगसर बदी तेरस को जैन समाज की सभी शाखाओं द्वारा समाजसेवा एवं स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े सेवा कार्यों में सहभागिता के साथ आपका जन्मदिन मनाने का निर्णय लिया गया जो आपके बताए हुए मार्ग का अनुसरण है। आचार्यश्री ने अपने जीवनकाल में समाज को नई दिशा और दशा देने में अपना अमूल्य योगदान दिया। आज भी समाज के कई आयोजनों में सभी को साथ लेकर चलने की प्रेरणा देते, विश्वकल्याण की भावना से ओतप्रोत आपके जीवन प्रसंग समाज में नई ऊर्जा का संचार करते हैं।

गुरुदेव आप दीर्घायु हों, आपका मार्गदर्शन समाज को सदा इसी प्रकार मिलता रहे, आपके वचनों से नई तरंगों का संचार हमें हमेशा की तरह आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहे।

समस्त गुरुभक्त, सकल जैन श्रीसंघ भारतवर्ष इसी आशा के साथ यह मंगलकामना करता है।

# संसार की चार उपमाएँ

(संकलन-श्री विनोद संघवी)

महातत्वज्ञानी संसार को एक समुद्र की उपमा देते हैं। संसार रूपी समुद्र को अनन्त व अपार निरुपित करते हुए वे कहते हैं-'हे मानव! इससे पार पाने के लिए पुरुषार्थ का उपयोग करो।' समुद्र में मौजों या लहरों की उछाल से संसार के विषयरूप दोषों की तुलना की गई है। समुद्र जैसे कहीं बहुत गहरा है और कहीं भंवरों में डाल देता है, वैसे ही संसार में गहरे काम विषय आदि प्रपंच और मोहरूपी भंवरों का उल्लेख किया गया है। दलदल में जैसे व्यक्ति गहरा धंसता जाता है, वैसा ही संसार के तृष्णारूपी कीचड़ को बताया गया है। समुद्र में जैसे नाना प्रकार की चट्टानों, तूफानों से नाव या जहाज को हानि होना संभावित रहती है, वैसी ही हानि आत्मा को कामरूपी तूफानों, आकर्षण रूपी चट्टानों से होती है। समुद्र जिस तरह अगाध जलराशि से शीतल दिखने पर भी बड़वानल अग्नि अपने में समेटे है, उसी तरह संसार में मायारूपी अग्नि नित जला ही करती है। समुद्र में जैसे संसार की सारी नदियाँ समाविष्ट होती रहती हैं उसी तरह व्यक्ति भी संसार में कर्मबंधनों को एकत्रित करता रहता है।

संसार की दूसरी उपमा अग्नि से की गई है। अग्नि से जैसे महाताप की उत्पत्ति होती है वैसे ही संसार भी विविध ताप से ग्रस्त है। अग्नि से जला हुआ जीव जैसे महान बिलबिलाहट करता है, वैसे ही संसार के विविध तापों से जीव अनंत दुःखरूप असह्य कष्ट भोगता है। अग्नि जैसे सभी वस्तुओं का भक्षण कर जाती है, वैसे ही संसार भी अपने मुख में पड़े जीवों का भक्षण कर जाता है। अग्नि में ज्यों-ज्यों घी और ईंधन होमे जाते हैं, त्यों-त्यों वह वृद्धि को प्राप्त होती है, वैसे ही संसार में भी ज्यों-ज्यों तीव्र मोहिनीरूप घी और विषयरूपी ईंधन होमे जाते हैं, त्यों त्यों इनमें वृद्धि होती रहती है।

संसार की तीसरी उपमा अंधकार से की गई है। अंधकार में रस्सी सर्प का बोध कराती है। वैसे ही संसार में सत्य, असत्य रूप प्रतीत होता है। अंधकार में जैसे व्यक्ति इधर-उधर भटक कर विपत्ति भोगते हैं, उसी तरह संसार में बेभान हो आत्मा अनन्त चतुर्गति में इधर-उधर भटकती है। अंधकार में जैसे कांच और हीरे का ज्ञान नहीं होता, वैसे ही संसार में विवेक-अविवेक का ज्ञान नहीं हो पाता। अंधकार में प्राणी आँखें होने पर भी अंधे बन जाते हैं। वैसे ही शक्ति सामर्थ्य होने पर भी संसार में व्यक्ति मोहांध बन जाते हैं। अंधकार में जैसे उल्लू इत्यादि निशाचर जीवों का उपद्रव बढ़ता है वैसे ही संसार में भी लोभ, माया आदि का उपद्रव बढ़ने लगता है।

संसार की चौथी उपमा शंकटचक्र अर्थात् छकड़े के पहिए से की गई है। चलते हुए शकटचक्र की भांति संसार में व्यक्ति फिरता रहता है। शकटचक्र की तरह मिथ्यात्व रूपी धुरी के बिना संसार नहीं

चलता। शकटचक्र आरों से टिका हुआ है, वैसे ही संसार शंका, प्रमाद आदि आरों से टिका हुआ है। संसार को जितनी हीन उपमाएँ दी गई हैं उनमें से हमने ये चार उपमाएँ ही जानी हैं। अब इनमें से लेने योग्य तत्व क्या हैं, इस पर विचार करें-

1. जैसे सागर मजबूत नाव और जानकार नाविक की मदद से पार किया जाता है, वैसे ही संसार समुद्र को सद्धर्म की नाव और सद्गुरु रूपी नाविक की सहायता से पार किया जा सकता है।सागर में जिस तरह चतुर पुरुषों ने निर्विघ्न मार्ग खोज निकाले हैं, वैसे ही जिनेश्वर भगवान ने भी तत्वज्ञानरूप निर्विघ्न उत्तम मार्ग बताया है।

2. जैसे अग्नि सबका भक्षण करती है, परन्तु पानी से बुझ जाती है। वैसे ही वैराग्य जल से संसाराग्नि को बुझाया जा सकता है।

3. जैसे दीया ले जाने से अंधकार मिट जाता है वैसे ही तत्वज्ञानरूपी न बुझने वाला दीया संसार रूपी अंधकार में प्रकाश कर सत्य वस्तु को बताता है।

4. जैसे शकटचक्र बैल के बिना नहीं चल सकता। वैसे ही संसार चक्र रागद्वेष के बिना नहीं चल सकता।

इस प्रकार संसार रोग का उपमा और निवारण उपाय बताए गए हैं। आत्महितैषी जन निरंतर इसका मनन करें और दूसरों को भी उपदेश दें।

## शाश्वत धर्म
## सूचना

* शाश्वत धर्म का प्रकाशन प्रतिमास की 3 तारीख को होता है अतएव किसी भी अंक में प्रकाशन हेतु उस मास की 10 तारीख तक रचनाएँ, 20 तारीख तक समाचार एवं चित्र मन्दसौर संपादन कार्यालय तक पहुंचना आवश्यक है। प्रकाशन सामग्री ई-मेल से भी भेजी जा सकती है।
* सदस्यता शुल्क, सहायता, विज्ञापन शुल्क की राशि हेतु राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा मुखर्जी चौक पर शाश्वत धर्म के करन्ट एकाउंट खाता नं. 63035775492 में ऑन लाईन जमा की जा सकती है। भेजी जाने वाली राशि की बैंक स्लिप की फोटोप्रति तत्काल मन्दसौर कार्यालय को भेजना आवश्यक है।
* आदणीय ग्राहकों को अपने पते में परिवर्तन की सूचना अपने नए एवं पुराने पतों के साथ अंकित कर भेजना चाहिए।
* प्रकाशन हेतु भेजी गई सामग्रियों में वे ही समाचार एवं रचनाएं स्वीकार की जाएंगी जिन्हें कम्प्यूटर अथवा टाईपराइटर से मुद्रित करवाकर भेजा गया है। यह सामग्री पृष्ठ के एक ओर टाइप होनी चाहिए।
* पत्रिका शाश्वत धर्म की प्राप्ति से संबंधित शिकायत किसी भी कार्यालयीन दिवस में दोपहर 2:30 बजे से 4:30 बजे तक की जा सकती है।

# परमार्थ का मीठा फल

(कटारिया श्री अशोक जैन, रानापुर)

किसी ग्राम में सुदर्शन नाम का एक लड़का एवं उसकी माताजी अत्यन्त ही निर्धन अवस्था में जीवन निर्वाह करते थे। जंगल से लकड़ियाँ लाकर बाजार में विक्रय करना उनका दैनिक कार्य था। लड़के के पिताश्री की अकाल मृत्यु हो चुकी थी। लड़का होनहार था। सोचता रहता था कि आखिर कब उसके और उसकी माताजी के जीवन में अच्छे दिन आएंगे। एक दिन उसे समाचार प्राप्त हुआ कि निकट के ग्राम में कोई जैन संत चातुर्मास हेतु विराजित हैं। संत बड़े दयालु प्रकृति के हैं। लोगों का दुःख-दर्द सहानूभूतिपूर्वक सुनते हैं और उनके धर्मलाभ प्रदान करने से मनोवांछित कामनाएं पूर्ण होती हैं।

लड़का अपनी माताजी को भी जैन संत के बारे में बताते हुए निकट के ग्राम में जाने हेतु आज्ञा मांगता है। माता अपने पुत्र को सावधानी से यात्रा करने का निर्देश कर शुभआशीष के साथ बिदाई देती है। उन दिनों में आवागमन के साधन सुलभ नहीं थे। लड़का पैदल ही यात्रा पर प्रस्थान कर देता है। रास्ते में एक स्थान पर विश्राम हेतु रुकता है। एक घर से पीने हेतु पानी की मांग करने पर उसे पानी प्राप्त हो जाता है। जिस व्यक्ति के यहाँ वह पानी पीता है, वह व्यक्ति यात्रा का प्रयोजन पूछता है। लड़का विस्तार से सारी बातें बताता है। चर्चा में वह व्यक्ति भी लड़के को अपनी समस्या का वर्णन कर जैन संत से उसकी समस्या का निदान पूछकर आने का अनुरोध करता है। उस व्यक्ति की समस्या यह थी कि उसकी एकमात्र लड़की बोल नहीं सकती थी। वह गूंगी थी।

वह लड़का अपनी यात्रा पर आगे प्रस्थान करता है। आगे थकान एवं धूप के कारण पुनः एक वृक्ष के नीचे थोड़ी देर विश्राम के लिए रुकता है। उस वृक्ष के नीचे ही एक साधु तपश्चर्यारत थे। साधु महाराज ने भी उस लड़के से यात्रा का उद्देश्य पूछा। लड़के ने पूर्वानुसार अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी। साधु महाराज भी उस लड़के को अपनी एक समस्या से अवगत कराते हुए उसका निदान करने की प्रार्थना करते हैं। साधु महाराज की समस्या यह थी कि वृक्ष के नीचे बैठकर ईश्वर का ध्यान करने में उनका मन पूर्णरूप से लगता नहीं था। मन को स्थिर करने का उपाय वे जैन संत से पूछकर आने की विनय लड़के से करते हैं।

लड़का पुनः अपने गंतव्य की ओर बढ़ जाता है। रास्ते में घना जंगल होने व सांझ होने से एक किसान के यहाँ रात्रि विश्राम का निर्णय करता है। किसान उस लड़के को भोजन करने को कहता है। रात्रि विश्राम के पश्चात् और प्रातः प्रस्थान के पूर्व किसान भी यात्रा का प्रयोजन जानना चाहता है। लड़का पुनः वर्णन कर देता है। किसान भी उसे अपनी समस्या बता कर उसका हल पूछने हेतु निवेदन करता है। किसान की समस्या यह थी कि उसने अपने खेत में नारियल के जो पेड़ लगाए थे, उन पर फल नहीं आते थे। लड़के ने समस्या का हल जैन संत से पूछकर वापस लौटते हुए बताने का आश्वासन दिया और मार्ग पर आगे बढ़ गया। आखिरकार चलते-चलते उस

स्थान पर पहुंच जाता है जहाँ जैन संत विराजित थे। वह दर्शन-वंदन को अत्यन्त लालायित था।

जैन संत के व्याख्यान के उपरान्त यह उद्घोषणा की गई कि आज जो भी व्यक्ति, श्रावक, श्राविका अपने प्रश्नों के उत्तर जानना चाहते हैं वे तीन प्रश्न सोचकर अपना नंबर आने की प्रतीक्षा करें। उक्त घोषणा से लड़का चिंतित हो गया। अपने प्रवास के दौरान मिली तीन समस्याओं के उत्तर यदि प्राप्त करे तो ऐसे में स्वयं के प्रश्नों का क्या होगा? उसके उत्तर कैसे प्राप्त होंगे। यहाँ आना उसे निरर्थक प्रतीत होने लगा। उसके मस्तिष्क में ये विचार भी कौंध रहे थे कि यदि मार्ग में मिले प्रश्नों का समाधान नहीं हुआ तो वापसी में उन लोगों को क्या जवाब दूँगा। लड़के ने निर्णय लिया कि जिन्हें वह वचन देकर आया था उनके प्रश्नों का उत्तर वह अवश्य पूछेगा। खैर, उस दृढ़प्रतिज्ञ लड़के ने स्वयं के प्रश्नों को एक तरफ रखकर जैन संत से उन तीन प्रश्नों के उत्तर जानना चाहे जो प्रवास के दौरान तीन अलग-अलग व्यक्तियों ने जानने चाहे थे।

जैन संत ने तीनों प्रश्नों के उत्तर क्रम से दिए। पहले प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि उस व्यक्ति की लड़की जो गूंगी है वह किसी दिव्य पुरुष के दर्शन पर पुनः वाचाल हो जाएगी। दूसरे प्रश्न के उत्तर में जैन संत ने कहा कि जिस वृक्ष के नीचे बैठकर संत तपस्या कर रहे हैं वहाँ जड़ों की गहराई में हीरे-जवाहरात, पन्नादि गढ़े हुए हैं। उन्हें जब तक खोदकर बाहर नहीं निकालेंगे, संत का ध्यान लगना संभव नहीं है। तीसरे क्रम के प्रश्न पर यह प्रकट किया कि नारियल के पेड़ की जड़ों में पुराने सिक्कों से भरे हुए घड़े स्थित हैं। इन्हें निकालने के पश्चात् ही वृक्षों पर फल लगना प्रारंभ होंगे।

जैन संत से धर्मलाभ एवं सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर वह लड़का पुनः अपने गांव की ओर लौटने लगा। लड़के ने गांव लौटने के दौरान पुनः सभी व्यक्तियों से क्रमानुसार भेंट की और उन्हें उनकी समस्याओं का समाधान जैन संत के अनुसार बताया। सभी ने खुश होकर प्राप्त धन का आधा हिस्सा उसे सहर्ष प्रदान कर उसे विदा किया। लड़के की निर्धनता से छुटकारे की समस्या और अच्छे दिन की आशा स्वतः ही दूर हो गई थी। यह उसके परमार्थ/परहित का प्रतिफल था।

## औषधि

हंसना एक औषधि है। बिना पैसे मिली इस औषधि से चेहरे की एक्सरसाईज भी अच्छी हो जाती है और इसके कोई साईड इफेक्ट्स भी नहीं हैं। संभवतया लड़कियों की खुबसूरती का राज भी यही है कि वे लड़कों, पुरुषों की तुलना में ज्यादा हंसती हैं। हंसी शारीरिक दर्द और मानसिक कुंठाओं के लिए पेन किलर की तरह काम करती है। अब एक नई थैरपी लाफ्टर थैरपी के रूप में विकसित हो रही है और महानगरों में बाकायदा लॉफ्टर क्लब भी चल रहे हैं। हंसने की एक विशेषता यह है कि हंसी संक्रामक होती है। आसपास के लोगों को देख आप भी हंसने लगते हैं। विटामिन की गोलियां यदि असर नहीं कर रही हैं तो हंसिए। पहचान बनानी है तो मुस्कराईए। जिंदादिल से जीना है तो भी - 'प्लीज कीप इस्माईल'।

# शास्त्राभ्यास की यथार्थता

(श्री शान्तिलाल सगरावत, मन्दसौर)

देव-गुरु-धर्म इनमें वात्सल्य अर्थात् प्रीतिभाव ही प्रवचन कहलाता है।

परमागम के अभ्यास के बिना हमारा जो समय व्यतीत होता है, वह वृथा है। शास्त्र अभ्यास में लगा समय ही धन्य है। स्वाध्याय बिना शुभ ध्यान नहीं होता है। शास्त्राध्ययन के बिना संसार, भोग, शरीर के प्रति वैराग्य उत्पन्न नहीं होता, पाप नहीं छूटते, कषायों में मंदता नहीं आती है। परमार्थ का विचार और व्यवहार में उज्ज्वलता शास्त्र सेवन से ही होती है। श्रुत के सेवन से जगत में मान्यता, उच्चता, उज्ज्वल यश, आदर, सत्कार प्राप्त होता है। सम्यग् ज्ञान ही परम बंधु-बांधव है, उत्कृष्ट अविनाशी धन है, परम प्रिय मित्र है। स्वदेश में, परदेश में, सुख या दुःख में सम्यग्ज्ञान परम शरणभूत है।

शास्त्रों के अर्थ का नित सेवन कर, आत्मा को नित्य ज्ञान दान करें। अपनी संतान और शिष्यों को ज्ञान प्रदान करें। ज्ञान दान के समान अन्य कोई दान नहीं। धन तो केवल मद उत्पन्न करता है, विषयों में उलझाता है, दुर्ध्यान करवाता है।

ऐसे ज्ञान का दान करने वाले गुरु के उपकार का जो लोप करता है, उसके समान कृतघ्नी दूसरा नहीं है। प्रवचन के सेवन के बिना मनुष्य पशु के समान है। जो शास्त्रों को अनुराग से पढ़ते हैं, शास्त्र के अर्थ को स्वयं जानकर अन्य को बताते हैं, पढ़ने वालों को शास्त्र उपलब्ध करवाते हैं, व्याख्यान करते हैं, करवाते हैं, पढ़ने वालों-वाचन करने वालों की आजीविका स्थिर कर उन्हें शास्त्रों के ज्ञानाभ्यास का प्रवर्तन कराते हैं, स्वाध्याय हेतु स्थान देते हैं, वह ज्ञानावरण कर्म का नाश करने वाली बहुश्रुत भक्ति है।

ऐसा उपदेश करना जिससे देहादि पर द्रव्यों से भिन्न अपनी आत्मा का अनुभव हो जाए। संसार, शरीर, भोगों से वैराग्य उत्पन्न हो। मिथ्या अंधकार दूर हो जाए। ऐसे आगम के व्याख्यान से सन्मार्ग की प्रभावना होती है। शास्त्राभ्यास से कषायों की मंदता, पंचेन्द्रिय विषयों की प्रवृत्ति में रोक, चंचल मन में एकाग्रता, हिंसादि पापों पर रोक, त्रिलोकी चराचर पदार्थों की जानकारी, हेय-उपादेय की पहचान, आत्मज्ञान से सामुख्य आनन्द की उत्पत्ति, लोक में यश, अतिशय पुण्यबंध होता है।

## जानिये

| | | | |
|---|---|---|---|
| चौथे आरे में जन्मे पाँचवे आरे में मोक्ष जाने वाले- | 1. गौतम स्वामी | 2. सुधर्मा स्वामी | 3. जंबूस्वामी |
| वृक्ष तीन प्रकार के- | 1. पत्तों वाले | 2. पुष्प वाले | 3. फल वाले |
| आत्मा के तीन रूप- | 1. बहिरात्मा | 2. अन्तर्आत्मा | 3. परमात्मा |

# गुणों की खान है-गुड़

(श्री अचलचंद जैन , सायला जि. जालौर)

प्राचीन काल से ही गुड़ का उपयोग मांगलिक कार्यों में प्रमुखता से किया जाता रहा है। शुभ कार्य करने से पूर्व गुड़ और धाना खाने का रिवाज है। गणेश पूजा में गुड़ तथा नारियल का प्रसाद चढ़ाया जाता है। किसी भी कार्य की सफलता को सुनिश्चित करने और आशंका को टालने के लिए गुड़ की डली को खाना उत्तम माना जाता है। विवाह एवं अन्य शुभ अवसरों पर बनाई जाने वाली 'लापसी' को मांगलिक माना गया है जो गुड़ से ही बनाई जाती है। मांगलिक कार्यों में उपयोग के कारण अक्षय तृतीया के दिन मंदिरों में गुड़ चढ़ाया जाता है। इसी दिन घरों में गुड़ की राब बनाकर पी जाती है। अक्षय तृतीया के दिन ही गन्ने के रस से वर्षीतप के तपस्वियों को पारणे करवाये जाते हैं। गुड़ भी गन्ने के रस से ही बनता है। वास्तव में शरीर को स्वस्थ रखने में संजीवनी बूटी की तरह गुड़ बेहद उपयोगी है। हकीकत में गुड़ मिठाई वर्ग का अनमोल रतन एवं पौष्टिक तत्त्वों का खजाना है।

खाने के पश्चात् गुड़ की एक डली खाने से खाना पचाने में मदद मिलती है। मेहनत का काम करने वाले लोग शक्कर की बजाए गुड़ खाना ज्यादा पसंद करते हैं, क्योंकि इससे शक्ति और ताजगी मिलती है। शक्तिवर्द्धक होने से सर्दियों में गुड़ और तिल के लड्डू का प्रयोग प्रचलित है। खासतौर से मकर संक्रान्ति (14 जनवरी) के दिन इसका विशेष उपयोग किया जाता है। इस दिन गुड़ और तिल के लड्डू दान में देने की भी परम्परा है। दान देने वाले को पुण्य लाभ और दान प्राप्त करने वाले को स्वास्थ्य लाभ मिलता है। सर्दियों में बाजरे की रोटी, गुड़ और घी के साथ बहुत ही चाव से खायी जाती है।

आयुर्वेद के अनुसार गुड़ खांसी, कमजोरी, पीलिया के निवारण तथा खून में वृद्धि करने में बहुत उपयोगी है। खांसी की तकलीफ होने पर सोंठ के साथ गुड़ को कूट-पीसकर गोलियाँ बनाई जाती हैं। इन्हें सोते वक्त 3 दिन तक लगातार चूसने से खांसी ठीक हो जाती है। गुड़ त्रिदोषनाशक एवं मल-मूत्र दोष हरने वाला है। गुड़ को पानी में घोलकर प्रातः भूखे पेट यदि एक गिलास गुड़ का पानी पीया जाए तो कब्ज से राहत मिलती है।

गुड़ के बारे में यह भ्रम फैला हुआ है कि इसका सेवन करने से पेट में कीड़े हो जाते हैं। यह भ्रम गलत है। इतना जरूर है कि गुड़ की तासीर गर्म है अतः गुड़ का अधिक सेवन करने से आँखों में दर्द, सूजन, नकसीर (नाक से खून बहना) जैसी समस्या शुरू हो सकती है। इसके लिए तो यही कहा जा सकता है कि किसी भी चीज की अति बुरी ही होती है। अतः संतुलित उपयोग करें।

गुड़ में पौष्टिकता के सारे गुण मौजूद हैं। गुड़ में कैल्सियम, फास्फोरस, लोहा अच्छी मात्रा में होता है। ग्लूकोज रूप होने से यह जल्दी पच जाता है।

# कहाँ से कहाँ तक

–डॉ. इंदुश्री जैन

अफगानिस्तान, अरबस्तान से आगे ग्रीस देश तक धर्म-ध्वजा को फहराने, जैनों की संख्या चालीस करोड़ तक पहुंचाने का शासनोन्नति का कार्य राजा भूपति ने किया।

भगवान ऋषभदेव एक बार राजधानी तक्षशिला नगरी के बाहर के उद्यान में शाम के समय कायोत्सर्ग ध्यान में लीन थे। उद्यान पालक ने प्रभु के आगमन की सूचना बाहुबली राजा तक पहुंचायी। बाहुबली राजा ने प्रातःकाल वंदन करने जाने का निश्चय किया। इधर प्रातःकाल होते ही प्रभु वहाँ से अन्यत्र स्थल के लिए विहार कर गए। बाहुबली प्रातः सपरिवार प्रभुवंदन के लिए जब उद्यान पहुंचे, वहाँ प्रभु को न पाकर अत्यन्त दुखी हुए। वह जोरों से चिल्लाते हुए, आवाज लगाकर उन्हें पुकारने लगे।

अन्त में उद्यान में भगवान जहाँ खड़े थे, वहाँ रत्नों का चबूतरा बनाकर उस स्थल पर ऋषभदेवजी के चरण स्थापित किए। आगे चलकर ये स्थल धर्मचक्र तीर्थ नाम से प्रसिद्ध हुआ। समय के साथ प्रदेश पर मुसलमानों-यवनों का अधिकार हुआ। आर्यत्व नष्ट हुआ। कालान्तर में तक्षशिला का नाम बदल कर 'गिजनी' और धर्मचक्र तीर्थ का नाम बदलकर 'मक्का मदीना' तय किया। मुस्लिम समुदाय की धार्मिक यात्रा हज के लिए अनुयायी जहाँ जाते हैं, वहाँ बाबा आदम (आदिनाथजी) के चरण स्थापित हैं। ऐसा आदिनाथ चरित्र और कल्पसूत्र टीका आदि ग्रन्थों में उल्लेखित है। प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है। उक्त स्थल भी परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजरे हैं।

प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय वालों के पास मक्का-मदीना में स्थित ज्योति स्वरूप शिवलिंग का आकार चित्र है, जिसे प्रदर्शनी में चार्ट रूप में जनसामान्य के दर्शनार्थ रखा जाता है।

## चिन्तन कण

* थोड़ी सी भी बेपरवाही अच्छी नहीं है। थोड़े-से दोष से बहुत बड़े दोष उत्पन्न हो सकते हैं। * इन्द्रियों के वशीभूत होना अर्थात् प्रमाद को आमंत्रित करना। * नीरस आहार भी जीवन यात्रा को निर्वाह में समर्थ है। शरीर को चलाने के लिए न आहार की सरसता सहायता है और न नीरसता बाधक है। * इन्द्रियों विषयों के वशीभूत नहीं होना ही प्रमाद-जय है। * तू फोटू पर क्यों ललचाया। यह है पुद्गल की माया। * परम्पराओं, रूढियों एवं अंध विश्वासों तथा साम्प्रदायिक घेरों की दीवारें उन्हीं विचारधाराओं को आगे नहीं बढ़ने देती, जिनकी चेतना शक्ति नष्ट हो गई है, जिनके चिंतन में प्राण नहीं है, विचारों में तेजस्विता नहीं है और जिसके व्यक्तित्व में ओजतेज नहीं हैं।

# जैन धर्म और चित्तौड़गढ़ के इतिहास पर श्रेष्ठ पुस्तक

डॉ.दिलीप धींग

मेवाड़ आरम्भ से ही जैन धर्म की गतिविधियों का केन्द्र रहा है। चित्तौड़गढ़ का भी जैन धर्म, दर्शन, साहित्य, संस्कृति, इतिहास और पुरातत्त्व से गहरा नाता रहा है। काल के प्रवाह और प्रभाव में काफी कुछ खो जाने और उपेक्षित होने के उपरान्त भी चित्तौड़गढ़ का अतीत और वर्तमान जैन धर्म और चित्तौड़गढ़ के प्रगाढ़ ऐतिहासिक सम्बन्धों को सम्पूर्ण गौरवरूप में प्रचुर प्रमाणों के साथ उजागर करते प्रतीत होते हैं। जैन धर्म और चित्तौड़गढ़ के जीवंत चिर सम्बन्धों को दर्शाने वाले विपुल और विविध साक्ष्य भविष्य में भी सबको प्रभावित एवं प्रेरित करते रहेंगे। प्रोफेसर डॉ.ए.एल.जैन की पुस्तक 'अतुल्य जैन धर्म एवं गढ़ चित्तौड़' ऐसी ही प्रामाणिक पुस्तक है, जो जैन धर्म और चित्तौड़गढ़ के संबंधों को ससंदर्भ अतीत और आज से जोड़ती हुई आने वाले कल के लिए प्रत्यक्ष -परोक्ष अनमोल मार्गदर्शन प्रदान करने वाली है। जैन धर्म और चित्तौड़गढ़ के संबंधों की सारगर्भित और प्रामाणिक जानकारी देने वाली यह सचित्र, बहुरंगी व आकर्षक पुस्तक एक ऐतिहासिक दस्तावेज का रूप ले चुकी है।

शताधिक पृष्ठों की इस पुस्तक में प्रकाशित सामग्री के साथ मन्दिरों, मूर्तियों, स्तम्भों, अभिलेखों, शिलालेखों आदि के जरूरत के मुताबिक साफ-सुथरे, नये व पुराने (दुर्लभ) चित्र सम्मिलित किए गए हैं। संदर्भ सहित साहित्यिक, ऐतिहासिक और पुरातात्विक साक्ष्य दिए गए हैं। चित्तौड़गढ़ का संक्षिप्त इतिहास पर परिशिष्ट दिया गया है। लेखक ने अनेक अभिनव, उपयोगी और प्रामाणिक तथ्यों को पुस्तक में समाविष्ट किया है। रोचक और ऐतिहासिक तथ्यों के अन्तर्गत 74 ऐसे तथ्य हैं जो थोड़े में बहुत कुछ कह देते हैं।

श्री जैन श्वेताम्बर सातबीस देवरी किला तीर्थ ट्रस्ट, चित्तौड़गढ़ (राज.) के इस प्रथम प्रकाशन की इतिहास व साहित्य मनीषियों, सन्तों, प्रशासनिक व्यक्तियों ने हार्दिक अनुमोदना की है।

* अन्न का भूखा तो एक सूखी रोटी से भी तृप्त हो सकता है, लेकिन धन का भूखा दुनियाभर की सम्पत्ति पाने पर भी तृप्त नहीं होगा ।
* पड़ोसी से प्रेम करने वाला विपत्ति में भी सुखी रहता है, जबकि पड़ोसी से बैर रखने वाला सम्पत्ति होने पर भी दुःख हो जाता है ।

## गुरु म्हारा हैये वस्यां

पुस्तक का नाम- 'गुरु म्हारा हैये वस्यां'। लेखक- मुमुक्षु रिमलबेन सेठ। सहयोगी- मोक्षालीबेन सेठ। मुद्रक- मल्टी ग्राफिक्स, मुम्बई। पृष्ठ संख्या- 56। कव्हर, छपाई, सफाई -उत्तम (पूरी आर्ट पेपर पर)। भाषा -गुजराती।

शिष्य के लिए गुरु सर्वस्व है, वे उसके तारणहार हैं, उसकी आत्मशक्ति को परिमार्जित करने में सक्षम हैं। एक मुमुक्षु, गुरु के चरणों में पूर्णतः समर्पित होकर अपने जीवन के संयम भाव को प्रबल बनाते हुए उसे जीवन में उन्नत परिवर्तन के शिखर तक पहुँचाता है।गच्छाधिपति गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के 79 वें जन्म दिवस पर प्रकाशित इस संग्रहणीय व पठन योग्य पुस्तक में एक मुमुक्षु आत्मा का गुरु के प्रति उद्‌गारों का संग्रह है। इससे लगता है कि गुरु की श्रद्धा को अपने हृदय में स्थापित करना अमृतधारा को प्रवाहित करना है। यह पुस्तक प्रभावना में वितरण तथा प्रत्येक आत्मार्थी के अध्ययन के लिए उत्तम निमित्त है।

## परम तत्व की साधना भाग-2

पुस्तक का नाम - 'परम तत्व की साधना (भाग 2)'। लेखक- पूज्यपाद पन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य। संपादक (हिंदी)- पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजयरत्नसेन सूरीश्वरजी महा.। प्रकाशक- दिव्य संदेश प्रकाशन, मुम्बई। प्राप्ति स्थल- चंदन एजेन्सी, 607, चीरा बाजार, ग्राऊंड फ्लोर, मुम्बई-400002, मोबा. 9820303451, मूल्य-रु.150/-, पृष्ठ 292, कव्हर-छपाई-सफाई-उत्तम।

देवदर्शन तथा परमात्मा की पूजन पर आधारित यह ग्रन्थ आत्मोन्नति की दिशा में अग्रसर साधकों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसके अध्ययन से उन्हें अरिहन्त परमात्मा के स्वरूप, उनके उपकार, प्रतिमा की उपादेयता, उसके महात्म्य तथा शास्त्रीय प्रामाणिकता का भलीप्रकार दर्शन बोध होता है। वे सन्मार्ग की ओर उन्मुख होते हैं। ग्रन्थ उनकी साधना में सार्थकता की भूमिका तैयार करने में सक्षम है। प्रत्येक परिवार को इसका अध्ययन करना चाहिए।

-सुरेन्द्र लोढ़ा

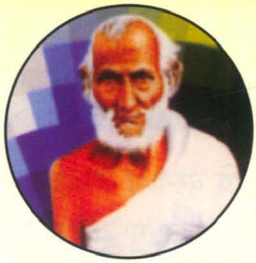

# ગુર્જર જૈન જયોત

સંપર્ક-સંપાદક : **સુરેશ એચ. સંઘવી**
૧૦૬, શિવશક્તિ, એ.બી.સી. ટાવર, દેવ ચકલા,
જૈન દેરાસર સામે, નડીઆદ. જી. ખેડા.
મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯


## શ્રી પેપરાલ તીર્થ...

જંગલમાં મંગલ... મંગલમાં ફર્યું પાણી
ઓસર્યું પાણી ફરી થયું મંગલ...
શ્રી નવકાર મંત્રથી મંગલ એવું થયું કે
નવ્વાણું સુધી થયું જય મંગલ...
જયંતસેને પગલાં કર્યાં ત્યાં થયું અતિ મંગલ...
અંતમાં વિદાય લઈ સહુને રડાવી ગયા જયંતસેન

લિ. કલાબેન રમેશકુમાર વોહેરા
નડીઆદ

તમે એક એવું ઘર બનાવો કે જ્યાં
ઈંટ, પથ્થર અને ચુનાના બદલે સ્નેહની
દિવાલો હોય, હુંફનું ચણતર હોય,
પ્રેમનો પાયો હોય, મમતાનું છાપરૂં હોય અને
સહાનુભૂતિ-કરૂણતાના બારી બારણા હોય
એને તાળા મારવાની જરૂર જ ન પડે !

## અહો આશ્ચર્યમ્.... સન–૨૦૧૫–૨૦૧૬

જૈન જગતના નભ મંડળના ચમકતા સિતારા તુલ્ય શાસનના શિરતાજ, ગચ્છ પ્રગતિના ઉતુંગ શિખરો સર કરનાર સમર્થ, યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પ્રેરણાત્મક વાણી દ્વારા અશક્ય જણાતા કાર્યો શક્ય બની જાય છે. પૂજ્યશ્રીની માર્મિક વાણીથી પ્રેરાઈ શ્રધ્ધાવંત ભક્તોએ વિક્રમસર્જક તપ આરાધનાઓ કરી છે અને કરવા જઈ રહ્યા છે. એવો જ શ્રધ્ધાનો સૂરજ દીન પ્રતિદિન શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયમાં ઝગારા મારી રહ્યો છે. સન–૨૦૧૫ અને સન ૨૦૧૬ નું વર્ષ નાદુરસ્ત તબિયત હોવા છતાં પૂજ્યશ્રીનો પ્રભાવ અ..હો આશ્ચર્યમ્ નિવડ્યો છે.

### ૨૦૧૫–૨૦૧૬ ના વિક્રમસર્જક શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમોની ઝલક

### ૨૦૧૫

- ૨૩ જાન્યુઆરી – પૂજ્યશ્રીનો સંયોમોત્સવ – બિજાપુર
- ૨૫ જાન્યુઆરી – દીક્ષામહોત્સવ – બિજાપુર
- ૨૬ જન્યુઆરી – શ્રી સંભવનાથ ભગવાન પ્રતિષ્ઠા – બિજાપુર
- ૨૦ ફેબ્રુઆરી – શ્રી પાર્શ્વનાથ ભગવાન પ્રતિષ્ઠા – દ્રવણગિરી
- ૧૮ માર્ચ – શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી પ્રતિષ્ઠા –બાઈ
- ૨૭ માર્ચથી – નવપદજી ઓળી પ્રારંભ – પુના
  મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન – પુના
- ૪ એપ્રિલ – ચાતુર્માસ ઘોષણા – પુના
- ૮ એપ્રિલ – શ્રી મુનિસુવ્રત સ્વામી પ્રતિષ્ઠા – પુના
- ૨૪/૨૫ એપ્રિલ – ૨ દીક્ષા – શ્રી મુનિસુવ્રત સ્વામી પ્રતિષ્ઠા –મીરા રોડ
- ૧૬ થી ૨૫ મે – મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયત – ૨ – સુરત
- ૨૭ મે – વિક્રમસર્જક ૧૨ દીક્ષા – સુરત
- ૧૧ જુન – અમદાવાદ ભવ્ય પ્રવેશ – સંઘ એકતા – અમદાવાદ
- ૧૨ જુન – મોટેરા પ્રતિષ્ઠા – મોટેરા
- ૧૩ જુન – ૪ દીક્ષા – મોટેરા
- જુન – શ્રી નવકારાપાર્શ્વનાથ છત્રાલ – છત્રાલ
  મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન – ૩ – છત્રાલ
- ૧૨ જુલાઈ – ગુજરાત પ્રદેશ દ્વિતિય સંમેલન – ડીસા
- ૨૨ જુલાઈ – ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ પ્રવેશ – શ્રી પેપરાલતીર્થ

- २१/३० ओगष्ट - श्री नवकार मंत्र आराधना - श्री पेपराल तीर्थ
- १८ सप्टेम्बर - पर्युषण पर्व उजवणी पारणा - श्री पेपराल तीर्थ
- २३/२५ सप्टेम्बर - उपधानतप प्रारंभ - श्री पेपराल तीर्थ
- ८ नवेम्बर - उपधान तप ना ४४० आराधकोनो - श्री पेपराल तीर्थ
  माळा रोपण कार्यक्रम संपन्न
- ११ नवेम्बर - श्री महावीर स्वामी निर्वाण उजवणी श्री पेपराल तीर्थ
- १२ नवेम्बर - श्री गौतमस्वामी केवाळज्ञान - छंद - श्री पेपराल तीर्थ
  अने पूज्यश्रीना मुखकमळ द्वारा मांगलिक
- २१ नवेम्बर - श्री तरुण परिषद अधिवेशन - श्री पेपराल तीर्थ
- २२ नवेम्बर - अ.भा. श्री राजेन्द्रजैन नवयुवक / - श्री पेपराल तीर्थ
  महिला परिषद वार्षिक संमेलन
- २५ नवेम्बर - चातुर्मास परिवर्तन - लवाणा
- २७ नवेम्बरथी - थरादथी शंखेश्वरतीर्थ छरीपालक संघ-
  लाभार्थी-भणसाळी मणीलाल जीतमलभाई परिवार
- १४ डीसेम्बर - वल्लभीपुर थी शत्रुंजय तीर्थनो ऐतिहासिक
  छ'री पालक संघ
  लाभार्थी : मथुरीबेन नरपतलाल छोटालाल परिवार
- १७ डीसेम्बरथी - झाझरमान नव्वाणु यात्रानो प्रारंभ
  लाभार्थी : दोशी लल्लुभाई जेचंदभाई परिवार
- २३ डीसेम्बरथी - अयोध्यापुरमथी शत्रुंजय तीर्थनो छ'री पालक संघ
  लाभार्थी : सवितादेवी सोहनराज वाणीगोता परिवार

**२०१६**

- ४/५ जान्युआरी - चौविहार छठ साथे सात यात्रा श्री शत्रुंजयतीर्थ
  लाभार्थी : पारा निवासी वालीबेन सागरमल परिवार
- १३ जान्युआरीथी - श्री गिरनार - शत्रुंजयतीर्थ संघ यात्रा
  लाभार्थी : वोहेरा कांताबेन चंदुलाल मफतलाल परिवार
- १७ जान्युआरी - नव्वाणु अने संघपति परिवार तेमज तपस्वीओनो
  बहुमान - माळा रोपण कार्यक्रम संपन्न

## ઈતિહાસ રચીત યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની પાવન નિશ્રામાં...

## થરાદ નિવાસી દોશી લલ્લુભાઈ જેચંદભાઈ પરિવાર દ્વારા આયોજિત શ્રી શત્રુંજય તીર્થની ધન્યધરા પર નવ્વાણુ યાત્રા પૂર્ણતાના આરે

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના જ નહીં પણ ભારતીય સંસ્કૃતિના આધારસ્થંભ, સમગ્ર ભારતીય જૈન સમાજ અને જૈનેતરોમાં જેમનો પ્રભાવ પથરાઈ રહ્યો છે. જેઓશ્રીના વ્યક્તિત્વની પ્રભાવકતા સમગ્ર ભારતીય સંસ્કૃતિની આન-બાન-શાન અને ગરિમામાં વધારો કરે છે. જેઓશ્રીએ ગુજરાત, મધ્યપ્રદેશ, રાજસ્થાન અને દક્ષિણ ભારતમાં અનેક જૈન મંદિરો, ઉપાશ્રયો, ગુરૂ મંદિરો, સ્કુલો, દવાખાના જેવી વિરાટ સેવાકીય, ધાર્મિક અને માનવતાવાદી પ્રવૃતિઓ દ્વારા સમાજમાં નવચેતના લાવી છે. સમાજપયોગી કાર્યોદ્વારા આર્થિક રીતે સામાન્ય સ્થિતિ ધરાવતા પરિવારોને મદદરૂપ બની તેમની જરૂરિયાત પુરી પાડવાનું ભગીરથ કાર્ય કર્યું છે. દેશના ટોચના રાજકીય નેતાઓથી લઈ અગ્રણી ઉદ્યોગપતિઓ, સમાજના શ્રેષ્ઠીઓ જેઓશ્રીના આશિર્વાદ પ્રાપ્ત કરી આર્થિક, રાજકીય, સામાજિક અને ધર્મક્ષેત્રે અગ્રેસર બન્યા છે તેવા ઈતિહાસ રચીત, યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., સપરિવારની પાવન નિશ્રામાં થરાદ નિવાસી દોશી લલ્લુભાઈ જેચંદભાઈ પરિવાર દ્વારા આયોજિત શ્રી શત્રુંજય તીર્થની ધન્યધરા પર ભવ્યાતિભવ્ય નવ્વાણુ યાત્રા પૂર્ણતાના આરે થવા જઈ રહી છે.

સંવત ૨૦૭૨ ના માગસર સુદ-૬ ને ગુરૂવાર તા. ૧૭-૧૨-૨૦૧૫ ના રોજથી ઉલ્લાસભર્યા માહોલમાં પ્રારંભાયેલા ઈતિહાસ સર્જક આ નવ્વાણુ યાત્રામાં ૧૬૦૦ થી અધિક યાત્રિકો જોડાયા હતા. નવ્વાણુ યાત્રાના પ્રારંભ થી જ શ્રી શત્રુંજય તીર્થ (પાલીતાણા) ખાતે શ્રી સકળ સંઘમાં અભૂતપૂર્વ ભાવોલ્લાસનું વાતાવરણ છવાઈ ગયું હતું.

શ્રી યતિન્દ્રભવન ધર્મશાળા સહિત અન્ય ધર્મશાળાઓમાં યાત્રિકોને રહેવાની સગવડ કરવામાં આવી હતી.

દરેક ધર્મશાળાઓને અદ્‌ભુત રીતે શણગારી ઈન્દ્રપુરી જેવો ઓપ અપાયો હતો. દોશી લલ્લુભાઈ જેચંદભાઈ પરિવારનું સૌભાગ્ય એ રહ્યું હતું કે નવ્વાણુ યાત્રા દરમ્યાન પૂજ્યશ્રીની પાવન નિશ્રામાં યોજાયેલા છ'રી પાલક યાત્રા સંઘો તેમજ પૂજ્યશ્રીના ભવ્યાતિભવ્ય ઉષ્માભર્યા સામૈયા સ્વાગતનો અદકેરો લાભ પ્રાપ્ત થયો હતો. યાત્રિકો અને મહેમાનો માટે એકાસણા બિયાસણા અને છુટ્ટુ જમવા માટેની ઉત્તમ સગવડ કરવામાં આવી હતી.

ઈતિહાસ સર્જક નવ્વાણુ યાત્રા પૂર્ણતાના આરે આવી પહોંચતા પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં તા. ૧૭-૧-૨૦૧૬ ના રોજ સંઘ પતિનાના બહુમાન સાથે માળા રોપણ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો અને રાત્રે યાત્રિકોનો માળા રોપણ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. આયોજક પરિવાર દ્વારા શ્રી યતિન્દ્ર ભવનના પ્રાંગણમાં ભવ્ય-દિવ્ય અને નવ્ય મંદિર તેમજ ગુફાની રચના કરાઈ હતી તે આકર્ષણનું કેન્દ્ર બની હતી. નવ્વાણુ યાત્રા દરમ્યાન અગિયાર વાર પૂજ્યશ્રી સાથે શ્રી શત્રુંજય ગિરીરાજ પર બિરાજમાન દાદાને ભેટવાના યાત્રિકોને મોટો લ્હાવો પ્રાપ્ત થયો હતો. નવ્વાણુ યાત્રા દરમ્યાન પાલીતાણા થરાદ બની ગયુ હતું. અંતમાં પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં યોજાયેલ આ નવ્વાણુ યાત્રા સુવર્ણ અક્ષરે લખવા યોગ્ય છે.

# શ્રી નિરંજનકલા શ્રીજી મ.સા. ની આશ્ચર્યજનક ૯૯ યાત્રા ૧૬ દિવસમાં... !!

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પાવન પ્રેરણા અને નિશ્રામાં થરાદ નિવાસી દોશી લલ્લુભાઈ જેચંદભાઈ પરિવાર દ્વારા આયોજિત શ્રી શત્રુંજય તીર્થાધિરાજ પાલીતાણા ખાતે ઐતિહાસિક નવ્વાણુ યાત્રા સંપન્ન થવા જઈ રહી છે જેમાં ૧૬૦૦ થી અધિક યાત્રિકો જોડાયા છે ત્યારે યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની આજ્ઞાનુવર્તી ની સ્વ. સાધ્વીજી શ્રી શશીકલાશ્રીજી મ.સા. ની સુશિષ્યા પૂજ્ય તપસ્વીરત્ના સાધ્વીજી શ્રી નિરંજનકલાશ્રીજી મ.સા. એ ૧૬ દિવસમાં ૯૯ યાત્રા સંપન્ન કરી આશ્ચર્ય સર્જી દીધું છે. પૂ. સાધ્વીજી શ્રી નિરંજન કલાશ્રીજી મ.સા. એ પ્રથમ છઠ્ઠ કરી ૧૧ યાત્રા બીજો છઠ્ઠ કરી ૧૨ યાત્રા, ત્રીજો છઠ્ઠ કરી ૧૩ યાત્રા, ચોથો છઠ્ઠ કરી ૧૩ યાત્રા, પાંચમો છઠ્ઠ કરી ૧૪ યાત્રા, પારણાના દિવસે અઠ્ઠમ કરી ૨૨ યાત્રા, આંયબિલ કરી ૩ યાત્રા, ચૌવિહાર છઠ્ઠ અને અઠ્ઠમ કરી ૮૮ યાત્રા તેમજ આંયબિલ કરી ૨૦ યાત્રા કુલ ૧૦૮ યાત્રા એટલે કે ૧૬ દિવસમાં ૯૯ યાત્રા સંપન્ન કરી તપસ્વી રત્નાએ આશ્ચર્યજનક સિધ્ધિ હાંસલ કરી છે જયારે પૂ. સાધ્વીજી શ્રી મૈત્રી કલાશ્રીજી મ.સા. એ ચૌવિહાર સાથે સાત યાત્રા કરી ૯૯ યાત્રા પૂર્ણ કરવા જઈ રહ્યાં છે શ્રી પેપરાલ તીર્થના ચાતુર્માસમાં સિધ્ધિતપની ઉગ્ર તપશ્ચર્યા પણ કરી હતી. પૂ. સાધ્વીજી શ્રી નિરંજન કલાશ્રીજી અને પૂ. સાધ્વીજી શ્રી મૈત્રા કલાશ્રીજી મ.સા. (દુધવા) થરાદ નિવાસી શ્રી રમણલાલ ચુનીલાલ વોહેરા તથા શ્રીમતી સવિતાબેન રમણલાલ વોહેરાની સંસારી સુપુત્રીઓ છે.

## શ્રી યતિન્દ્ર ભુવન ખાતે રચાયેલ ગુફાની તસ્વીરી ઝલક..

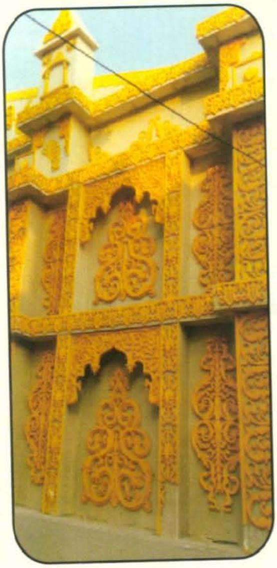

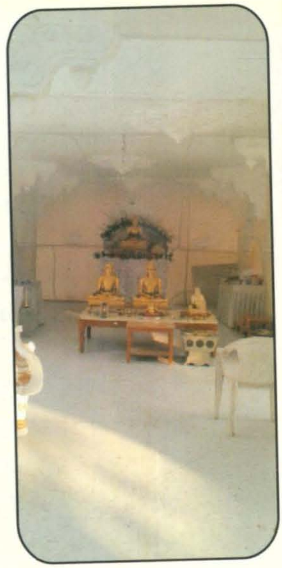

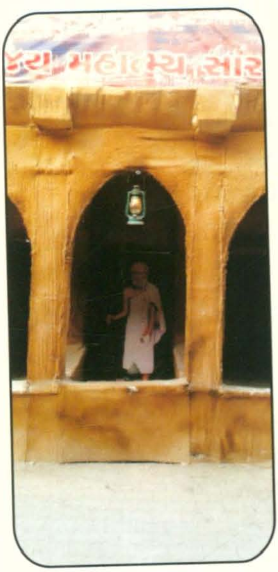

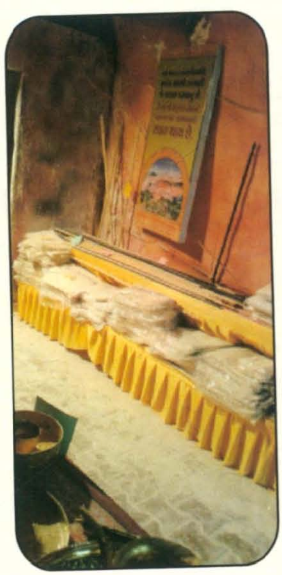

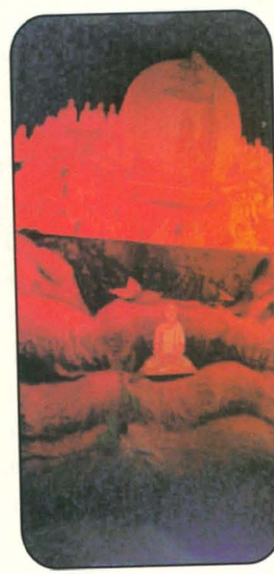

# શ્રી યતિન્દ્ર ભુવન ખાતે રચાયેલ ગુફાની તસ્વીરી ઝલક..

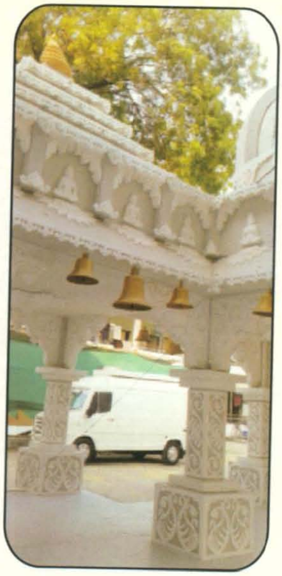

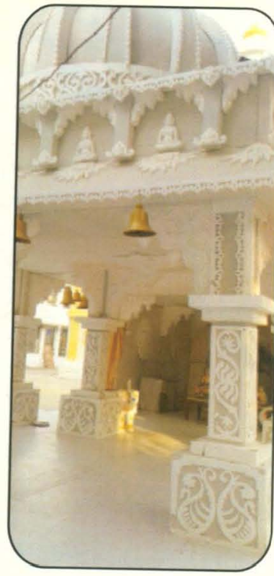

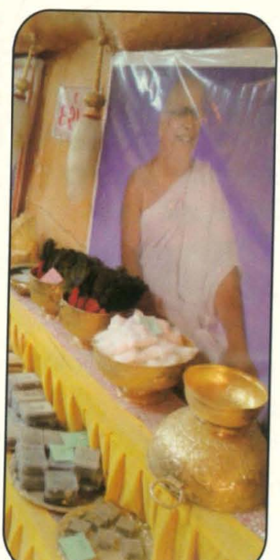

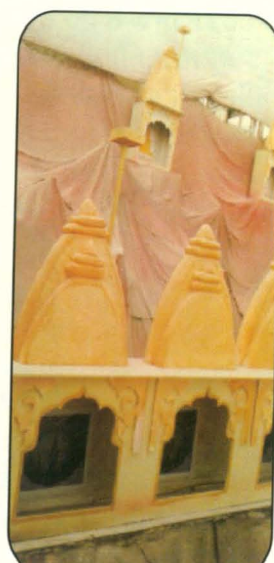

## પૂજ્યશ્રીની પ્રેરણાત્મક વાણીના પ્રભાવે...

## હૈયાંરૂપી હિમાલયમાંથી ઉદ્‌ભવેલ ગંગોત્રીરૂપ શુભ સંકલ્પને મૂર્તિમંત્ર કરી હજ્જારો હૈયાંને શાંતિનો અનુભવ કરાવી શ્રી ગિરનાર - શત્રુંજય સંઘ યાત્રા દ્વારા સૌભાગ્યનું તિલક ધારણ કરતો વોહેરા કાંતાબેન ચંદુલાલ મફતલાલ પરિવાર

**વોહેરા કાંતાબેન ચંદુલાલ મફતલાલ પરિવારની અનુમોદનીય સેવા ભક્તિ અને સંઘ ભક્તિ જોઈ આખો સમાજ અભિભૂત થઈ ગયો.**

**વોહેરા નાગરદાસ ઉજમશીભાઈ પરિવાર અને સમાજના નિષ્ઠાવાન કાર્યકરોના નમ્રતાપૂર્વકના વ્યવહારે સમાજજનોના દીલ જીતી લીધાં**

પોતાના પૂર્વજોની સાત પેઢીના ઈતિહાસને અજવાળતા અવસરના શુભ ચોઘડીયાં રણકતાં શ્રી પરમાત્માની અસીમ કૃપાથી, દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના દિવ્ય આશિષ, યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજયજયંત સેન સૂરિશ્વરજીની પ્રેરણા અને નિશ્રામાં પરિવારજનોના પુણ્યોદયે વડીલોના યોગ્ય માર્ગદર્શન અને સમાજજનોના ઉત્સાહના બળે મીઠડા સ્નેહના પ્રતિકરૂપે દુધવા નિવાસી (થરાદ) વોહેરા નાગરદાસ ઉજમસીભાઈ પરિવાર દ્વારા આયોજિત સમસ્ત થરાદ પંથક જૈન સમાજના યાત્રિકો માટે ચાર દિવસીય છ'રી પાલક સંઘ સહિત ગિરનાર-શત્રુંજય તીર્થ યાત્રાનું ભવ્યાતિભવ્ય આયોજન કરાયું હતું.

સંવત ૨૦૭૨ ના પોષ સુદ-૪ ને બુધવાર તા. ૧૩-૧-૨૦૧૬ ની રાત્રીએ એ અમદાવાદ, નડીઆદ, આણંદ, સુરત, નવસારી વિગેરે સ્થળોએથી (મુંબઈથી ટ્રેન દ્વારા) ૫૦૦૦ થી અધિક યાત્રિકોએ ગિરનાર તીર્થ જુનાગઢ તરફ જવા પ્રસ્થાન કર્યું હતું. જ્યારે તા. ૧૩ની સવારે દુધવાનગર થી વોહેરા પરિવારના સભ્યોએ ઉષ્માભેર વિદાય લઈ પ્રસ્થાન કર્યું હતું. ગિરનાર અને શત્રુંજય તીર્થે લઈ જવા લાવવા ૫૦૦૦ થી અધિક યાત્રિકો માટે ૨×૨ ૧૦૦ લકઝરી બસોની વ્યવસ્થા કરવામાં આવી હતી.

શ્રી થરાદ પંથક જૈન સમાજની એકતા માટેની પ્રખ્યાતિ પ્રથમથી જ રહેલી છે. ઉચ્ચ કોટીની ઉદારતા સાથે આ ભવ્ય આયોજનને ચાર ચાંદ લગાવાની વોહેરા કાંતાબેન ચંદુલાલ મફતલાલ પરિવારની ભાવનાને સાકાર કરવા અને અદ્‌ભુત સફળતા અપાવવા બોરીવલી-ભાયંદર, અમદાવાદ વિગેરે સ્થળોના નિષ્ઠાવાન કાર્યકરોએ તમામ જવાબદારી ઉપાડી લીધી હતી. આ ભવ્ય યાત્રા પ્રવાસમાં ૫૦૦૦ થી અધિક યાત્રિકો જોડાયા હતા. ચાર દિવસીય યાત્રા પ્રવાસ અને છ'રી પાલક સંઘમાં વિશાળ સંખ્યામાં યાત્રિકો જોડાયા હોય તેવો થરાદ જૈન સમાજમાં પ્રથમ પ્રસંગ હતો.

તા. ૧૪-૧-૨૦૧૬ ના રોજ સમસ્ત યાત્રિકો જુનાગઢ ખાતે આવી પહોંચ્યા હતા જ્યાં પ્રથમથી જ ૨૧ ધર્મશાળાઓ બુક કરાવી હતી અને દરેકને પુરતી કાળજી સાથે ઉત્તમ સગવડ અપાઈ હતી.

પ્રકૃતિધામની વિશાળ જગ્યામાં ભરતપુર વ્યાખ્યાનખંડની અદ્‌ભુત રચના કરાઈ હતી જ્યારે એક હજાર વ્યક્તિ બાજઠ પર કાંસાના ભાણામાં જમી શકે તેવા મંડપની રચના કરાઈ હતી. દરેક ધર્મશાળામાંથી ભરતપુર વ્યાખ્યાન ખંડ અને ભોજન ખંડ આવવા-જવા માટે છગડા રીક્ષાની વ્યવસ્થા કરાઈ હતી. અઢાર અભિષેક, વ્યાખ્યાન, શ્રી ગિરનારજીના વધામણા અને રાત્રિભક્તિ ભાવનાના કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા.

તા. ૧૫-૧-૨૦૧૬ ના રોજ શ્રી ગિરનારજી તીર્થધિરાજની પહાડ યાત્રા, પહાડ ઉપર પ્રદક્ષિણા, સંગીતના સથવારે વધામણા, પ્રભુજીની અંગ રચના વિગેરે કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. યાત્રા બાદ દરેક યાત્રિકો સહસાવન થઈ જુનાગઢ આવ્યા હતા ત્યાં આયોજક પરિવાર દ્વારા ચાંદીના સિક્કાથી યાત્રિકોનું બહુમાન કરાયું હતું. બન્ને દિવસ દરમ્યાન ત્રણેય ટાઈમનું ભોજન લઈ નિરવ શાંતિ વચ્ચે યાત્રિકોના ટોળાં બેસતા હતા ત્યારે જાણે કોઈ મેળો જામ્યો હોય તેવું લાગતું હતું.

તા. ૧૫-૧-૨૦૧૬ ના રોજ ચૌવિહાર કરી ૨×૨ ૧૦૦ લકઝરી બસોએ પ્રસ્થાન કરી પાલીતાણા તરફ જવા પ્રસ્થાન કર્યું હતું.

ત્યાગની પ્રતિમૂર્તિ, માનવમાત્ર કલ્યાણ અને સર્વધર્મ પ્રત્યે સમભાવ દાખવતા ઈતિહાસ રચીત, યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય ડૉ. શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ વોહેરા પરિવારની ભાવનાને બુલંદ બનાવી હતી. સાચા અર્થમાં રાષ્ટ્રસંત બનીને ધાર્મિકતાનો ધોધ વરસાવ્યો હતો. પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં આ યાત્રા પ્રવાસના યાત્રિકો છ'રી પાલક સંઘમાં જોડાયા હતા. તા. ૧૬-૧-૨૦૧૬ ની સવારે (ગુરૂ સપ્તમી) વિશાળ સંખ્યામાં પૂજ્યશ્રીના સાનિધ્યમાં પહોંચી ગયા હતા અને બેન્ડની સુરાવલીઓ વચ્ચે જય.. જયકાર... જયકાર... રાષ્ટ્રસંતની જયજયકારથી પાલીતાણાનો શતાબ્દી ભવન વિસ્તાર ગુંજી ઉઠ્યો હતો.

પૂજ્યશ્રી સપરિવારની નિશ્રામાં ધામધૂમ પૂર્વક વાજતે-ગાજતે છ'રી પાલક સંઘે પ્રસ્થાન કર્યું હતું. આ છ'રી પાલક સંઘ ગુરૂકુલમ આવી પહોંચતા પૂજ્યશ્રી સપરિવાર સહિત સંઘનું ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયું કરાયું હતું અને ત્યાંથી મોટી રથયાત્રા નીકળી હતી જે રથયાત્રા પાલીતાણા શહેરમાં ફરી તળેટી ખાતે પહોંચી હતી.

છ'રી પાલક રથયાત્રામાં રથ, હાથી, ઘોડા, પંજાબી બેન્ડ, મધુકર મ્યુઝીકલ બેન્ડ, નૃત્ય મંડળીઓ વિગેરેએ અદકેરૂં આકર્ષણ જમાવ્યું હતું. રથયાત્રાને તળેટીએ પહોંચતા ચાર કલાક લાગ્યા હતા. ત્યારબાદ ભરતપુર વ્યાખ્યાન ખંડમાં પૂજ્યશ્રીએ વ્યાખ્યાન ફરમાવ્યું હતું અને ગુરૂસપ્તમી પ્રસંગે ગુરૂ ગુણાનુવાદ કરાયા હતા.

ત્યારબાદ સંઘ માળા રોપણ અને બહુમાન કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. સ્નાત્રપૂજા, ત્રણેય ટાઈમ ભોજન, ગુરૂ સપ્તમીની ઉજવણી બપોરે વારાહીના શાંતિનાથ ભગવાન ને

વિદાય સાંજે જય તળેટી વધામણા અને રાત્રિ ભક્તિ ભાવનાના કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા.

તા. ૧૭-૧-૨૦૧૬ ના રોજ શ્રી શત્રુંજય તીર્થાધિરાજની પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં સામૂહિક પહાડ યાત્રા અને દાદાને ધ્વજારોહણ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

વોહેરા પરિવાર દ્વારા દરેક યાત્રિકોનું પાંચ ગ્રામ ચાંદીના સિક્કાથી બહુમાન કરાયું હતું. ચાર દિવસ દરમ્યાન અપૂર્વ કોટીની ઉદારતા સાથે વોહેરા કાંતાબેન ચંદુલાલ મફતલાલ પરિવારની અનુમોદનીય સેવા ભક્તિ અને સંઘભક્તિ જોઈ આખો સમાજ અભિભૂત થઈ ગયો હતો. વોહેરા નાગરદાસ ઉજમસીભાઈ પરિવાર અને સમાજના નિષ્ઠાવાન કાર્યકરોના નમ્રતાપૂર્વકના વ્યવહારે સમસ્ત સમાજજનોના દીલ જીતી લીધાં હતા.

પૂજ્યશ્રીની પ્રેરણાત્મક વાણીના પ્રભાવે હૈયાંરૂપી હિમાલયમાંથી ઉદ્દ્ભવેલ ગંગોત્રીરૂપ શુભ સંકલ્પને મૂર્તિમંત કરી હજ્જારો હૈયાંને શાંતિનો અનુભવ કરાવી શ્રી ગિરનાર-શત્રુંજય સંઘ યાત્રા દ્વારા વોહેરા કાંતાબેન ચંદુલાલ મફતલાલ પરિવારે સૌભાગ્યનું તિલક ધારણ કર્યું હતું.

આ ચાર દિવસના યાત્રા પ્રવાસના પુલકિત અવસરની ઉજવણીના આનંદથી જુનાગઢ અને પાલીતાણાની ધન્યધરા હરખાઈ ઉઠી હતી.

થરાદ પંથક જૈન સમાજના ઈતિહાસમાં સુર્વણ અક્ષરે લેખવા યોગ્ય વોહેરા નાગરદાસ ઉજમસીભાઈ પરિવાર દ્વારા આયોજીત શ્રી ગિરનાર-શત્રુંજય સંઘ યાત્રાનો ઉચ્ચકોટીના આયોજનમાં શું હતું તેના પ્રશ્નના જવાબમાં કહી શકાય કે શું ન હતું !!

## વાહ વોહેરા પરિવાર વાહ... વાહ...

શું વર્ણન કરવું શબ્દો જડતા નથી.... નથી જડતી ગિરનાર-શત્રુંજયની વોહેરા પરિવારની સંઘ-યાત્રા પ્રવાસનું વર્ણન કરવા માટે કલમ.

શું અદ્દ્ભુત સંજોગોનું હતું મિલન... દાદા ગુરૂદેવની જન્મજ્યંતિ પોષ સુદી સાતમનો દિવસ હતો... ગીરીરાજ પાલીતાણાની ભૂમિ હતી.. યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., સપરિવારનો સંગ હતો.. થરાદ પંથક જૈન સમાજના હજ્જારો યાત્રિકોનો સંગાથ હતો. ત્રણ-ત્રણ સંઘોનો મેળ હતો.. આવો સુંદર અવસર હવે મળશે કે કેમ તે ખબર નથી પણ એ વાતની ખબર છે કે આ સંઘ-યાત્રાનો હું પણ એક યાત્રિક હતો.

શું હતી સંઘ પતિની ઉદારતા... !
શું હતી સંઘના કર્તવ્યનિષ્ઠ કાર્યકરોની વિનમ્રતા... !
શું હતી જવા-આવવાની વ્યવસ્થા... !
શું હતી એકાસણા-વિયાસણાની વયાવચ્ચ.. !

શું હતી સાધર્મિક ભક્તિ.. !
શું હતો પાલીતાણાની બજારમાં ફરતો અને માનવ મહેરામણથી ઉભરાતો વરઘોડો..!

શું હતો દાદાની ટુંકે ધજા ફરકારવાનો આનંદ.. ! અદ્‌ભુત પ્રસંગો યોજાયા હતા દાદાના દરબારમાં.. શું હતા કાંસાની થાળીમાં અવનવા પકવાન..!

શું વોહેરા નાગરદાસ ઉજમસીભાઈ પરિવારની એકતા હતી.. ! વોહેરા કાંતાબેન ચંદુલાલ મફતલાલ પરિવારનો દરેક યાત્રિકોને વિનમ્રતા ભાવે મળવાનો ઉલ્લાસ હતો..!

સંઘ પૂજન ચાંદીના સીક્કા, કંકુ તીલક-ચોખાથી કરેલ તે અલબેલો અવસર હતો. શું પ્રભુજીના વધામણા હતા. ૩૦૦ થી વધુ સંઘોમાં શાંતિ પાથરનાર શ્રી શાંતિનાથ દાદાની સુખ-દુઃખ સાથેના આંસુઓ સાથે વિદાયનો પ્રસંગ હતો. વધારે વર્ણન કરવા શબ્દો નથી બસ એટલું જ કે વોહેરા પરિવારના બંધુ બેલડી પિયુષભાઈ અને મેહુલભાઈની નમ્રતાભરી ઉદારતાને નમન છે..

## જય ગિરનાર... જય શત્રુંજય

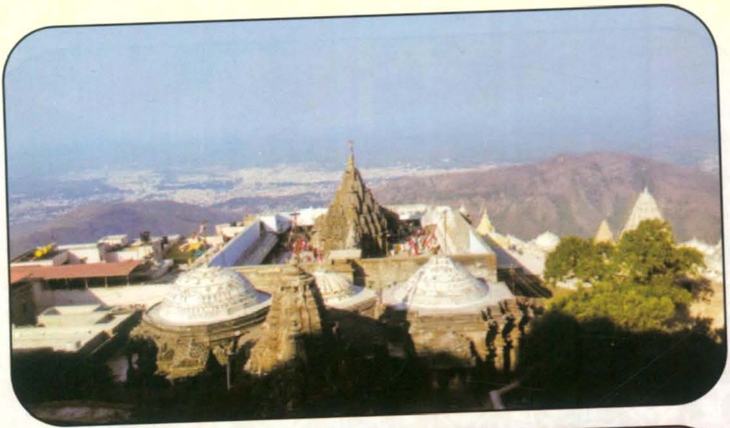

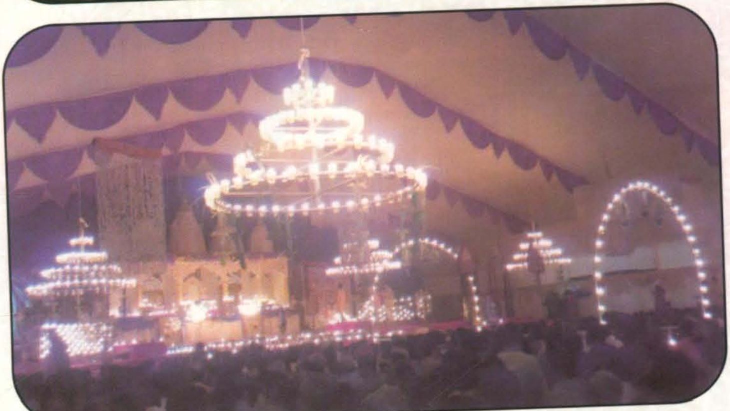

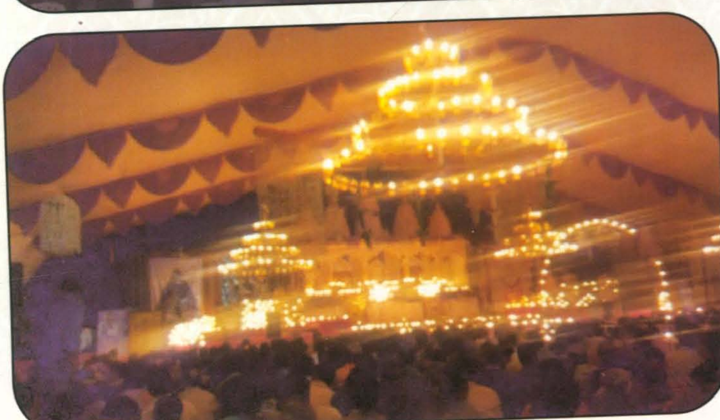

# શ્રી શત્રુંજયની તીર્થ યાત્રાએ પૂજ્યશ્રી

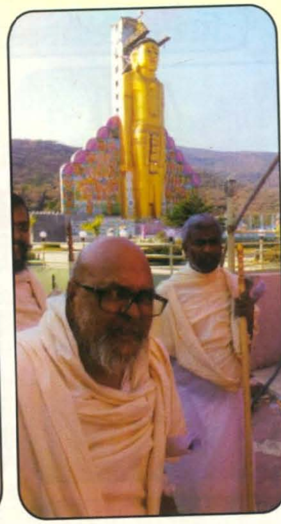

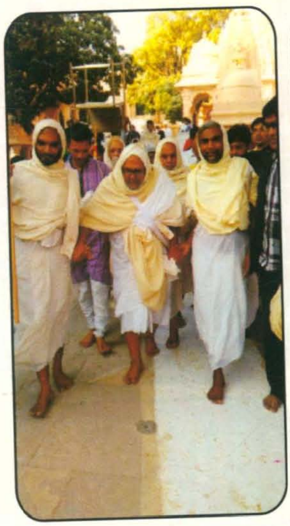

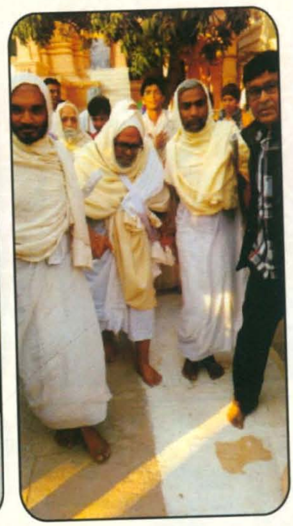

## વિરાટ વરઘોડાની તસ્વીરી ઝલક...

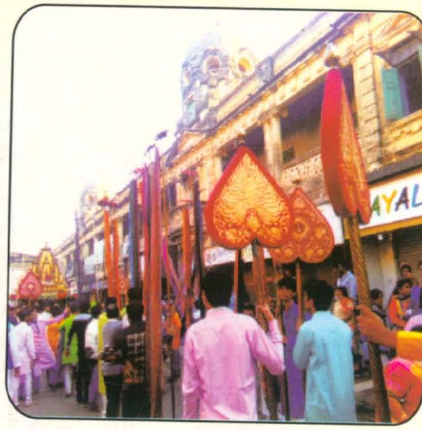

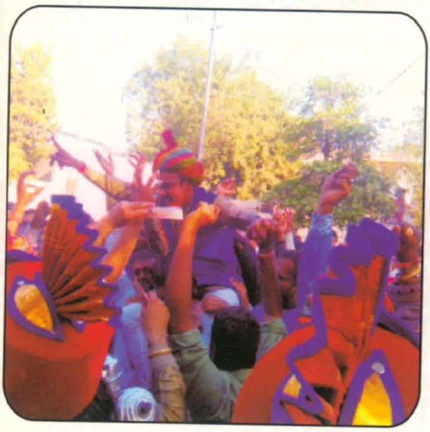

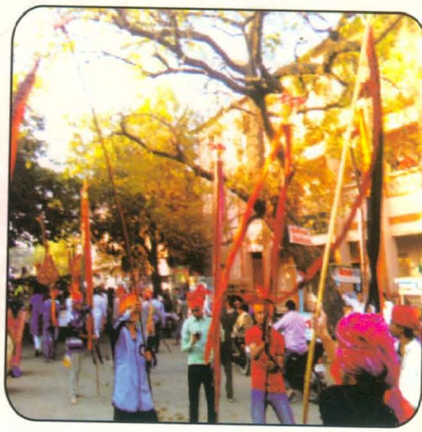

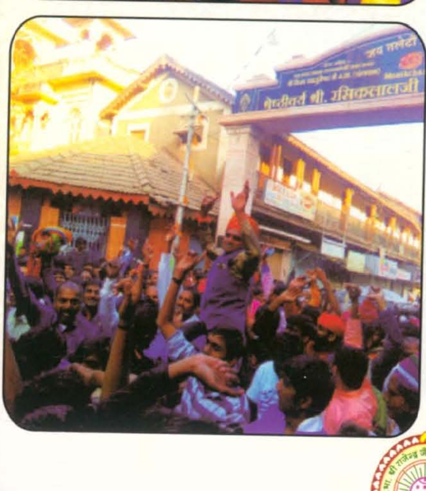

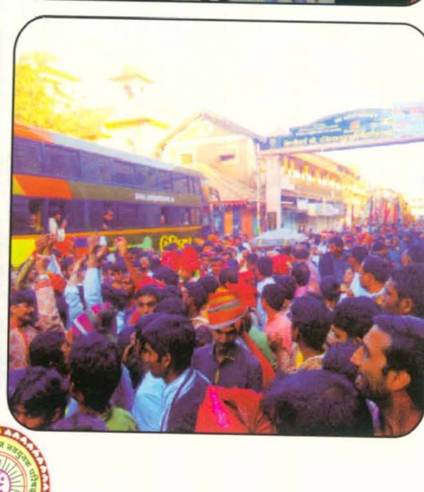

## વિરાટ વરઘોડાની તસ્વીરી ઝલક...

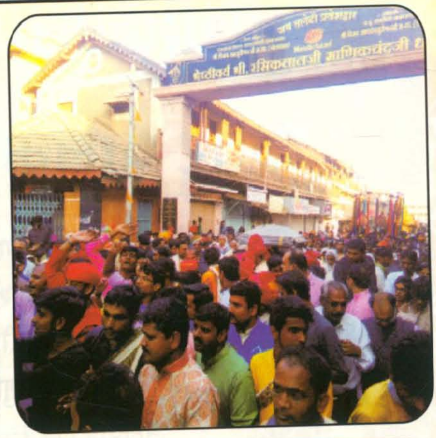

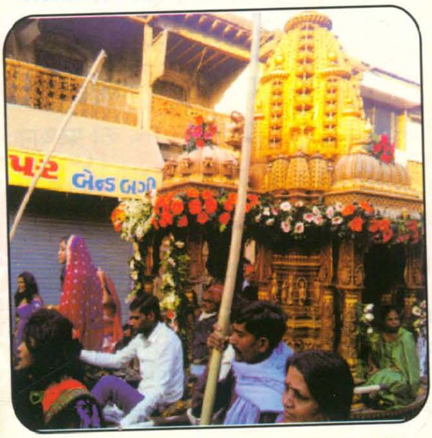

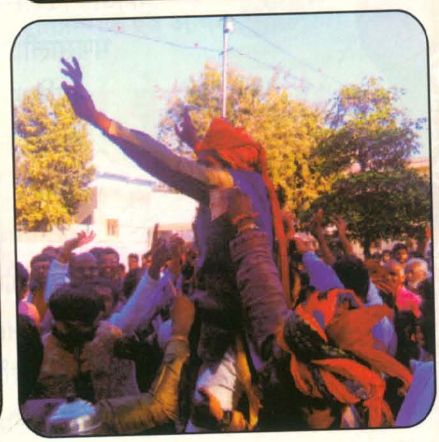

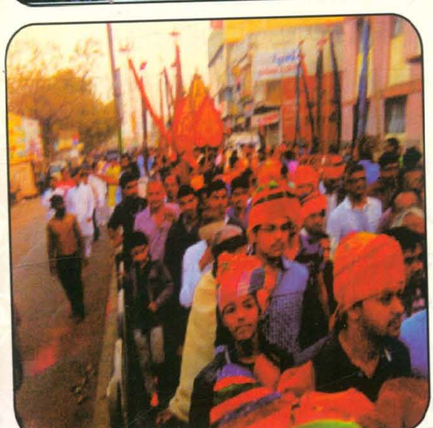

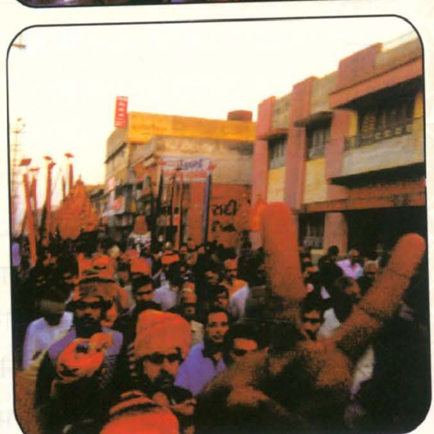

# कुमकुम सने पगलिये

## छःरि पालक संघ सम्पन्न

शंखेश्वर तीर्थ। सुविशाल समर्थ गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के पावन सान्निध्य में थराद से शंखेश्वर तीर्थ छःरीपालक संघ का भव्य प्रस्थान दिनांक 27 नवंबर 2015 के शुभ दिन हुआ। पूज्य गच्छाधिपति श्री ने प्रातः महावीर जिनालय में दर्शन, वंदन उपरान्त संघपति परिवार भणसाली मणिलाल जीतमल के निवास पर पधारकर पगलिए, संघपति को बिदाई, तिलक आदि विधि सम्पन्न करवाकर मांगलिक प्रदान कर संघ को प्रस्थान करवाया। वरखड़ी दर्शन कर बैंडबाजे, शहनाई, ढोल आदि धूमधाम के संग प्रथम पड़ाव की ओर आगे बढ़े। 13 दिवसीय यह संघयात्रा क्रमशः अनेक गांव-नगरों की स्पर्शना करते हुए दिनांक 5 दिसम्बर 2015 को शंखेश्वर तीर्थ पहुँची।

संघ के दौरान प्रतिदिन प्रातः भक्तामर स्तोत्र, सामूहिक चैत्यवंदन, गुरुवंदन उपरान्त पूज्यश्री द्वारा पच्चक्खाण एवं मांगलिक प्रदान किया गया। इसके पश्चात् अगले पड़ाव पर संघ प्रवेश, स्नात्र पूजा आदि कर यात्रिक एकासणा करते थे। दोपहर को प्रवचन सभा का सुन्दर आयोजन हुआ, जिसमें तीर्थ यात्रा का महत्व, प्रश्नोत्तर, विभिन्न प्रेरक प्रसंगों से सभी को अवगत कराया गया। 17 वर्ष से 80 वर्ष तक की आयु वाले भाई-बहनों ने नियमपूर्वक यात्रा पूर्ण की।

अनेक भाई बहनों ने पौषध एवं दो नन्हें बालकों ने सम्पूर्ण यात्रा पौषधव्रत में ही की। संघ यात्रा में प्रतिदिन प्रभु भक्ति का माहौल

केतनभाई, चिंतनभाई एवं पारसभाई ने जमाया। साथ ही संयम संवेदन एवं प्रभु अभिषेक का अनुपम आयोजन भी सभी का हृदयस्पर्शी बना। पूज्य गच्छाधिपति श्री की प्रेरणा से लच्छवाड़ महावीर स्वामीजी की प्राप्ति की भावना से 185 आराधकों ने अट्ठम तप एवं अनेक यात्रियों ने आयंबिल की तपस्या भी की। रथ, गजराज के साथ 36 ऊँटगाड़ी एवं घोड़ागाड़ियों से सुशोभित दस दिवसीय संघयात्रा में 1300 से अधिक यात्रियों ने 5 दिसम्बर को शंखेश्वर तीर्थ में भव्य प्रवेश किया।

मीडिया प्रभारी कौस्तुभ डांगी ने बताया कि दादा शंखेश्वर पार्श्वनाथजी के दर्शन कर सभी आनन्द विभोर हुए। दूसरे दिन नवकार राजेन्द्र सूरि मंदिर प्रांगण में प्रातः 8 बजे भणसाली परिवार का संघ माला का कार्यक्रम पूज्यश्री के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ, जिसमें उन्हें 'संघवी' पद से भी विभूषित किया गया। यह संघ यात्रा ऐतिहासिक एवं अविस्मरणीय रही।

# सिद्धाचलजी में पारा के संघवी छाजेड़ परिवार द्वारा चौविहार छट्ट करके सात यात्रा का आयोजन

**पारा।** शत्रुंजय। राष्ट्रसंत सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य देवेश गुरुदेव श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा., वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंदजी म.सा, गुरु भगवंतों एवं साध्वीजी म.सा. की निश्रा में जयन्त गिरि सिद्धाचल की सिद्ध भूमि में चौविहार छट्ट करके सात यात्रा का आयोजन संघवी वालीबाई सागरमलजी छाजेड़ पुत्र नगीनलाल, मनोहरलाल, अशोककुमार छाजेड़ परिवार पारा जि. झाबुआ (म.प्र.) द्वारा आयोजित किया गया। पेपराल चातुर्मास के दौरान गुरुदेव के आशीर्वाद से कार्यक्रम का शुभ मुहूर्त 4 व 5 जनवरी 2016 प्रदान किया गया था।

कार्यक्रम में सम्पूर्ण मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, छत्तीसगढ़ के लगभग 360 यात्रियों के साथ पालीताणा में 3 जनवरी को सकल संघों के साथ सर्वप्रथम गुरुदेव के आशीर्वचन एवं वासक्षेप के द्वारा यात्रियों में एक चेतना का संचार हुआ। लगभग 40 गाँवों व नगरों के यात्री जय-जय आदिनाथ के नारों के साथ 4 जनवरी को प्रातः 4 बजे से सिद्धगिरि की यात्रा के लिए प्रस्थान करने लगे। हौंसलों की उड़ान के साथ देवगुरु एवं धर्म के प्रति मन में समर्पित भावों से 260 यात्रियों ने 2 दिनों में चौविहार छट्ट करके सात यात्रा कर पुण्य उपार्जन किया। शास्त्रों में भी कहा गया है कि सच्चे मन

से,समर्पण भाव के साथ जो भाविक जीव चौविहार कर सात यात्रा करता है, उसका तीसरे भव में मोक्ष निश्चित है।

यात्रा पूर्ण कर 6 जनवरी को प्रातः तलेटी भगवान के दर्शन कर सभी यात्रियों ने गुरुदेव के मुखारविंद से पच्चक्खाण लिए व पच्चक्खाण पार कर पारणा किया। गुरुदेव ने पारणा के पूर्व समस्त यात्रिकों एवं सकल संघ को अपने उद्‌बोधन में बताया कि संघवी वालीबाई सागरमलजी छाजेड़ परिवार ने पारा से सिद्धाचलजी का छःरिपालक संघ 2007 में गुरुदेव के सान्निध्य में निकाला था और तब से अब तक लगातार 7 वर्षों से यह परिवार पारा से छट्ट सात यात्रा का आयोजन कर रहा है। सद्‌कार्यों की अनुमोदना करते हुए इसे बहुत ही प्रशंसनीय कार्य बताया। छाजेड़ परिवार के इस आयोजन में यात्रियों के साथ वैयावच्च में भी अपनी महती भूमिका के निर्वाह के लिए पारा श्रीसंघ एवं परिषद् परिवार सहित अन्य संघ के प्रतिनिधियों के प्रति भी छाजेड़ परिवार ने अपना आभार व्यक्त किया। उक्त जानकारी श्रीसंघ अध्यक्ष श्री मनोहरलाल छाजेड़ ने दी।

## धर्म एवं सेवा कार्य कर मनाया
# राष्ट्रसंत का जन्मोत्सव

**उज्जैन**। पूज्य गच्छाधिपति के जन्मदिवस पर प्रातः श्रीराजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर नमकमंडी से प्रभात फेरी निकाली गई। ज्ञानमंदिर में भक्ताम्बर महापाठ एवं गुरुगुण इक्कीसा सम्पन्न हुई। 80 दीपकों की आंगी द्वारा आचार्यश्री के कुशल स्वास्थ्य की कामना कर दीप प्रज्ज्वलन किया जिसका लाभ श्रीमान रमणीकलालजी अमृतलालजी तल्लेरा परिवार ने लिया। त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ एवं समस्त परिषद् इकाइयों के तत्वाधान में गुरु गुणानुवाद सभा आयोजित की गई। इसमें श्रीसंघ अध्यक्ष श्री राजबहादुरजी मेहता, श्री माणकलालजी गिरिया, महिला परिषद् की राष्ट्रीय महामंत्री गुणबाला बेन नाहर, राष्ट्रीय सहयंत्री सरलाबेन मेहता, नवयुवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अभिषेकजी सेठिया, बहु परिषद् अध्यक्ष पूलीजी गोलेचा एवं जया जी नाहर ने आचार्यश्री के गुणों की व्याख्या कर उन्हें अपने जीवन में उतारने की अपील की। संचालन श्री संजय कोठारी ने तथा आभार श्री मदनलालजी रूनवाल ने माना। दोपहर में महिला परिषद् एवं लाभार्थी श्री संतोषकुमार श्रेणिककुमारजी लुणावत द्वारा गुरुदेव की महापूजन पढ़ाई गई। बहु परिषद् की सदस्याओं द्वारा शीतला माता गौशाला में गायों को चारा प्रदान किया गया। उक्त जानकारी श्री वीरेन्द्र गोलेचा ने दी।

**राणापुर।** पूज्य गुरुदेव का जन्मोत्सव यहाँ भी विविध आयोजनों के साथ उत्साह के साथ मनाया गया। जन्मोत्सव के दिन सुबह मंदिर में स्नात्र पूजन पढ़ाई गई। श्री राजेन्द्र भवन से शोभायात्रा निकाली गई जो नगर भ्रमण के पश्चात् पुनः राजेन्द्र भवन पहुँची। यहाँ श्री मनोहर नाहर द्वारा सामूहिक गुरुवंदना करवाई गई। महाविदेह मधुकर धाम में गुरु जन्मदिवस पर श्रीमती लीलाबाई, देवेन्द्र, अंजू, श्रुति, हर्ष एवं शुभ नाहर की ओर से त्रिगड़ा भेंट किया गया। दोपहर में सामूहिक सामायिक का आयोजन हुआ, जिसमें प्रभावना श्री रमेशचन्द्रजी नाहर की ओर से थी। आयोजन में श्री दिलीप सकलेचा, श्री अनिल सेठ, श्री राजेन्द्र सियाल, श्री चन्द्रसेन कटारिया, श्री रमेश सकलेचा आदि की सक्रिय भूमिका रही।

इस अवसर पर गार्डन में 80 पौधे लगाए गए। झाबुआ-कुक्षी स्टेट हाईवे पर ग्राम बन स्थित टोल प्लाजा के आसपास भी पौधरोपण किया गया। श्री रतनलालजी जैन के सहयोग से प्रकृति मित्र मंडल की ओर से आयोजित कार्यक्रम में सर्वश्री कल्याण जैन, मनीष जैन, पंकज जागेटिया, मनोहर नाहर, कल्पेश जैन, कमलेश नाहर, सुरेन्द्र राठी, चन्द्रसेन कटारिया सहित अनेक गुरुभक्त उपस्थित थे।

शाम को श्री राजेन्द्र भवन में गुरु गुणानुवाद सभा हुई। आचार्यश्री की तस्वीर के समक्ष संघ अध्यक्ष श्री दिलीप सकलेचा सहित श्रीसंघ एवं परिषद् परिवार के सदस्यों ने 80 दीपक प्रकटाये। श्री मुकेश हरण एवं श्री कमलेश नाहर ने गुरुदेव के गुणों एवं उनकी शिक्षा का उल्लेख करते हुए उन्हें अपने आचरण में शामिल करने की बात कही। श्री संदीप सकलेचा, श्री राजेन्द्र सियाल, श्री मदनलाल नाहर, श्री चन्द्रसेन कटारिया ने भी गुरु महिमा पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री मुकेश चौधरी ने स्तवन प्रस्तुत किए। संचालन श्री सुरेश समीर ने किया।

# 80 वाँ जन्मोत्सव वर्ष 'आराधना वर्ष' के रूप में मनाएंगे स्वसंचालित होगा वार्षिक धार्मिक अनुष्ठान

**रतलाम।** त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ नीमवाला उपाश्रय द्वारा पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री के जन्मोत्सव के 80 वें वर्ष को 'आराधना वर्ष' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया।

श्री पारसमलजी खेड़ावाला ने जानकारी में बताया कि साधकों, आराधकों, तपस्वियों के अभूतपूर्व सहयोग से यह स्वसंचालित वार्षिक धर्मानुष्ठान बनने जा रहा है। इसमें सभी तपस्याओं में साधक स्वयं अपनी उपस्थिति एवं साधना दर्ज करेंगे। आयोजक सेवा प्रकल्पों के रूप में सहयोग प्रदान करेंगे। 5 सदस्यीय निर्णायक मंडल सर्वश्रेष्ठ तपाराधना का मूल्यांकन करेगा। वार्षिकोत्सव को सार्थकता प्रदान करने के लिए 'धर्माराधक सेवा' एवं 'रचनात्मक एवं संस्काररोपण सेवा' प्रकल्पों के लिए क्रमशः श्रीमती ममता भण्डारी एवं श्री अनोखीलाल जी भटेवरा सेवा प्रभारी का दायित्व संभालेंगे। इसमें विशेष रूप से 15 वर्ष तक की आयु के बालक-बालिकाओं में धार्मिक जागरूकता लाने के साथ सेवा एवं अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जाएगा। इसमें सहसंयोजकद्वय श्री सुरेशचन्द्र बोराना एवं श्री निर्मल कटारिया सहयोग प्रदान करेंगे।

श्री भटेवरा ने बताया कि धर्मानुष्ठान के तहत जरूरतमंदों को 81 कंबल एवं बच्चों को प्रभु पूजा हेतु पूजा परिधान प्रदान किए गए हैं। एक अन्य जानकारी में श्रीमती भंडारी ने बताया कि प्रभु पूजन, पौषध व प्रतिक्रमण में साधकों की निरंतर वृद्धि हो रही है। 30 आराधक नियमित रूप से नवकार का जाप कर रहे हैं। श्रीसंघ अध्यक्ष डॉ.ओ.सी.जैन व संयोजक श्री खेड़ावाला ने सभी गुरुभक्तों से धर्मानुष्ठान की भावना एवं महत्व को समझते हुए पूर्ण सहयोग की अपेक्षा की है।

# हृदयरोग परीक्षण शिविर सम्पन्न

**बड़नगर।** पूज्य गच्छाधिपति के 80 वें जन्मोत्सव निमित्त विशाल हृदय रोग परीक्षण शिविर का आयोजन राजेन्द्रसूरि जैन मांगलिक भवन गेंदाबावड़ी पर सम्पन्न हुआ। शिविर का शुभारंभ गुरुदेव के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। शिविर में 55 मरीजों का हृदय रोग के लिए परीक्षण किया गया। ईसीजी संस्था द्वारा कई निःशुल्क जाँचे की गईं। इको एवं लिपिड प्रोफाईल की जांच स्थानीय गीता हॉस्पीटल पर रियायती शुल्क पर की गई। इस अवसर पर इन्दौर के अपोलो हॉस्पीटल के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. सुरेश खटोड़, डॉ. सरिता राव राजश्री ने हृदय रोग से बचाव पर विस्तृत व्याख्यान दिया। संघ अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जैन दंगवाड़ा वाला, परिषद् अध्यक्ष श्री अमित कुमठ, श्री विनोद बम आदि सदस्य उपस्थित थे। शिविर में आए चिकित्सकों को अभिनंदन पत्र भेंट किए गए। संचालन श्री शांतिलाल गोखरू ने तथा आभार श्री मनोज ओरा ने व्यक्त किया।

## निःशुल्क रोग निदान एवं परामर्श शिविर सम्पन्न

**राजगढ़।** नवयुवक परिषद् द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री के 80 वें जन्मोत्सव अवसर पर परिषद् भवन पर मेवाड़ हॉस्पीटल धार के सहयोग से निःशुल्क रोग निदान व परामर्श शिविर का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न बीमारियों के 175 रोगियों का विशेषज्ञों ने परीक्षण कर रोग निदान किया। सभी को निःशुल्क परामर्श एवं जरूरतमंदों को निःशुल्क दवाइयाँ भी दी गईं।

शिविर का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री नाथुलालजी बाफना, अतिथि श्री कांतिलालजी जैन एवं डॉ.श्री प्रणवकुमार ने प्रभु व गुरुदेवश्री के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलित कर किया। शिविर के समापन अवसर पर स्व. सम्पतबाई राजमल डांगी परिवार सहित शिविर में सेवा प्रदान करने वाले सभी चिकित्सकों का बहुमान प्रतीक चिन्ह प्रदान कर किया गया। इस अवसर पर डॉ. कुमार, परिषद् के केन्द्रीय प्रतिनिधि श्री कांतिलालजी भंडारी ने आचार्यश्री के अच्छे स्वास्थ्य की मंगल कामना करते हुए जिनशासन एवं मानव सेवा के कार्यों की अनुमोदना की। संचालन श्री लोकेन्द्र मोदी ने किया।

---

**महिदपुर।** जैनाचार्य राष्ट्रसंत का 80 वां जन्मदिवस उल्लास, उत्साह एवं भक्तिभाव पूर्वक मनाया गया। श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में प्रातः श्री माणकलाल छाजेड़ परिवार की ओर से सामायिक मंडल का आयोजन किया गया। दोपहर में श्री नरेन्द्रकुमार मोतीलालजी धाड़ीवाल परिवार की ओर से श्री राजेन्द्र सूरि अष्टप्रकारी पूजन महिला मंडल ने पढ़ाई। श्री सुरेश छजलानी परिवार की ओर से स्थानीय शासकीय चिकित्सालय में महिला मंडल ने मरीजों को फल, चाय एवं बिस्किट का वितरण किया। रात्रि में महिला मंडल ने दादा गुरुदेव के समक्ष आकर्षक रांगोली बनाई व 80 दीपक प्रज्ज्वलित कर गुरु आरती उतारी गई। आरती का लाभ श्री नरेन्द्रकुमार धाड़ीवाल परिवार ने लिया। इसके पश्चात् गुरु गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ जिसमें श्री रमेश लुणावत, श्री माणकलाल छाजेड़, श्री सुरेश छजलानी, श्री अशोक मेहता, श्री अशोक नवलखा, श्रीमती संगीता विजय मोदी, श्री पारस लुणावत आदि ने अपने भाव व्यक्त करते हुए गुरुदेव के दीर्घायु जीवन की मंगल कामना की। प्रभावना वितरण का लाभ श्री श्रेणिक सखलेचा परिवार ने लिया। सभी कार्यक्रमों में त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, महिला मंडल, परिषद् परिवार व समाजजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह जानकारी परिषद् के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री नरेन्द्र धाड़ीवाल ने दी।

**पूणे।** त्रिस्तुतिक संघ नायक, प्रतिष्ठा शिरोमणि पूज्य गुरुदेव श्री के 80 वें जन्मोत्सव पर पूना परिषद् द्वारा अनेक धार्मिक आयोजन किए गए। इस उपलक्ष में प्रसादी (मिठाई) का वितरण भी किया गया।

सामूहिक सामायिक का आयोजन लाभार्थी शा सोहनलालजी ताराचंदजी कटारिया धानसा की ओर से एवं आयम्बिल आराधना, लाभार्थी शा छगनलालजी जुहारमलजी राणावत फत्तापुरा की ओर से की गई। गुरु पूजन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। पूना परिषद् अध्यक्ष श्री अनिलजी राणावत ने गुरुदेव के जन्मदिवस की सभी को बधाई दी। सभी कार्यक्रमों में श्री प्रतापजी ढालावत, श्री प्रकाशजी खिमेसरा, श्री राजेश नालेशा, श्री दिलीप आदि ने सहयोग प्रदान किया।

**नीमच में राष्ट्रसंत साहेब के जन्मोत्सव पर दीप प्रज्ज्वलित करते श्रीसंघ के महानुभाव**

## रजत रश्मियाँ

रु.251.00 स्व. श्रीमती मधुबाला बोकड़िया की स्मृति में श्री विजय प्रकाश, श्री पंकज, श्री गौरव बोकड़िया परिवार, नीमच सिटी (म.प्र.) की ओर से।

रु.200.00 श्री आनन्दीलालजी मानमलजी नागौरी (70), निवासी राणापुर के असामायिक निधन पर शाश्वत धर्म को भेंट।

रु.500.00 भीनमाल (राज.) निवासी बोहरा परिवार द्वारा उपधान तप में परिवार की श्रीमती पुष्पलता दलीचंदजी भंसाली बागोड़ा, श्रीमती रमीलादेवी मदनलालजी भंसाली बागोड़ा, श्रीमती सीमादेवी रोशनजी भंसाली बागोड़ा, श्रीमती लीलुदेवी फरसमलजी गांधी मुथा सांचोर, श्रीमती मंजूदेवी प्रकाशमलजी बोहरा बागोड़ा के उपधान की मोक्षमाला निमित्ते अनुमोदनार्थ प्राप्त।

# आचार्यश्री की निश्रा में नव्वाणु यात्रा

सभी धार्मिक अनुष्ठानों में सहज सुलभ एक अनुष्ठान 'तीर्थयात्रा' है जो अनन्त आत्माओं के परमाणु से पवित्र बनी भूमि के पवित्र रजकणों से अपने आपको पवित्र बनाने का अवसर प्रदान करती है। तीर्थयात्रा में भी तीर्थ महा तीर्थाधिराज शत्रुञ्जय तीर्थ हो और यात्रा नव्वाणु हो तो महत्व अपने आप में अनूठा हो जाता है। विधिपूर्वक, भावपूर्वक और समझपूर्वक यात्रा करने से वास्तविक फल की प्राप्ति होती है। उनकी आत्मा मोक्ष की अधिकारी हो जाती है।

गुरुदेव ने शत्रुञ्जय गिरिराज की शाश्वत्ता और महत्ता का बखान करते हुए अपनी अमृतवाणी में कहा कि ऋषभदेव प्रभु यहाँ पूर्व नव्वाणु बार आये। भरत महाराजा प्रथम बार छःरिपालक संघ लेकर आये। द्राविड वारिखिल्ल ने 10 करोड़, नमि-विनमि दो करोड़ मुनि संग, शांब प्रद्युम्न साढ़े आठ करोड़, पुंडरिक स्वामी 5 करोड़ तथा पांच पांडव, नारद ऋषि, राम, भरत समेत अनेक आत्माओं ने करोड़ों मुनियों के साथ यहां अक्षत सुख को प्राप्त किया। यहाँ नेमीनाथ भगवान को छोड़ वर्तमान योविती के सभी तीर्थंकर आए हैं। स्मरण मात्र से सभी लक्षित फलों को देने वाला यह शाश्वत एवं मुख्य तीर्थ है। इस गिरिराज की भावपूर्वक पूजा, स्मरण, स्तवन, श्रवण, दर्शन किया जाए तो सम्पूर्ण कर्मों का क्षय हो सकता है। पापियों के लिए शल्यरूप, धार्मिकों के लिए सुख देने वाला तीर्थ है। भाव में इसके दर्शन करने वाला प्राणी मोक्षगामी जीव होता है। यात्रा करने और करवाने का अनन्तानन्त लाभ है।

इसी भाव से थराद के लल्लुभाई जैचन्द दोशी परिवार, शशिभाई रमणलाल भाई चिन्तन, अनुज आदि ने पैपराल चातुर्मास के दौरान पूज्य गुरुदेव श्री के चरणों में विनती की कि गुरुवर हमारी प्रबल भावना है कि आपश्री की पावन कृपा दृष्टि में नव्वाणु यात्रा कराने का लाभ हमारे परिवार को इसी वर्ष मिले। शुभ मुहूर्त में निकले शब्द और भाव शीघ्र आकार ले लेते हैं। गुरुदेवश्री का आशीर्वाद मिला और शुभ मुर्हूत भी। मन उल्लास से भरपूर था। न्यौता, समाचार,निमंत्रण आमंत्रण, मनुहार, निवेदन, आवेदन प्रेषित होना शुरू हो गए। तैयारियाँ द्रुत गति से आरम्भ हुईं।

पेपराल से चातुर्मास कर गुरुदेव थराद से शंखेश्वर तीर्थ, वल्लभीपुर से सिद्धाचल तथा अन्य छःरिपालक संघ के साथ सिद्धाचल पधारे तथा नव्वाणु यात्रा का शुभ मुहूर्त किया। इसी बीच बरसों से आशा के दीप जलाये बैठे श्री चुन्नीकाका, अमरती बेन, भूराजी लालाजी वेदमूथा परिवार नैनावा वालों को नव्वाणु यात्रा की भावना साकार हुई। आपके परिवार ने 'शत्रुञ्जय तीर्थ पर सुमतिनाथ जिनालय प्रतिष्ठा पर ही संकल्प लिया था कि एक बार पूज्य गुरुदेव श्री की निश्रा में नव्वाणु यात्रा का लाभ लेना है।' परमपूज्य गुरुदेव ने इस परिवार को भी शुभ मुहूर्त देकर उपकृत किया। रूपा पन्ना धर्मशाला में आयोजित नव्वाणु यात्रा में स्वयं अत्यन्त सादगी से आत्मीयता व

भावपूर्वक नव्वाणु यात्रा के यात्रियों को सेवाएं दे रहे हैं।

दोनों की नव्वाणु यात्रा को निश्रा प्रदान कर रहे गुरुदेव की पावन प्रेरणा से लगभग 1800 आराधक यात्रा आराधना कर रहे हैं। आवास, पक्के पानी, नवकारसी, एकासना सभी की अति सुन्दर व्यवस्थाएं जिनके लिए आराधक के मुख से अनुमोदना के शब्द स्वतः बार-बार निकलते। भोजनशाला सभी के लिए खुली है, कोई भी, कभी भी आये कोई रोक-टोक नहीं। यहाँ तक कि आराधकों के पहचान पत्र बताने तक का मना कर दिया गया। आयोजक परिवार प्रतिदिन नियम से पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंतों से सुखशाता पूछते हुए उनकी वैयावच्च का पूरा ध्यान रख रहा है।

नव्वाणु यात्रा में गुरु सप्तमी तक अनेक आराधकों ने 108 यात्राएं सम्पूर्ण कर लीं। पूज्य साधु भगवंत एवं साध्वी भगवंतों सहित लगभग 1008 आराधकों ने चौ विहार छठ कर सात यात्राएं अथवा अट्ठम तप कर 11 यात्राएं कर अपने मानव जीवन को सार्थक किया। शास्त्रानुसार ये आराधक निश्चित रूप से तीजे भव मोक्ष जा सकते हैं जिन्होंने इस प्रकार की यात्रा भावपूर्वक की। इसी नव्वाणु यात्रा के दौरान परम पूज्य गुरुदेव की पावन प्रेरणा और आशीर्वाद से लगभग 300 यात्रियों, आराधकों का संघ लेकर गिरिराज की छठ तप कर सात यात्रा कराने मालवा के पारा गांव निवासी श्रीमती बालीबाई छाजेड़ परिवार आया और निर्विघ्नता से यात्रा सम्पन्न हुई।

छठ अट्ठम यात्रा में साध्वीजी श्री निरंजनाकलाश्रीजी ने पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद लेकर सिद्धाचल गिरिराज की गुरु सप्तमी तक 160 यात्रा अर्थात् लगातार दूसरे नव्वाणु की 52 यात्राएं कीं। साध्वीजी ने इसी दौरान आठ बार छठ तथा एक बार अट्ठम तप कर यात्राएं कीं। अट्ठम तप में लगातार 22 यात्राएं कर अपनी 'दादा से भक्ति की लौ' का परिचय दिया। आप पिछले कई वर्षों से आयम्बिल कर रही हैं। नव्वाणु यात्रा भी आप आयम्बिल से कर रही हैं।

इस नव्वाणु में अधिकांशतया युवावर्ग बहुत उत्साह से जुड़ा। गुरुदेव ने ऐसे वर्ग को बहुत ही सरल भाषा में नव्वाणु यात्रा का महत्व समझाया। ऐसे अनेक युवा हैं जिन्होंने रात्रिभोजन, जमींकंद तथा अन्य व्यसनों का हमेशा के लिए त्याग कर दिया। नियमित पूजन, सामायिक प्रतिक्रमण का भी अनेकों ने संकल्प लिया। आराधकों ने संयम लेने की भावना गुरुदेव से व्यक्त की। इस यात्रा में मान्या धरू सहित लगभग 8 वर्ष के छोटे बच्चों से लेकर 80 वर्ष के बुजुर्ग तक यात्रा कर रहे हैं।

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेशभाई धरू सहित अनेक परिषद्, तरुण परिषद्, महिला परिषद् के सदस्य इस आराधना से जुड़े हैं। श्री रमेशभाई कहते हैं निश्चित रूप से मैं सौभाग्यशाली हूँ जिसे लगातार गुरुदेव की निश्रा में तप-आराधना करने को मिल रही है। इस वर्ष नवकार आराधना, चौंसठ प्रहरी पौषध के साथ अट्ठाई पश्चात् गुरुदेवश्री की निश्रा में नव्वाणु यात्रा का सौभाग्य मिला।

श्री हंसमुखभाई वेदलिया डीसा परिषद् के संस्थापक सचिव हैं। अब तक 74 यात्रा हो गई, यह उनकी पहली नव्वाणु यात्रा है। पेपराल उपधान करने पर राष्ट्रसंत श्री ने उन्हें माला पहनाते हुए कहा था कि अब नवाणु कर माला पहनना और आपने संकल्प ले लिया था।

अट्ठारह साल बाद छठ तपस्या की और पहली बार छठ कर सात यात्राएं कीं। डीसा तरुण परिषद् के सिद्ध के शब्दों में – 'मैं अपने नाम को सार्थक करने के लिए यह नव्वाणु यात्रा कर रहा हूँ। अब तक 81 यात्रा हो चुकी हैं। शीघ्र ही 108 यात्रा का आंकड़ा भी छू लूँगा। मैं माता-पिता और गुरुदेव को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने सु संस्कारों को रोपित कर इस हेतु प्रेरणा दी।' अहमदाबाद-बागोड़ा के राजमलजी की 10वर्षीय एवं 21 वर्षीय बेटियाँ पीना और भावना भी नव्वाणु यात्रा कर रही हैं। पीना वल्लभीपुर के पैदल संघ में सम्मिलित थीं। यात्रा में माहौल देखा, गुरुवाणी सुनी, शत्रुञ्जय तीर्थ और यात्रा के महत्व को जाना तो दोनों बहनें नव्वाणु यात्रा के लिए तैयार हो गईं। नैनावा के उत्तम भाई शांतिलालजी प्रतिदिन छः यात्राएं कर रहे हैं। 24 वर्षीय धानेरा निवासी हितेशभाई हीरालालजी पड़ाया ने मात्र 30 दिनों में 108 यात्राएं कर अपने सपने को साकार किया है। नैनावा में अपने गांव के चुन्नीकाका के निमंत्रण पर 53 वर्षीय अमृतलालजी गमनलालजी मेहता दूसरी बार नव्वाणु यात्रा कर रहे हैं। राजेन्द्र नवयुवक परिषद् नैनावा के श्री मफतलाल मिश्रीलाल छाजेड़ की 5 वर्षों से नव्वाणु की भावना थी जो अब फलित हुई है। नव्वाणु सभी को करना चाहिए।

श्री महेन्द्रभाई संघवी तप-आराधना का कोई मौका नहीं छोड़ते। नवकार आराधना, पर्युषण पर्व सभी गुरुदेवश्री की निश्रा में कर अब दूसरी बार नव्वाणु यात्रा कर रहे हैं। अहमदाबाद के सार्थक, जीवन को सार्थकता देने नव्वाणु कर रहे हैं। पूज्य गुरुदेव श्री की प्रेरणा से छोटी उम्र में ही धर्म को समझना और अंगीकार करना जीवन की उपलब्धि होता है। अहमदाबाद के ही दीपक भंसाली ने पहली बार नव्वाणु यात्रा में 80 यात्राएं कर चुके हैं।

इन्दौर के टाण्डा निवासी श्री जिनेन्द्र बाठियाँ कहते हैं- ऐसे पूज्य संयोग और कहाँ मिलेंगे- गिरिराज और गुरुराज- जब दोनों साथ हैं तो मुझे क्या चिन्ता। जिनेन्द्र भाई के दोनों घुटने खराब हैं। सामान्यतः बहुत धीरे चलते हैं। डॉक्टर ने घुटने बदलने की सलाह दी है। परिवार ने भी उन्हें रोकने का प्रयास किया पर जिसकी आदिनाथ और दादा गुरुदेव से लागनी लगी उसे कौन रोक पाता? आप प्रतिवर्ष पर्युषण आराधना करवाने पूज्य गुरुदेव के आदेश से अन्य स्थानों पर जाते हैं।

इसी तरह इन्दौर के ही डॉ.राजेन्द्र जैन एवं धर्मपत्नि सोहन अपने अनुभव सुनाते हुए कहते हैं कि जब तक दादा के दर्शन नहीं हों मन बेचैन रहता है। जब भी पता लगता है कि शत्रुञ्जय का पैदल संघ निकल रहा है तो भाव जागृत होते हैं। पूज्य गुरुदेव जयन्तसेनसूरिजी म.सा. की निश्रा में संवत् 2026 में हमारे परिवार द्वारा बाग से शत्रुञ्जय तीर्थ का पैदल छःरिपालक निकाला गया था। तभी से शत्रुञ्जय तीर्थ हृदय में बस गया। पूज्य गुरुदेव का हमारे परिवार पर बड़ा उपकार है।

इन्दौर की अनिला मणिलालजी बागवालों की यह चौथी नव्वाणु यात्रा है। वल्लभीपुर से शत्रुञ्जय की पैदल यात्रा भी गुरुदेवश्री के साथ की। जावरा के पवन कटारिया जो तरूण परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी हैं, अपने साथी अमित चौरड़िया के साथ नव्वाणु यात्रा कर रहे हैं। पवन ने नव्वाणु की शतक पूरी कर ली है और 108 के लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं। पूज्य गुरुदेव की

निश्रा में नव्वाणु यात्रा करने के भाव पूज्य साध्वीजी प्रीतिदर्शनाश्रीजी ने जगाए थे। उन्होंने नव्वाणु यात्रा के महत्व को समझाते हुए इसे कर्मक्षय का श्रेष्ठतम उपाय बताया। कुक्षी की परम गुरुभक्त तथा माता-पिता की सेवा में अग्रणी बहन सविता अत्यन्त प्रफुल्लित हैं। उनकी तो मानों मन की मुराद पूरी हो रही है। अपनी माताजी निर्मला सुगंधीलालजी जिनका लगातार चौथा वर्षीतप और तीसरी यात्रा है, के साथ यात्रा कर रही हैं। इनके दीक्षा के प्रबल भाव हैं। परमपूज्य गुरुदेव ने कहा है कि पहले तपस्वी माता-पिता की सेवा करो। कुक्षी में नियमित पाठशाला चलाने वाली सविता महिला परिषद् में राष्ट्रीय पदाधिकारी हैं। सविता तलेटी से दादा की बड़ी यात्रा से 108 यात्रा की ओर बढ़ रही हैं।

धार के झमकलालजी तांतेड़ को 2 जनवरी 2016 को पैर में फ्रेक्चर हुआ था। घर के लोगों ने रोका तो कहा पैर टूटा है, मन नहीं टूटा है। फिर दादा बैठे हैं, तो चिन्ता कैसी? दृढ़ इच्छाशक्ति वाले श्री झमकलालजी लगभग प्रतिवर्ष आचार्यश्री की निश्रा में उपवास से नवकार आराधना करते हैं। बीजापुर के चातुर्मास से पूज्य गुरुदेव के साथ विहार आदि में लगातार चलने वाले भाई किरण वाणीगोता गुरुदेवश्री को अपना सर्वस्व मानते हैं। संयम के उच्च भाव हैं। 85 यात्राएं कर चुके भाई किरण को गुरुदेव में ही जीवन की आशा की किरण दिखाई देती है। परिषद् सूरत के जैनिस मोदी की चौविहार छठ में सात यात्रा सहित 108 यात्राएं पूर्ण हुईं। वे अब भी यात्रा कर पुण्यार्जन कर रहे हैं। पूज्य गुरुदेव की पावन निश्रा में अध्ययन करने वाला परिषद् साथी भाई संयम ने अट्ठम तप सहित 80 यात्राएं पूरी की। पूज्य मुनि भगवंतों की सेवा में रहकर मुमुक्ष संयम उस दिन का बेसब्री से इन्तजार कर रहा है जब गुरुदेव श्री उन्हें 'ओघा' प्रदान करेंगे। सूरत तरुण परिषद् के ही दीप डोसी छठ कर 80वीं यात्रा कर रहे हैं।

मनावर की श्रीमती पुष्पा सुभाषजी भण्डारी दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद तो ठीक से चल भी नहीं पाती हैं। शारीरिक अस्वस्थता के कारण डोली से यात्रा कर रही हैं। वे कहती हैं परम कृपालु गुरुदेव का असीम स्नेह ही मेरे आत्मविश्वास को बढ़ा रहा है। दादा की 62 यात्रा हो गई । गुमास्ता नगर इन्दौर के श्री इन्दरमलजी कोलन स्वयं छठ कर सात यात्रा कर अन्य यात्रियों को भी इस हेतु प्रोत्साहन दे रहे हैं। राजगढ़ के श्री बाबुलालजी मामा, भेरूलालजी भंडारी, इन्दौर के जयंतिलालजी बाग प्रातः का प्रतिक्रमण कर साथ-साथ निकल पड़ते हैं। गुरुदेव की असीम कृपा है। यात्रा में अति उत्साह रहता है। प्रतिमाह सप्तमी को दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरिजी म.सा. ने जहां जहाँ चातुर्मास किए वहाँ की यात्रा करने वाले बाबु मामा व जयंतिलालजी विभिन्न तपस्या करते हुए यह नव्वाणु कर रहें हैं। इन्दौर के श्री अशोक खाबिया जीवन में पहली बार नव्वाणु यात्रा कर रहे हैं। अब बार-बार करने के भाव जागृत हुए हैं। चाहते हैं पूज्य गुरुदेव श्री जयन्तसेन सूरिजी बार-बार नव्वाणु करवाएं और हम बार-बार यहाँ आएं।

इन्दौर के ही श्री प्रकाशचन्द्रजी तांतेड़ एवं जिनेन्द्रजी बांठियाँ के साथ यात्रा करने आये श्री अनिलप्रकाश जी कहते हैं कि गुरुदेव के दर्शनमात्र से मन प्रफुल्लित हो जाता है। अपनत्व, आत्मीयता के साथ आपकी निश्रा में नव्वाणु यात्रा की। श्री पूनमचंदजी रूणवाल के बेटे श्री राजेन्द्र जी अपनी

धर्मपत्नि अंगूरबालाजी के साथ यात्रा कर रहे हैं। राजेन्द्रजी की यह तीसरी और अंगूरजी की चौथी नव्वाणु यात्रा है। उनका कहना है कि पूज्य गुरुदेव की सान्निध्यता का आनन्द ही कुछ और है। लगातार दूसरा वर्षीतप कर पैदल यात्रा संघ के पश्चात नव्वाणु यात्रा करने वाली सुशीला भेरूलालजी सुराणा कहती हैं कि गुरुदेवश्री की निश्रा में होने वाली कोई भी आराधना, लाभ को अनंत गुणा कर देती है। पेपराल में नवकार आराधना, पर्युषण पर्व एवं उपधान कर अब नव्वाणु कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रही हूँ। आठ वर्षीय माल्या की यह पहली नव्वाणु की 55 वीं यात्रा है। पूज्य गुरुदेव ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि यह दादा गुरुदेव की असीम कृपा है कि छोटे-छोटे बच्चों से लेकर वृद्ध श्रावक-श्राविकाएं भी अति उत्साह से यात्रा कर रहे हैं। राजस्थान, मालवा, गुजरात, दक्षिण भारत तथा अन्य प्रान्तों से आये तीर्थयात्री एकदूसरे में घुल मिलकर परिवार जैसे रह रहे थे।

सभी नव्वाणु यात्रियों में अति उत्साह है।यद्यपि पालीताणा में और भी स्थानों पर नव्वाणु यात्राएं हो रही हैं, सभी स्थानों पर दादा की यात्रा कर कर्म खपावन की यात्रियों में धुन है। यतिन्द्र भवन आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है।

लगभग सवा सौ से अधिक श्रमण-श्रमणी भगवंत सभी यात्रियों को प्रोत्साहन, प्रेरणा दे रहे हैं। पूज्य गुरुदेवश्री तथा मुनि भगवंत के नियमित प्रवचन हो रहे हैं। श्रावक-श्राविकाएं, पूज्यश्री तथा साध्वीजी की निश्रा में प्रतिक्रमण, सामायिक का लाभ ले रहे हैं। सभी को इस बात की भी खुशी है कि उन्हें इतने आराधकों, गुरुभक्तों के प्रतिदिन दर्शन हो रहे हैं।

## नव्वाणु यात्रा

(दिनेश धरू डीसा)

परमात्मा ने कहा है कि भव्य जीव ही इस क्षेत्र की स्पर्शना कर सकते हैं। इस अवसर्पिणी काल के प्रथम जिनेश्वरदेव आदिनाथ प्रभु पूर्व नव्वाणु बार यहाँ पधारे थे। इस आलंबन से नव्वाणु यात्रा की परम्परा प्रारंभ हुई थी। महत्ता यह है कि नव्वाणु यात्रा विधिवत करने वाला जीव अवश्य ही मोक्ष का अभिगामी होता है। वह जीव एक, दो या तीन भवों में किसी न किसी भव में मोक्ष जा सकता है।

पहली यात्रा करते समय ऐसा लगा कि नव्वाणु यात्रा कैसे पूर्ण होगी? मगर दादा की प्रार्थना के बाद उनकी कृपा से हमारी यात्रा निरंतर बिना थकान के चलती रही है। पू. गुरुदेव जयन्तसेन सूरिजी म.सा. की कृपा भी ऐसी बनी रहती है कि कठिन काम भी आसानी से हो जाते हैं। गुरुदेव के वासक्षेप का ही यह प्रभाव होता है कि तपस्या कैसी भी कठिन क्यों न हो, आसानी से हो जाती है। लाभार्थी परिवार ने व्यवस्था सुन्दर की है। किसी भी यात्री को यहाँ घर-परिवार में रहने जैसा ही महसूस होता है, घर की याद नहीं आती है। आराधकों को लाभार्थी परिवार की ओर से सुन्दरतम सहयोग मिल रहा है। हमने इस यात्रा के दौरान छट्ठ उपवास, आयंबिल तप, यात्रा करते करते भाव बनाए कि साल में कम से कम बीस यात्रा अवश्य करेंगे।

# सिद्धाचल तीर्थ पर गुरु सप्तमी पर्व पूरा तलेटी मार्ग राजेन्द्र-जयन्तमय हुआ

कण कण में जहाँ अनन्त आत्माओं ने सिद्धगति प्राप्त की हो, ऐसी पावन भूमि है सिद्धाचल तीर्थ। सभी तीर्थों में राजा तुल्य यह शत्रुञ्जय तीर्थ स्थल स्थित पर्वत परम सुख निर्वाण की आवास स्थली है जिस पर आरोहण करने वाले प्राणी अत्यन्त दुर्लभ मोक्ष को सहज ही प्राप्त कर लेते हैं। ऐसा शाश्वत तीर्थ स्थल है यह शत्रुञ्जय गिरिराज।

**गुरु सप्तमी**

गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. की जन्म एवं पुण्य तिथि का पावन दिवस गुरु सप्तमी मनाया गया।

**नवाणु यात्रा**

प्रभुश्री आदिश्वर दादा जहाँ 'पूर्व नवाणु बार' पधारे तथा 23 तीर्थंकरों सहित अनेक भव्य आत्माओं ने अनन्तोनन्त बार जिस भूमि और शिखरराज की यात्राएं कर मोक्ष जैसे अनन्त सुख में लीन हुए, ऐसे पावन गिरिराज की नव्वाणु यात्रा थराद निवासी श्री लल्लुभाई जैचन्द्र दोशी एवं नैनावा निवासी श्री भूराजी लालाजी वेदमूथा परिवार द्वारा कराई जा रही है।

**थराद से गिरनार व सिद्धाचल का बड़ा यात्रा संघ**

थराद दुधवा निवासी, परम गुरु भक्त, उदार हृदयी संघपति श्री चन्दुलाल मफतलाल व्होरा की अगुवाई में थरादवासी अहमदाबाद, मुंबई, सूरत, थराद, नडियाद, आंगद, डीसा, पेपराल तथा आसपास के गाँवों से लगभग 5 हजार यात्रियों के साथ यात्रा आयोजित हुई। गुरुकुल ढाई द्वीप से प्रवेश किया। परमपूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा, पावन निश्रा और पावन शुभाशीष से चल रही नवाणु यात्रा के आयोजक थराद निवासी लल्लुभाई जैचन्द्र भाई दोशी परिवार द्वारा आयोजित बारह गाँव छःरिपालक संघ की यात्रा का प्रवेश हुआ। पालीताणा का पावन तीर्थ ऐसे पांच-पांच अद्भुत संयोगों-प्रसंगों का साक्षी बना। प्रेरक बने सुविशाल गच्छाधिपति वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेन सुरीश्वरजी म.सा., प्रसंग था गुरु सप्तमी का पावन पर्व। सभी आठ हजार से अधिक यात्रियों-गुरुभक्तों को सम्मिलित किया गया। ढाई द्वीप गुरुकुल से पूज्य गुरुदेव की निश्रा में गुरु सप्तमी के पावन दिवस पर लगभग आठ हजार से अधिक गुरुभक्तों की ऐतिहासिक विशाल शोभायात्रा आरम्भ हुई। पूरा शोभायात्रा का मार्ग ढोल, नगाड़ों, बैंडबाजों, नृत्य दल, शहनाई, मांदल, तासा से गूंजता रहा और नृत्य दल, रथ, हाथी, घोड़े के साथ अनुपम छटा बिखेरती रही। उत्साही भक्तगण प्रभु का रथ खींच रहे थे। सम्पूर्ण गगन जय जय आदिनाथ व जय जय गुरुदेव के जय घोष से गुंजायमान

था। चारों दिशाएं प्रभु आदेश्वर, गुरु श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. एवं वर्तमानाचार्य श्री जयन्तसेन सूरिजी के चित्रों से शोभायमान थी। भक्तों के उत्साह का पार न था। गुरुदेवश्री के आगे 'गुरुजी हमारे अन्तर्नाद, हमने आपो आशीर्वाद' के भाव व्यक्त करते हुए नृत्य कर रहे थे। चारों ओर थरादवासियों ने एक अति जोरदार वातावरण निर्मित किया। मार्ग में भी श्री शांतिनाथजी, श्री गौड़ी पार्श्वनाथजी, श्री आदिनाथजी जिनालय मंदिरों में विराजमान श्री जिन भगवंतों के दर्शन, नमो जिणाणं कहकर वंदना करते हुए आगे बढ़ रहे थे। यतीन्द्र भवन आते-आते जनसमूह हिलोरे ले रहा था। यतीन्द्र भवन का दृश्य भी अत्यन्त निराला और मुख्य आकर्षण का केन्द्र था। परमपूज्य गुरुदेव यहाँ विराजमान होकर हजारों नवाणु यात्रियों को पियूष पान करवा रहे हैं।

यतीन्द्र भवन किसी विशाल तीर्थ से कम प्रतीत नहीं हो रहा था। गहुली-रांगोली से सजा यतीन्द्र भवन मानों गुरुदेव सहित यात्रियों, गुरुभक्तों का अभिनंदन कर रहा था। शोभायात्रा कदम बढ़ाती तलेटी की ओर बढ़ी। सभी गुरुदेवश्री का वंदन कर सुख शाता पूछ रहे थे और शोभायात्रा और गुरु सप्तमी की जानकारी ले रहे थे। आगम मंदिर, केशरियाजी मंदिर सहित आसपास के जिनालयों के दर्शन कर शोभायात्रा तलेटी पर पहुँची। तलेटी की पावन स्पर्शना ने सभी के हृदय को प्रफुल्लित कर दिया। गुरुदेवश्री के साथ ही साथ सभी यात्रीगण भी यहाँ दर्शन, वंदन, चैत्यवंदन कर दादा के दर्शन की भावना भा रहे थे। गुरु मुख से हृदय स्पर्श तलेटी स्तवना सुनकर सभी का मन मयूर नृत्य कर उठा। तलेटी से पुनः शोभायात्रा यतीन्द्र भवन की ओर प्रस्थित हुई। गुरु-गुणानुवाद का समय रखा दोपहर में भाई-बहन की धर्मशाला पर, जहाँ गिरनार से गिरिवर थराद यात्री संघ ठहरा था। उद्देश्य था नवाणु यात्री भी अपनी नियमित यात्रा कर दादा के दरबार में पहुंचकर दर्शन, अभिषेक, पूजन के लाभ के साथ गुरु गुणानुवाद का अनुपम लाभ ले सकें।

भाई-बहन की धर्मशाला के समीप सांचोरी भवन पर दोपहर में पूज्य श्री आचार्य प्रवर श्री जयन्तसेन सूरिजी म.सा. की निश्रा में संघ माल और गुरु गुणानुवाद का आयोजन हुआ। अपने दादा गुरुदेव का स्मरण करते हुए वर्तमानाचार्यजी कहते हैं कि रत्नराज के बाल्यकाल में ही भावी महत्ता का भास प्रघोषित हो रहा था। साहस, बुद्धिमता के कार्य उज्ज्वल जीवन का संकेत कर रहे थे। विशाल भाल, तेजस्वी मुख, आजान बाहु, गौरवर्ण, नम्र, शालीन, विनय, विवेक के साथ करुणा के गुणों से युक्त,मस्ती में मस्त रत्नराज का जीवन परिवार व परिवारजनों का वल्लभ रहा।

इस अवसर पर आपश्री ने दशवैकालिक सूत्र का स्वाध्याय करते साध्वाचार का स्वरूप, ग्राह्य-अग्राह्य का विवरण, विधि निषेधों का व्यवहार, समिति-गुप्ती का प्रचार, अनुप्रेक्षा में दिनमणि के प्रकाश सा प्रकट हो गया। आचार-विचार के विपरीत व्यवहार से

होने वाले अलाभ और आचार की पवित्रता के पालन का फल प्रगट था। शुद्ध आचार पर शिथिलता का आवरण खण्ड खण्ड हो रहा था।

श्री राजेन्द्र सूरिजी की आचार दृढ़ता और अभिव्यक्ति की सरल और सुबोध प्रणाली ने जनमानस को जागृत किया। त्याग की महिमा बढ़ने लगी। शिथिलों के अड्डों से जनता को भड़काया जाने लगा, फिर भी राजेन्द्रसूरिजी की दृढ़ता, मार्ग को निष्कंटक करती रही। जावरा में क्रियोद्धार किया। राजेन्द्रसूरिजी ने शुद्ध आचार का कार्य तीव्रता से किया। आपकी चारित्र गवेषणा बड़ी प्रबल और सबल थी। दोष निवारण और शुद्धाचार पालन, स्वाध्याय, ध्यान, तप, आराधना और परिषह सहन करने में आप एक मिसाल थे। आगम ज्ञान एवं स्मरण शक्ति का प्रमाण आपके द्वारा निर्मित श्री अभिधान राजेन्द्र कोष है। पंच परमेष्ठियों का ध्यान आप नियमित करते थे। जालोर के पहाड़ पर आप तेज गर्मी में गर्म पत्थर की शिला पर, मोदरा के बीहड़ वन में आप ध्यान लगाते थे। ध्यान, तप व त्याग के बल पर भविष्य की घटनाएं भी कहते थे। जालौर चैत्य को शस्त्रागार से मुक्त करा, जीर्णोद्धार करवाया। कोरटाजी का भी जीर्णोद्धार कराया मोहनखेड़ा तीर्थ का निर्माण करवाया। पूज्य गुरुदेव ने साहित्य जगत को अभिधान राजेन्द्र कोष सहित अनेक साहित्य सृजित कर दिए। पालीताणा तीर्थ से भी गुरुदेव का प्रसंग जुड़ा है। आप पहली बार 1000 यात्रियों के साथ छःरिपालक संघ लेकर यहाँ पधारे थे।

गुरुदेव का संघ-समाज पर अनन्तोनन्त उपकार है। उनके जीवन का प्रत्येक प्रसंग समाज और संघ के हित का रहा। वर्तमान स्थिति-परिस्थितियों में हमें बहुत कुछ विचार करना है। शिथिलाचार पुनः प्रवेश कर रहा है। आत्मकल्याण तथा शुद्ध आचरण हेतु गुरुदेव ने जो सिद्धान्त दिए, हम उसी को उलट रहे हैं। श्रावक और श्रमण वर्ग में अनुशासन की सख्त आवश्यकता है। सत्य को परखने की आवश्यकता है।

इसके पश्चात् संघ माल का कार्यक्रम हुआ। श्री यतीन्द्र भवन ट्रस्ट सहित समाज, संघ, परिवारजन, संबंधीजनों ने संघपति परिवार का माला पहनाकर अभिनंदन किया। इस ऐतिहासिक संघ पर परमपूज्य गुरुदेव ने कहा कि भावों की निर्मलता, उदारता ही आत्मा को शुद्धता की ओर ले जाती है। निश्चित रूप से आज जितनी भी आत्माएं इस संघ में आई हैं और जिन्होंने गिरिराज एवं दादा के दर्शन कर पावनता को पाया है, वे अपने कर्मों की निर्जरा कर अपने मुख्य लक्ष्य को प्राप्त करेंगी। जिनशासन की प्रभावना का यह कार्य अत्यन्त अनुमोदनीय व अनुकरणीय है।

इधर पालीताणा के यतीन्द्र भवन स्थित गुरुमंदिर तथा तलेटी स्थित गुरुदेव राजेन्द्रसूरिजी म.सा. की प्रतिमा के दर्शन, वंदन, पूजन के लिए गुरुभक्त कतारबद्ध थे। सायंकाल आरती एवं अंगरचना हुई।

# श्रद्धा एवं उल्लास से मनाया गुरु सप्तमी पर्व

**मन्दसौर।** दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. की जयन्ती एवं स्वर्गारोहण तिथि गुरु सप्तमी के उपलक्ष्य में नगर में शोभा यात्रा निकाली गई एवं धार्मिक आयोजन किए गए। त्रिस्तुतिक जैन संघ, श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् एवं तरुण परिषद् के तत्वावधान में साध्वीश्री सूर्योदया श्रीजी, साध्वीश्री कैलाशश्रीजी एवं साध्वी श्री विपुलदर्शिता श्रीजी की निश्रा में श्री अजीत नाथ मंदिर से शोभायात्रा प्रारंभ होकर नगर के मुख्य मार्गों से निकली। कई स्थानों पर भक्तों ने गुरुदेव के चित्र के सम्मुख गहुली की। महिलाएं सिर पर अभिधान राजेन्द्र कोष को धारण कर चल रही थीं। दादा गुरुदेव की पालकी भी साथ चल रही थी, जिसमें गुरुदेव का चित्र लेकर बैठने का लाभ श्री बाबुलालजी पोरवाल ने लिया। पहली गहुली का लाभ श्री लक्ष्मीचंद दशरथजी चौधरी एवं श्री अभिधान राजेन्द्र कोष का चढ़ावे का लाभ श्री हस्तीमलजी चपरोत ने लिया। इस अवसर पर राजेन्द्र विलास स्थित गुरु मंदिर में गुरुपद महापूजन का आयोजन हुआ एवं श्री कन्हैयालाल कमलेशकुमार सालेचा द्वारा चांदी की आंगी चढ़ाई गई। 109 दीपक की आरती की गई।

दिन में श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद्

द्वारा धार्मिक तंबोला एवं अंताक्षरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इसी अवसर पर बही पार्श्वनाथ स्थित श्री राजेन्द्र जयन्तसेन वाटिका में श्री राजमलजी लोढ़ा परिवार द्वारा अष्टप्रकारी पूजा का आयोजन कर गुरुदेव की आरती उतारी गई। तीन दिन तक गुरु मंत्र का जाप भी हुआ जिसमें गुरुभक्तों ने 5 लाख से अधिक गुरुमंत्र का जाप किया। सर्वाधिक माला जाप करने वालों का श्री राजमलजी लोढ़ा परिवार द्वारा पुरस्कार से बहुमान किया गया। इसमें प्रथम स्थान श्रीमती कमला पारसमल चपरोत, द्वितीय स्थान श्रीमती प्रभा जैन एवं तृतीय स्थान श्रीमती विजया पारसमल लोढ़ा ने प्राप्त किया।

**दलौदा।** श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के तत्वावधान में दादा गुरुदेव की 189 वीं जन्म जयंति अवसर पर श्री शीतलनाथ जैन मंदिर से चल समारोह निकाला गया जो मुख्य मार्गों से होता हुआ पुनः मंदिरजी पहुंचा। यहाँ पूज्य गुरुदेव की आरती की गई। कार्यक्रम में श्री राजेन्द्र सुराणा, अभय सुराणा, सुरेश पितलिया, प्रदीप पोरवाल आदि समाजजन उपस्थित थे।

**कुक्षी।** गुरुदेव भगवन्त श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. का 189 वें जन्म दिवस तथा 109 वां स्वर्गारोहण दिवस नगर में धूमधाम से मनाया गया। मुख्य कार्यक्रम श्री तालनपुर तीर्थ में आयोजित कर गुरु गुणानुवाद किया गया। समारोह के लाभार्थी श्री रमणलालजी मगनलालजी

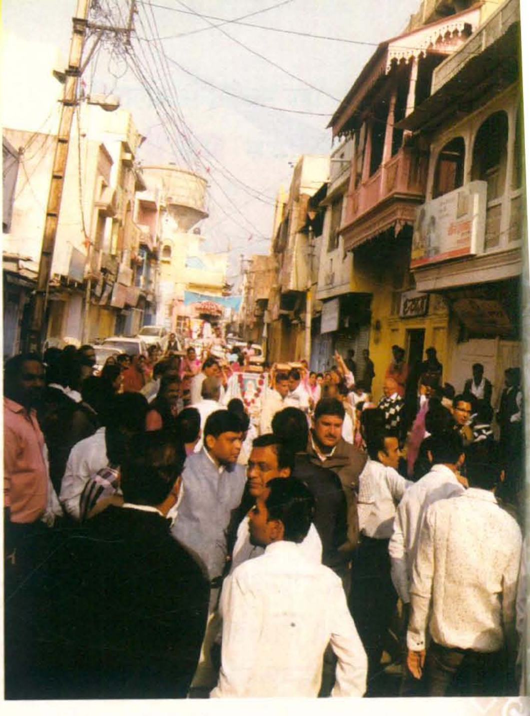

परिवार का बहुमान श्रीसंघ की ओर से किया गया।

दिनांक 15 जनवरी 2016 को गुरुदेव श्री का जाप व सामूहिक आरती कुक्षी नगर में हुई। समस्त कार्यक्रमों में श्रीसंघ व परिषद् के कार्यकर्ताओं का भरपूर सहयोग रहा। परिषद् द्वारा आयोजित परिक्षाओं में सफल विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। उक्त जानकारी श्री मनोहरलाल पुराणिक ने दी।

**जावरा।** गुरु सप्तमी अवसर पर नगर में समाजजन द्वारा कई धार्मिक आयोजन किए गए। खाचरोद नाका स्थित श्री राज राजेन्द्र वाटिका में गुरुमंदिर पर दोपहर में ध्वजारोहण, लाभार्थी श्री चंपालाल सुमेरमल खियावत (मुंबई) ने किया। श्री बाबुलाल तांतेड़ एवं श्री बाबुलाल रुणवाल परिवार द्वारा गुरुपद महापूजन किया गया। जैन नवकार ग्रुप एवं पार्श्वनाथ संगीत मंडल ने मंत्रोच्चार

के साथ पूजन पढ़ाई। गुरुदेव की प्रतिमा पर आकर्षक अंगरचना की गई। शाम को संगीतमय प्रभु भक्ति व महाआरती की गई।सुबह श्री प्रकाशचन्द्र जी कांठेड़ परिवार द्वारा स्नात्र पूजन की गई एवं प्रभावना वितरित की गई। इसके पश्चात् गुरुमंत्र का जाप किया गया। इस अवसर पर श्रीसंघ अध्यक्ष श्री बाबुलालजी तांतेड़, श्री पारस सकलेचा, नवयुवक परिषद्, तरुण परिषद्, वाटिका परिषद्, महिला एवं जयन्त ज्योति बहु परिषद्

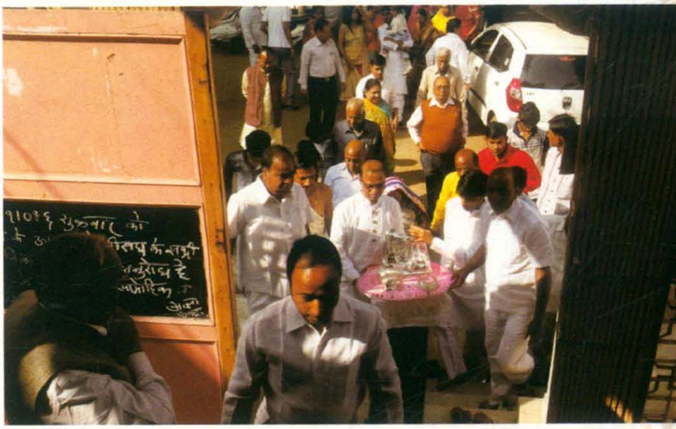

**नीमच।** गुरु सप्तमी पर्व के उपलक्ष्य में नगर के श्री राजेन्द्र सूरि ज्ञान मंदिर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रातः प्रभात फेरी निकाली गई। नवकारसी के पश्चात् दादा गुरुदेव का भव्य जुलूस पूरे नगर में निकाला गया। जुलूस की पूर्णाहुति पर गुरुदेव की वासक्षेप पूजा का लाभ श्री नवीनजी पोरवाल परिवार ने लिया। स्वामीवात्सल्य एवं श्री गुरुपद महापूजन का लाभ स्व. चन्दूबाई धर्मपत्नि श्री कन्हैयालालजी पोरवाल परिवार ने लिया। स्व. श्री राजमलजी पोरवाल द्वारा गुरुदेव की प्रतिमा पर चांदी की आंगी भेंट की गई। इस अवसर पर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के अध्यक्ष एवं समस्त सदस्यगण, महिला परिषद् की सदस्याएं उपस्थित थीं। रात्रि में त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री अशोक नांदेचा ने गुरुदेव की जीवन पर प्रकाश डाला। महिलाओं द्वारा संयुक्त रूप से भक्ति की गई एवं प्रश्न मंच का आयोजन किया। अन्त में 108 दीपों से गुरुदेव की आरती उतारी गई। सभी कार्यक्रमों में तरुण व नवयुवक परिषद् के सदस्यों ने उत्साह से सहयोग प्रदान किया।

# रतलाम नगरे जयंतसेन धाम पर गुरू सप्तमी पर्व धूमधाम से मनाया गया

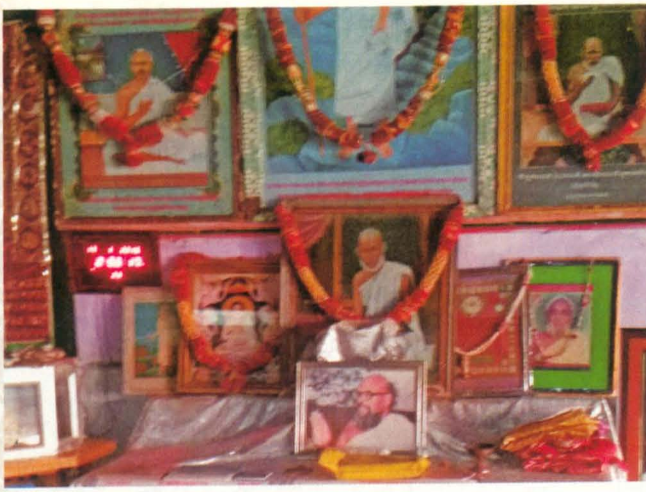

**रतलाम।** वर्तमानाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से नवनिर्मित तीर्थ ''जयंतसेन धाम'' पर विश्व पूज्य प्रातः स्मरणीय दादा गुरूदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. की 189 वीं जन्म जयंती एवं 109 वां स्वर्गारोहण दिवस गुरूसप्तमी महापर्व के रूप में मनाया गया । इस शुभ अवसर पर प्रात 8.00 बजे सुविधिनाथ जिनमंदिर जी नीमवाला उपाश्रय पर गुरूपद महापूजन के भव्य आयोजन से गुरूसप्तमी पर्व का शंखनाद प्रारम्भ करते हुए प्रातः 10.00 बजे भव्य वरघोड़े के रूप में बैंडबाजो के साथ गुरूदेव का चित्र बग्गी में विराजमान कर गवहली की गाडी के साथ मस्तक पर कलश धारण करती हुई महिला परिषद एवं समाजजनों के साथ चल समारोह शहर के विभिन्न मार्गों से होता हुआ ''जयंतसेन धाम'' सागोद रोड पर पहुँचा तत्पश्चात परिषद के तत्वाधान में सामुहिक गुरूवंदन किया गया । परिषद साथी ने इस अवसर पर दृढ तप यात्रा कर पधारे तपस्वियों सर्वश्री पंकज खेड़ावाला, नितेश तलेरा, विकास गादिया, विवेक लुणावत, सुमित सुराणा, राजेश सुराणा, उमेश नावेड़ा, संदीप लुणावत, दिनेश बम रिना कोठारी आदि का बहुमान किया गया। इस शुभ अवसर पर त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रीय परामर्शदाता एवं शहर विधायक श्री चैतन्यजी काश्यप की गरिमामयी उपस्थिति में परिषद परिवार ने पुष्पगुच्छ अर्पितकर उनके जन्म दिवस पर शुभकामनाए अर्पित की । श्री काश्यप ने कहा कि संघ की

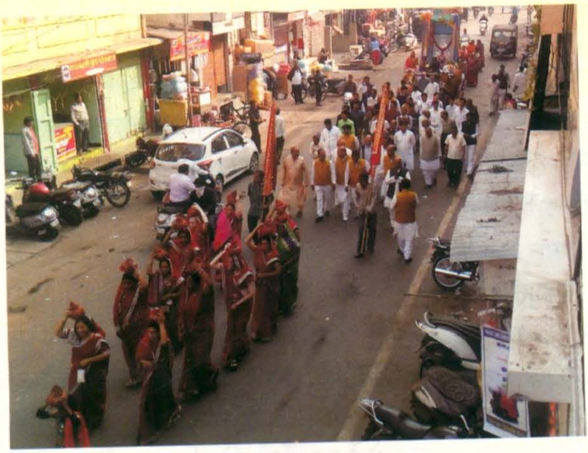

मजबूती के लिए एकता एवं अखंडता की प्रबल आवश्यकता है तत्पश्चात गुरू आरती की बोली 18900 रू का लाभ श्री प्रो.वी. के. जैन सा. परिवार ने लिया। इस शुभ अवसर पर काश्यपजी के साथ परिषद के राष्ट्रीय जन कल्याण मंत्री श्री सुशीलजी छाजेड़, केन्द्रीय प्रतिनिधि राजेन्द्रजी लुणावत, सतीशजी खेडावाला, परिषद के अध्यक्ष पंकज राठौर, सचिव राजकमल दुग्गड़, उपाध्यक्ष श्री राजेश खाबिया, त.प. अध्यक्ष अभय बरबोटा, कोषाध्यक्ष निलेश लोढा, संगठनमंत्री विनय सुराणा, राजेश बम सन्नी पोरवाल, सुमित सुराणा, सुरेन्द्र गांग, प्रवीण संघवी, सुरेश बरमेचा, धनपाल औरा, प्रकाश घोचा, शेखर घोचा, अभिषेक खाबिया, संजय कोठारी, उपेन्द्र कोठारी, राजेन्द्र चौपड़ा आदि परिषद व समाजजन के बड़ी संख्या में मौजूद थे । इस शुभ अवसर पर मार्गदाता के रूप में सर्वश्री मदनलालजी सुराणा, कांतिलालजी सरसीवाला गेंदालालजी सखलेचा, मन्नालालजी चौपड़ा, अम्बालालजी लुणावत, बाबूलालजी लुणावत, कांतिलालजी दुग्गड, अभयजी सकलेचा, श्रेणिक सखलेचा आदि की गरिमामयी उपस्थिति में पर्व मनाया गया ।

इस महापर्व पर निर्माणाधीन पावनतिर्थ ''जयंतसेन धाम'' पर सकल त्रिस्तुतिक श्रीसंघ एवं आमंत्रित अतिथियों गुरूभक्तों के स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया साथ ही परिषद को मजबूती प्रदान करते हुए एवं शाश्वत धर्म पत्रिका घर-घर पहुँचे इस हेतु विशेष अभियान चलाया गया। उपरोक्त जानकारी परिषद सचिव राजकमल दुग्गड ने दी ।

# गुरु मंदिरों पर वार्षिक ध्वजा चढ़ाई गई

**मन्दसौर।** त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के तत्वावधान में नगर के तीन गुरु मंदिरों में वार्षिक ध्वजारोहण के समारोह विधि विधान एवं दादा गुरुदेव के जय-जयकारे के साथ सम्पन्न हुए। सामूहिक गुरुवंदन किया गया।

आयोजनों के क्रम में प्रथम जनकुपुरा में श्री पार्श्व पद्मावती मंदिर एवं गुरु मंदिर पर ध्वजा श्री मिश्रीलालजी हींगड़ परिवार की ओर से चढ़ाई गई। श्री गजेन्द्रजी एवं हेमन्तजी द्वारा अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई गई। द्वितीय श्री पार्श्व राजेन्द्र गुरु मंदिर पर श्री मदनलालजी चपरोत परिवार के श्री पारसजी, हरीशजी एवं राजेन्द्रजी चपरोत द्वारा ध्वजा चढ़ाई गई। चपरोत परिवार द्वारा गुरु वंदन व आरती के बाद नवकारसी का आयोजन किया गया। विधि विधान श्री निकित मेहता ने कराया। तृतीय राजेन्द्र विलास के गुरु मंदिर पर श्री पारसमलजी, श्री जिनेन्द्रकुमार जी डोसी परिवार द्वारा गुरु वंदन, आरती, मंत्रोच्चार के साथ ध्वजारोहण श्री वीरेन्द्र डोसी ने किया। विधि विधान श्री शांतिलालजी धींग व श्री निकित मेहता ने सम्पन्न कराया। तीनों स्थानों पर बड़ी संख्या में गुरु भक्त उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि उक्त तीनों गुरु मंदिरों की प्रतिष्ठा पू. जैनाचार्य श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा एक ही दिन में सम्पन्न करवाई गई थीं।

**भाटपचलाना।** सुविशाल गच्छाधिपतिजी के आशीर्वाद से भाटपचलाना में दिनांक 16 दिसम्बर 2015 को श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर पर बुपक्या परिवार द्वारा ध्वजा चढ़ाई गई। ध्वजा जी का वरघोड़ा श्री मांगीलालजी बुपक्या के निवास से आरम्भ हुआ। नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ यह मंदिर पहुँचा जहाँ ध्वजा जी को बधाया गया। मंदिर में सत्तर भेदी की पूजन श्री पुखराजमलजी व्होरा द्वारा पढ़ाई गई एवं ध्वजा चढ़ाई गई। इस अवसर पर श्रीसंघ के समस्त सदस्यगण उपस्थित थे।

## जावरा श्रीसंघ के नवीन पदाधिकारियों की घोषणा

**जावरा।** श्रीसंघ के आदेशानुसार विगत 25 नवंबर 2015 को जावरा श्रीसंघ के नवीन पदाधिकारियों की घोषणा की गई। इसमें अध्यक्ष श्री बाबुलाल तांतेड़, महासचिव-श्री प्रवीण कोलन, कोषाध्यक्ष-श्री राधेश्याम सुराणा, संरक्षक-श्री कन्हैयालालजी पटेल साहब, श्री शांतिलालजी कावड़िया, श्री शांतिलालजी दसेड़ा, परामर्शदाता-श्री राजमलजी धाड़ीवाल, श्री तेजमलजी मेहता, श्री सुरेन्द्रजी पोखरना, डॉ. सुरेशजी मेहता, श्री इन्दरमलजी दसेड़ा, श्री अनिलजी दसेड़ा, उपाध्यक्ष-श्री प्रकाशजी मोदी,

श्री प्रकाशजी कांठेड़, श्री अजीत जी चत्तर, श्री महेन्द्रजी कोलन, सचिव श्री हेमेन्द्रराज चोरड़िया (नानुभाई), सह कोषाध्यक्ष-श्री अशोक जी बोरदिया, संगठन सचिव-श्री विजयजी दसेड़ा, सांस्कृतिक सचिव-श्री सुरेशजी पगारिया, प्रचार सचिव-श्री पारसजी सकलेचा बनाए गए हैं। कार्यकारिणी सदस्य के रूप में श्री सरदारमलजी धाड़ीवाल, श्री विजयकुमार आंचलिया, श्री नगीनलालजी सकलेचा, श्री प्रकाशजी मारवाड़ी, श्री प्रदीपजी सिसोदिया, श्री सुरेशजी चौरड़िया (बोरखेड़ा वाला), श्री विजयजी तातेड़, श्री रमणीकजी मेहता, श्री प्रकाशजी जैन जैन साहब पटवारी, श्री अतुलजी सुराणा, श्री अरविन्दजी बोहरा (रियावन वाला) एवं परिषद् परिवार की शाखाओं के पदेन अध्यक्ष, सचिव कार्यकारिणी के सदस्य होंगे। उक्त जानकारी प्रचार सचिव पारस सकलेचा ने दी। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक एवं परिषद् परिवार की ओर से पदाधिकारियों को बधाई प्रेषित की गई है।

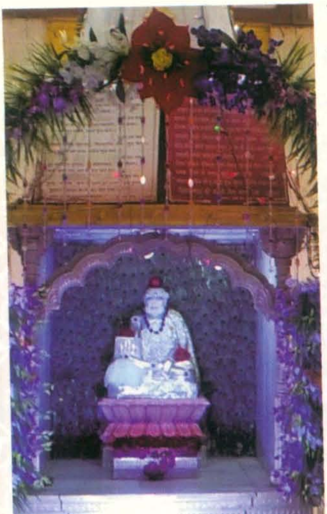

**मन्दसौर।** मन्दसौर श्रीसंघ एवं परिषद् परिवार की विनती पर गुरु सप्तमी महोत्सव में सान्निध्यता प्रदान करने हेतु साध्वीश्री सूर्योदयाश्रीजी आदि ठाणा 3 दलौदा से पदार्पण कर 11 जनवरी 2016 को मन्दसौर में भव्य नगर प्रवेश हुआ। साध्वीजी के प्रवेश पर शोभायात्रा निकाली गई जो नगर के मुख्य मार्गों से होती हुई जीवागंज स्थित श्री राजेन्द्र विलास पर पहुँचकर धर्मसभा के रूप में परिवर्तित हुई।

धर्मसभा में साध्वीश्री सूर्योदयाश्रीजी के मंगलाचरण के पश्चात् सा. विपुलदर्शनाश्रीजी ने अपने प्रवचन में मनुष्य जीवन और समय की कीमत समझकर धर्म आराधना से आत्मावलोकन कर अच्छे कार्य करने की प्रेरणा दी। दिनांक 12 जनवरी को त्रिस्तुतिक जैन श्वे. संघ एवं परिषद् परिवार के तत्वावधान में श्रीमद् विजययतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। इस अवसर पर वर्धमान स्थानकवासी संप्रदाय की सतियाँ श्री रमणिक कुंवरजी म. आदि साध्वी मंडल ने भी निश्रा प्रदान की। साध्वीश्री रमणिक कुंवरजी ने गुरुदेव श्री

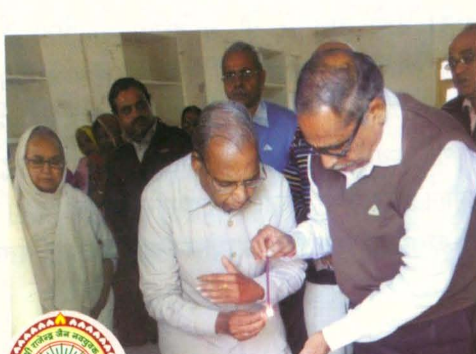

यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के जीवन पर प्रकाश डाला। साध्वीश्री सूर्योदयाश्रीजी म. के मंगलाचरण के बाद श्री विपुलदर्शना श्रीजी ने गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ने गुरुदेव के त्रिस्तुतिक संघ एवं गच्छ में किये गये कार्यों की जानकारी दी। इस अवसर पर मन्दसौर, दिल्ली, कोटा, राजगढ़, देवास आदि स्थानों के मंदिर व स्थानक के नरनारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

---

## छात्रा कु. मनाली सगीतरा का भावभीना स्वागत

**खाचरौद।** श्री राज राजेन्द्र विद्या मंदिर खाचरौद की छात्रा कुमारी मनाली सगीतरा ने तुमकुर कर्नाटक में स्कूल गेम्स फेडरेशन आफ इंडिया के तत्वावधान में आयोजित 61वें राष्ट्रीय स्कूल गेम्स 2015-16 में मध्यप्रदेश दल के सदस्य के रूप में भाग लिया एवं खो-खो प्रतियोगिता (गर्ल्स अंडर सेवन्टीन ग्रुप) में सफलता अर्जित की। मनाली के लौटने पर विद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षक परिवार ने उनका हार्दिक एवं भावभीना स्वागत किया।

---

**भीमावरम।** दक्षिण भारत के आंध्रप्रदेश के भीमावरम के समीप स्थित आदिनाथ भगवान के नूतन जिनमंदिर पर प्रथम कार्तिक पूर्णिमा पर मेले का आयोजन उल्लासपूर्वक किया गया। इस अवसर पर सुदूर प्रांतों से भी बड़ी संख्या में भक्तगण दर्शन, सेवा, पूजा आदि धर्माराधना हेतु यहाँ पधारे। इस मेले के आयोजन का लाभ संघवी शा कांतिलालजी छगनराजजी वजावत परिवार तणुकु, आहोरवालों ने लिया। वार्षिक चढ़ावों में भी भक्तों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। वार्षिक अखण्ड दीपक के चढ़ावे का लाभ श्री जड़ावी ज्वेलर्स तणुकु, आहोरवालों ने लिया। मेले की सम्पूर्ण व्यवस्था में श्री जैन युवा संगठन गुन्टूर मंडल के सदस्यों का सराहनीय योगदान रहा। इसी तीर्थ पर गुरु सप्तमी पर भी मेले का आयोजन किया गया।

---

**थाने।** ठाणे तीर्थ से श्री शांतिधाम मानपाड़ा 21 वर्षीय पदयात्रा समापन निमित्ते श्री के.के.संघवी के संयोजन में दिनांक 31 दिसम्बर 2015 को रात्रि में श्री राजेन्द्रसूरि जी म.सा. की अखण्ड 1065 महागुरु आरती श्री संघवी के निवास स्थल सुव्रत अपार्टमेंट में आयोजित की गई। स्थानीय एवं थाने के उपनगरों यथा प. मुंबई आदि स्थलों से बड़ी संख्या में पधारकर सभी ने बड़े हर्ष से आरती का लाभ लिया। विदित हो कि 10 अगस्त 1995 से प्रति गुरुवार को घर-घर में गुरु आरती के आयोजन का यह क्रम निरंतर चल रहा है।

प्रकाशनार्थ

## कु. आयुषी चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम

मुंबई - आचार्य श्री रत्नसुंदर सूरिजी म.सा. की 300 वीं पुस्तक लोकार्पण समारोह के अवसर पर आयोजित साहित्य सत्कार समारोह के अंतर्गत मुंबई उपनगरकी पाठशालाओं के लिए रत्न आर्ट चित्रकला प्रतियोगिता में आहोर निवासी कु. आयुषी (उम्र 12 वर्ष) पुत्री - दिनेश मांगीलालजी जैन- डोंबिवली) ने तीर्थंकर निर्वाण कल्याणक का अनुपम चित्र बनाकर प्रथम क्रमांक प्राप्त किया। कु. आयुषी को स्मृति चिन्ह एवं नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

कु. आयुषी द्वारा की गई चित्रकारी एवं उससे प्राप्त सार्टिफिकेट

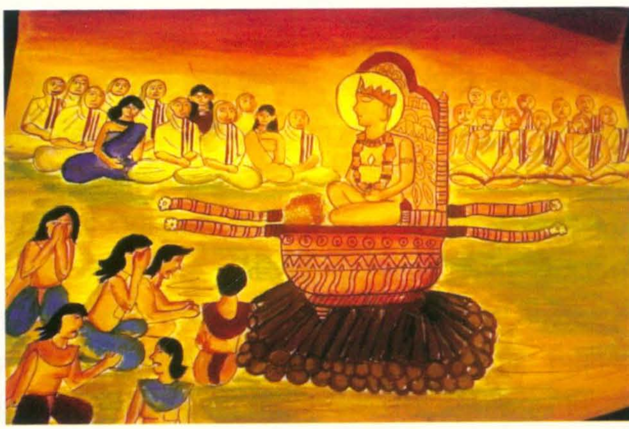

## आहोर जैन प्रवासी संघ-महाराष्ट्र का वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न

आहोर जैन प्रवासी संघ-महाराष्ट्र का 22 वाँ वार्षिक सम्मेलन 27 दिसम्बर को कात्रेज तीर्थ, पुणे में सम्पन्न हुआ। मंगलाचरण व दीप प्रज्वलन के बाद बैठक में वर्तमान की सामाजिक परिस्थितियों पर विचार-विमर्श हआ। दोपहर के सत्र में तपस्वियों का बहुमान, विद्यार्थी प्रतिभा सन्मान व महिलाओं एवं बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं रखी गयी। युवाओं के लिए आयोजित क्रिकेट लीग में पुणे की टीम विजेता घोषित की गयी। सम्मेलन में पुरे दिन स्वामीवात्सल्य का लाभ पुणे के आहोर निवासियों ने लिया। साथ ही व्यवस्था में भी उनका योगदान सराहनीय रहा।

# परिषद प्रांगण से

## केन्द्रीय कार्यालय का परिपत्र

दिनांक 01.01.2016

परम आदरणीय बंधुवर

सादर जय जिनेन्द्र!

सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल साधु-साध्वीवृंद सुखशातापूर्वक श्री पालीताणा महातीर्थ में विराजित हैं। वहाँ से पूज्य गुरुदेवश्री ने सभी श्रीसंघ व परिषद् परिवार को धर्मलाभ कहा है।

गुरु जन्मभूमि श्री पेपराल तीर्थ के यशस्वी ऐतिहासिक चातुर्मास के बाद पूज्यश्री की निश्रा में थराद से श्री शंखेश्वर तीर्थ छःरि पालक यात्रा संघ में 1500 यात्री, श्री वल्लभीपुर से पालीताणा छःरिपालक संघ में 2900 यात्री, श्री अयोध्यापुरम् से पालीताणा छःरिपालक संघ में 500 यात्रियों का आयोजन सम्पन्न हुआ। श्री पालीताणा नव्वाणुं यात्रा में 1800 तपस्वी यात्रारत हैं। साथ ही छट्ठ तप कर सात यात्रा में 320 तपस्वियों द्वारा यात्रा की गई। सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के जन्मोत्सव पर समस्त शाखाओं ने स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियां आयोजित कीं। अनन्त उपकारी दादा गुरुदेव का जन्म-स्वर्गारोहण महोत्सव गुरु सप्तमी पर्व के रूप में पौष सुदी सप्तमी 16 जनवरी 2016 को मनाया। पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरु मंत्र का जाप 'ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वर गुरुभ्यो नमः' करने-कराने के लिए शाखाएँ प्रयासरत रहीं। इसके पूर्व पौष सुदी 3 को हमारी संस्था के संस्थापक प. पूज्य आचार्य देवेश श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का एवं सुदी 4 को उपाध्याय प्रवर श्री मोहनमुनिजी म.सा. का स्वर्गारोहण दिवस मना।

परिषद् के प्राणदाता पूज्य गुरुदेव आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का 63वाँ संयमोत्सव माघ सुदी तीज 11 फरवरी 2016 को मनाया जा रहा है। उत्कृष्ट क्रिया पालक एवं असीम ज्ञान के धनी कृपावंत आचार्यश्री भक्तों के लिए पारसमणि-चिन्तामणि के समान ही हैं। ऐसे पारसमणि सम गुरुवर के चरण स्पर्श मात्र से चाहो तो स्वयं की आत्मा को कुंदन बना लो, चाहो तो चिन्तामणि रत्न के समान इनकी कृपा मात्र से मनवांछित पा लो। जैनी सदियों से उत्तम रत्नों का ही संग्राहक रहा है,

कंकर, पत्थर का नहीं। वर्तमान समय अपने गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण एवं निष्ठा के साथ समर्पित होने का है। हमें आत्मावलोकन करते हुए जीवन की दिशा तय करना है। सद्गुरु का आलंबन और आश्रय की ओर प्रवृत्त होना वास्तविक परिणामरूप में जीवन के समस्त भटकाव से निवृत्ति का हेतु है। वर्तमानाचार्य देवेश के रूप में ऐसे युग प्रभावक राष्ट्रसंत को पाकर वास्तव में हम सौभाग्यशाली हैं।

केन्द्र अपनी समस्त शाखाओं से आह्वान करता है कि माघ सुदी तीज 11 फरवरी 2016 को गुरुदेव आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के संयमोत्सव पर जिनालय में सामूहिक स्नात्र पूजन एवं माघ सुदी त्रयोदशी 20 फरवरी 2016 को उनके पाटोत्सव पर सामूहिक सामायिक आराधना का आयोजन कर गुरुभक्ति के माध्यम से जीवन को धन्य करें।

* **शाश्वत धर्म सदस्यता:-** केन्द्रीय परिषद् के तत्वावधान में शाश्वत धर्म प्रसार वृद्धि अभियान संचालित है। प्रत्येक शाखा परिषद् स्थानीय स्तर पर शाश्वत धर्म के कम से कम 10 नवीन सदस्य बनाने के लक्ष्य की पूर्ति करें।
* **सदस्यों की सूची :-** सभी परिषद् शाखाएं अपने पदाधिकारियों एवं सदस्यों के नाम, पते, मोबाइल नंबर सहित जल्द से जल्द महामंत्री कार्यालय या राष्ट्रीय कार्यालय पर प्रेषित करें।
* **सम्यग् ज्ञान अभिवृद्धि योजना:-** श्री यतीन्द्र ज्ञानपीठ द्वारा सम्यग् ज्ञान अभिवृद्धि योजना का प्रारंभ किया गया है। ज्ञानपीठ द्वारा जैन धार्मिक शिक्षा के लिए 1 से 5 पाठ्यक्रम का संचालन किया जाता है। इन पाठ्यक्रमों की परीक्षा ज्ञानपीठ द्वारा प्रतिवर्ष जुलाई में ली जाती है। इस वर्ष से परीक्षा में पांचों पाठ्यक्रमों में 80 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले समस्त प्रतिभागियों का बहुमान क्रमशः रु.150, रु.200, रु.250, रु.500 एवं रु. 1000 के पारितोषित से श्री यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ द्वारा किया जाएगा।
* **लाभार्थी :-** परमपूज्य राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से सम्यग् ज्ञान अभिवृद्धि योजना का तीन वर्षों का सम्पूर्ण लाभ प.मातुश्री विजयाबेन बचुभाई चीमनलाल धरू परिवार (पेपराल-थराद) द्वारा लिया गया है। इस योजना में भाग लेने के लिए स्थानीय धार्मिक पाठशाला के शिक्षक-शिक्षिकाओं के अलावा इनसे भी सम्पर्क किया जा सकता है- रमेशभाई धरू मुंबई-09322227033 (राष्ट्रीय अध्यक्ष परिषद्) एवं श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा-09406839111 (अधिष्ठाता, श्री यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ)
* आचार्यश्री की निश्रा में शासन प्रभावना के आगामी कार्यक्रम

**श्री बागरा नगर में आगामी आयोजन**

* मिती माघ सुदी तीज दि. 11 फरवरी 2016 प.पू. आचार्यश्री का 63 वाँ दीक्षा दिवस समारोह।
* मिती माघ सुदी तेरस दि. 20 फरवरी 2016 प.पू. आचार्यश्री का 33 वाँ आचार्य पदारोहण दिवस समारोह।
* मिती माघ सुदी तेरस दि. 20 फरवरी 2016 बागरा जिन मंदिर शताब्दी समारोह।

*** श्रद्धांजलि :-**

प.पू.साध्वी श्री मोक्षपूर्णाश्रीजी म.सा. * श्री इन्दरमलजी कांकरिया, लाबरिया
श्री ज्ञानचंदजी सुराणा, रतलाम * श्रीमती कमलादेवी संघवी, जावरा

**: भवदीय :**

| रमेश भाई धरू | ओ.सी.जैन | अशोक श्रीश्रीमाल |
|---|---|---|
| राष्ट्रीय अध्यक्ष | वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष | राष्ट्रीय महामंत्री |

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् परिवार

## परिषद् का स्थापना दिवस मनाया

**उज्जैन।** अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के 57 वें स्थापना दिवस पर पूज्य आचार्य की प्रेरणा से श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर, नमक मंडी पर 25 नवंबर को। प्रातः सभी सदस्यों द्वारा सामूहिक स्नात्र पूजन, परिषद् ध्वज गीत के साथ ध्वज वंदन किया गया। इस अवसर पर धर्म सभा में परिषद् अध्यक्ष श्री अभिषेक सेठिया, प्रांतीय सहमंत्री श्री संजय कोठारी, महिला परिषद् की राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती गुणमाला बेन नाहर, श्रीसंघ कोषाध्यक्ष श्री राजमलजी कोठारी, महिला परिषद् की प्रांतीय प्रतिनिधि श्रीमती कुसुमबेन गिरिया, बहु परिषद् की श्रीमती जयाबेन नाहर ने अपने विचार प्रस्तुत किए। आभार शाखा सचिव श्री नितेष नाहटा ने व्यक्त किया।

इस अवसर पर श्री माणकलालजी रूनवाल, श्री विजयजी राठौड़, श्री प्रमोदजी पटवा, श्री रितेशजी खाबिया, श्री मुकेश जी बाफना, श्रीमती लीलाबेन रूनवाल, श्रीमती सुशीला बाफना, श्रीमती दाखाबेन श्रीश्रीमाल, श्रीमति कमलाबेन बाफना, श्रीमति चन्दनबाला बेन खाबिया, श्रीमती मेघाजी खाबिया, श्रीमती विनिता बाफना आदि ने शुभकामनाएँ दीं। यह जानकारी प्रचार सचिव श्री वीरेन्द्र गोलेचा ने दी।

# खंडन

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् विशुद्ध रूप से एक ऐसी सामाजिक एवं धार्मिक संस्था है जो परम पूज्य गुरुदेव श्री की पावन प्रेरणा और आशीर्वाद से विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करती है। इसका अपना स्वयं का अस्तित्व है तथा श्री संघ के निर्देशन में समाज हित में अपनी अन्य इकाईयों यथा महिला परिषद्, तरुण परिषद्, बालिका परिषद् के साथ मिलकर अपने निर्धारित व नियमित कार्यक्रमों को अपनी शाखाओं के माध्यम से आयोजित एवं क्रियान्वित करती है।

परिषद् न तो दलबंदी में हिस्सा लेती है और न ही समाज में हानि हो ऐसे कार्य करती है। पिछले दिनों राजगढ़ क्षेत्र में गुरु सप्तमी के आयोजन को लेकर एक गुमनाम पत्र कथित रूप से श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्, श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद् के नाम से जारी हुआ है। यह पत्र न तो परिषद् के किसी सदस्य ने , न ही किसी शाखा ने जारी किया है और न ही इस पत्र का परिषद् की किसी इकाई से कोई सम्बन्ध है।

अतः परिषद् यह स्पष्ट करते हुए खंडन करती है कि इस प्रकार का कोई पत्र परिषद् ने जारी नहीं किया है।

---

**हुबली**। कर्नाटक सरकार द्वारा विकलांगों की सेवा के लिए विकलांग दिवस पर राज्य स्तरीय सम्मान से सम्मानित आल इंडिया यूथ फेडरेशन महावीर लिंब सेन्टर के संस्थापक अध्यक्ष जैन समाज के सितारे महेन्द्र सिंघी का अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के पदाधिकारियों ने बधाई देकर सम्मान किया। इस दौरान परिषद् के अध्यक्ष ललित मांडोत, उपाध्यक्ष किरण जैन, कार्यदर्शी नीलेश जैन, सहमंत्री सजने सेठ, कोषाध्यक्ष सुभाष गांधीमुथा, योगेश, संदीप, गुणवंत, आकाश, भवेश,राजू, कमलेश, नितेश आदि उपस्थित थे।

---

## श्री सकलेचा अध्यक्ष, धाड़ीवाल महामंत्री बने

महिदपुर। कार्तिक पूर्णिमा परिषद् स्थापना दिवस पर अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की महिदपुर शाखा के चुनाव सम्पन्न हुए। इसमें सर्वानुमति से श्री माणकलाल छाजेड़ संरक्षक, श्री श्रेणिक सखलेचा अध्यक्ष, श्री सुरेश छजलानी उपाध्यक्ष, श्री नरेन्द्र धाड़ीवाल महामंत्री बनाये गए। सात सदस्यीय कार्यकारिणी बनाई गई है। स्थापना दिवस पर परिषद् के उद्देश्यों के अनुरूप कार्य करने का संकल्प लिया गया।

---

## *श्री छाजेड़ जैन सोश्यल ग्रुप के अध्यक्ष बने*

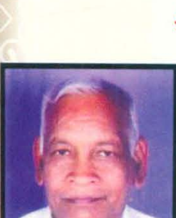

महिदपुर। जैन सोश्यल ग्रुप की बैठक में वर्ष 2016-17 के लिए श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के संरक्षक श्री माणकलाल छाजेड़ का महिदपुर रीजन के ग्रुप अध्यक्ष पद हेतु सर्वानुमति से चयन किया गया। आपके मनोनयन पर नरेन्द्र धाड़ीवाल, सुरेश छजलानी, श्रेणिक सखलेचा आदि ने बधाई देते हुए हर्ष व्यक्त किया है।

**इन्दौर।** सम्पूर्ण परिषद् परिवार द्वारा आचार्य सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. के संयम दिवस माघ सुदी 4 गुरुवार 11.02.2016 को सामूहिक स्नात्र पूजन तथा माघ सुदी 13 शनिवार 20.02.2016 को आचार्यपद पाटोत्सव पर सामूहिक सामायिक का आयोजन करेगा। परिषद् की विभिन्न शाखाएं इन अवसरों पर गुरु गुणानुवाद सभा सहित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करेंगी।

**विजयवाड़ा।** दिनांक 6 दिसम्बर 2015 को नवयुवक परिषद् विजयवाड़ा शाखा के चुनाव सुचारु रूप से सम्पन्न हुए। सर्व सहमति से श्री नरपत कुमार गणेशमलजी वेदमूथा अध्यक्ष, श्री दिनेशकुमार जवानमलजी भंडारी उपाध्यक्ष, श्री मेघराज हस्तीमलजी भंडारी महामंत्री, श्री पुरुषोत्तम कुमार वेजराज जी हुक्माणी सहमंत्री, श्री विक्रम कुमार रिखबचंदजी पालगोता संयोजक मनोनीत किए गए।

अध्यक्ष
**श्री नरपत वेदमूथा**

उपाध्यक्ष
**श्री दिनेश भंडारी**

महामंत्री
**श्री मेघराज भंडारी**

सहमंत्री
**श्री पुरुषोत्तम हुक्माणी**

कोषाध्यक्ष

संयोजक
**श्री विक्रम पालगोता**

# जैन विश्व

**अहमदाबाद।** जैन समाज के नेता श्री गौतम शाह को सर्व सहमति से अहमदाबाद नगर का महापौर बनाया गया है। इस आशय का ऐलान गुजरात की मुख्यमंत्री श्रीमती आनंदीबेन पटेल की उपस्थिति में भाजपा की पार्लियामेंट कमेटी ने किया है। इससे जैन समाज में प्रसन्नता है।

**बड़ावदा।** इन्दौर से देपालपुर विहार के दौरान जैन साध्वियों पर असामाजिक तत्वों द्वारा शराब की बोतलें फेंके जाने की घटना पर स्थानीय जैन समाज एवं ऑल इंडिया जैन जर्नलिस्ट एसोसिएशंस (आइजा) ने आक्रोश व्यक्त करते हुए दोषियों को तत्काल गिरफ्तार कर जैन साधु-साध्वियों को विहार के दौरान पुलिस सुरक्षा प्रदान करने की मांग की है।

**सिवनी।** खरतरगच्छाचार्य श्री जिनपीयूषसागर सूरीश्वरजी म.सा. एवं अन्य साधु-साध्वी की निश्रा में 20 दिसम्बर 2015 को सिवनी से कुछ किलोमीटर दूर स्थित सिवनी फिल्टर प्लांट के सामने कुकलाह रोड़ पर 40 एकड़ भूमि में तीर्थ भूमि अधिग्रहण विधि सह तीर्थ भूमि शुद्धि कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस भूमि पर म्यूजियम, गुरुकुल, स्कूल-कॉलेज एवं गौशाला का निर्माण किया जाएगा।

**कोयम्बतूर।** कोयम्बतूर जैन महासंघ द्वारा एक विशेष कार्यक्रम के दौरान जिलाधीश श्रीमती अर्चना पटनायक द्वारा जैन समाज के सदस्यों को अल्पसंख्यक प्रमाण पत्र वितरित किए गए। कोयम्बतूर जैन महासंघ द्वारा लगभग दो हजार अल्पसंख्यक प्रमाण पत्र जिला प्रशासन द्वारा जारी करवाए गए हैं।

**मुंबई।** आचार्य श्री रत्नसुंदर सूरिजी म.सा. की 300 वीं पुस्तक के लोकार्पण अवसर पर आयोजित साहित्य सत्कार समारोह में मुंबई उपनगर की पाठशालाओं के लिए रत्न आर्ट चित्रकला प्रतियोगिता में आहोर निवासी 12 वर्षीय कु. आयुषी पुत्री श्री दिनेश मांगीलालजी जैन डोंबिवली ने तीर्थंकर निर्वाण कल्याणक का अनुपम चित्र बनाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। कु. आयुषी को स्मृति चिन्ह एवं नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

**आहोर।** आहोर जैन प्रवासी संघ महाराष्ट्र का 22 वां वार्षिक सम्मेलन 27 दिसम्बर को कात्रेज तीर्थ, पूणे में सम्पन्न हुआ। मंगलाचरण व दीप प्रज्जवलन के बाद बैठक में वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों पर विचार विमर्श हुआ। सम्मेलन में पूरे दिन स्वामीवात्सल्य का लाभ पूणे के आहोर निवासियों ने लिया।

**ठाणे।** श्री के.के.संघवी के संयोजन में थाने तीर्थ से शांतिधाम मानपाड़ा पदयात्रा में हजारों पदयात्रियों ने तीर्थयात्रा के साथ स्वास्थ्य लाभ लिया। 500 से अधिक पदयात्रियों ने रात्रि भोजन, आजीवन टी.वी. सिनेमा, कंदमूल, गुटखा का त्याग किया। 36 पदयात्रियों ने आजीवन ब्रह्मचर्य के नियम लिए। बिना चातुर्मास शांतिधाम में 44 सिद्धितप, 174 वर्षीतप, 55 श्रेणी तप, 108 गणधर तप, 108 सांकली अट्ठाई, 72 सामूहिक मासक्षमण तप निर्विघ्न सम्पन्न हुई।

**उदयपुर।** अहिंसा विचार मंच के अध्यक्ष एवं साहित्यकार डॉ. श्री दिलीप धींग की

पहल पर नगर निगम उदयपुर की ओर से लगातार दूसरे वर्ष भी भगवान श्री पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक के दिन अहिंसा दिवस घोषित किया गया। जारी आदेश के अनुसार श्री पार्श्वनाथ जयंती पर उदयपुर नगर परिक्षेत्र के समस्त बूचड़खाने बन्द रहे और मांस-मछली विक्रय निषिद्ध रहा।

**हुबली।** केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री मेनका गांधी ने अपने हुबली प्रवास के दौरान किम्स स्थित महावीर लिंब सेन्टर का अवलोकन किया। इस दौरान विकलांगों को कृत्रिम पांव लगाए व लिंब सेन्टर के अध्यक्ष श्री महेन्द्र सिंघी से चर्चा की। इस अवसर पर क्षेत्र के अन्य मंत्रीगण, विभिन्न संस्थाओं के वरिष्ठजन उपस्थित थे।

## भगवान महावीर की चोरी हुई रत्नजड़ित मूर्ति बरामद हुई

बिहार के जमुई जिला के खैरा थाना क्षेत्र अन्तर्गत जन्मस्थान के जंगल से तीर्थंकर भगवान महावीर की कसौटी पत्थर से बनी तीन फीट ऊंची और ढाई फीट चौड़ी मूर्ति 28 नवंबर 2015 को रात्रि में चोरों द्वारा चुरा ली गई थी। इस मूर्ति की स्थापना भगवान महावीर के भाई श्री नंदीवर्धन ने 2600 वर्ष पूर्व जन्मस्थान में कराई थी। हीराजड़ित मूर्ति की कीमत करोड़ों में आंकी गई थी।

विदित हो कि भगवान महावीर के मंदिर को तोड़कर नया निर्माण किया जा रहा था। इससे चोरों को मूर्ति चुराने का आसान मौका मिल गया। मूर्ति चोरी होने से हलचल मच गई क्योंकि जमुई को भगवान महावीर की जन्मस्थली माना जाता है और मूर्ति चोरी की घटना से जैन तीर्थ यात्रियों के साथ ही साथ स्थानीय रहवासियों की आस्था पर भी इस घटना से एक बड़ी ठेस पहुँची थी। चोरी की सूचना मिलते ही क्षेत्र के बड़े पुलिस अधिकारी, कोबरा एवं अन्य पुलिस जवान मौके पर पहुँचे और उन्होंने छानबीन शुरू की। मंदिर की सुरक्षा के लिए चार नाईट गार्ड तैनात किए गए थे। इनमें से तीन गार्ड चोरी की वारदात की रात को वहाँ उपस्थित थे जबकि एक छुट्टी पर था। तैनात गार्डों ने बताया कि पीछे की दीवाल से चार हथियारबंद लोग आए थे जिन्होंने तीनों को धमकाते हुए उन्हें बरामदे में बैठा दिया। इसके बाद मूर्ति उखाड़कर और ताला तोड़कर चारों बाहर निकल गए। इस घटना के संबंध में मुख्यमंत्री श्री नीतीशकुमार ने सीबीआई से जांच कराने संबंधी आदेश जारी किए।

सूचना के आधार पर पुलिस की विशेष टीम ने 12 दिसम्बर 2015 को देर रात कुख्यात अपराधी प्रकाश रजक को बरेली से गिरफ्तार किया। मूर्ति चोरी के समय प्रकाश के मोबाइल फोन की लोकेशन भगवान महावीर के जन्म स्थान के निकट मिली थी और वह फरार भी था। पकड़े जाने पर अपराधी ने स्वीकार किया कि उसने मूर्ति का सौदा आगरा के कुख्यात मूर्ति तस्कर जाटव और मोहम्मद शलाउद्दीन के साथ 20 लाख रुपए में किया था। खैरा थाना क्षेत्र के रोपावेल गांव के निवासी प्रकाश रजक पर जिले के विभिन्न थानों में कई अपराधिक मामले दर्ज हैं। बहरहाल ऐतिहासिक महत्व की और आस्था की प्रतीक भगवान महावीर स्वामी की मूर्ति पुनः मिलने से जैन समाज में संतोष है।

# शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा. अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय; रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि. मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी
  फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्मःशा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

कीर्ति स्तंभ के साथ ही मोहनखेड़ा तीर्थ पर निर्मित

## श्री जयन्तसेन म्युजियम

कश्मीर से कन्याकुमारी तक परिभ्रमण करने वाली
गुरु राजेन्द्र शताब्दि अखण्ड ज्योत यात्रा
रथ में विराजित दादा गुरुदेव

**श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.**

की परम प्रभावशाली प्रतिमा
इस म्युजियम में स्थापित है....
त्रिस्तुतिक संघ के प्रत्येक गांव से स्पर्शित एवं
लाखों गुरुभक्तों द्वारा पुजित इस भव्य प्रतिमा के
दर्शन मात्र से निश्चित आनन्द की अनुभूति होती है।
दर्शनार्थ अवश्य पधारें...

सम्पर्क : **श्री जयन्तसेन म्युजियम**
पोस्ट मोहन खेड़ा, राजगढ़ जिला धार (म.प्र.)
दूरभाष : 07296-235320, मो. 94253-94906

---

गुरु जन्मभूमि हमारी तीर्थभूमि..... दर्शनार्थ अवश्य पधारिये.....

**राष्ट्रसंत, शासन सम्राट, सुविशाल गच्छाधिपति, वचनसिद्ध आचार्यदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. जन्म भूमि पेपराल महातीर्थ में दर्शनार्थ अवश्य पधारिये...**

तीर्थ प्रेरक

## शासन सम्राट आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न मुनिराजश्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

साथ ही आप करेंगे मूलनायक मधुकर महावीरस्वामी भगवान की ६१ इंची विशाल प्रतिमाजी आदि जिन बिम्ब की मनोहारी प्रतिमाजी, दादा गुरुदेव की विशाल ५१ इंची प्रतिमाजी आदि गुरु परंपरा एवं आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जीवित प्रतिमा जी के दर्शन। विश्व का प्रथम ऐसा मंदिर जिसकी स्पर्शना हेतु सीढी नहीं रेम्प के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। सिद्धार्थ-त्रिशला, ऋषभ-केशरी एवं स्वरूप-पार्वती मातृ स्मृति मंदिर के दर्शन का लाभ।

**तीर्थ परिसर में निर्माण हो चुका है....**

साधु भगवंतों के ठहरने का उपाश्रय
श्री जयन्तसेनसूरि चैतन्य आराधना भवन
आचार्यश्री जन्मभूमि स्थित कुटिया पर विशाल स्मारक
जामराणी चबूतरा

***तीर्थ परिसर में निर्माणाधीन है....***

- मधुकर शान्ति यात्रिक भवन
- मधुकर उत्तम आराधना भवन
- मधुकर यतीन्द्र आराधना भवन

निवेदक : गुरु जयन्तसेनसूरि जन्मभूमि जैन शासन प्रभावक ट्रस्ट पेपराल (गुज.)

भारत सरकार पंजीयण क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17
Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month. कुल पृष्ठ कवर सहित 112

दुनिया से सहारा क्या लेना, तेरा एक सहारा काफी हैं ।
देखूं तो क्या देखूं गुरुदेव, तेरा एक नजारा काफी हैं ।।

सुविशाल गच्छाधिपति, जैनाचार्य, परिषद् प्रेरणापुंज

**राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.**

के चरण कमलों में संघवी शेषमलजी रामाणी परिवार का
कोटी - कोटी वंदना

**संघवी शांतिलाल रामाणी**

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : अ.भा. श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ
राष्ट्रीय परामर्शदाता : अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्
राष्ट्रीय संयोजक : शाश्वत धर्म
चीफ आर्गनैजर : आ.प्र. बुलियन गोल्ड सिल्वर एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
शाश्वत अध्यक्ष : नेल्लोर डिस्ट्रीक्ट बुलियन एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
अध्यक्ष : श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ - नेल्लोर

SHANTILAL & SONS
JEWELLERS
DIAMONDS • GOLD • SILVER
Nellore - 524 001 (A.P)

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001